अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

पुर्नजन्म का रहस्य

Translation by
K.Ramani B.Com
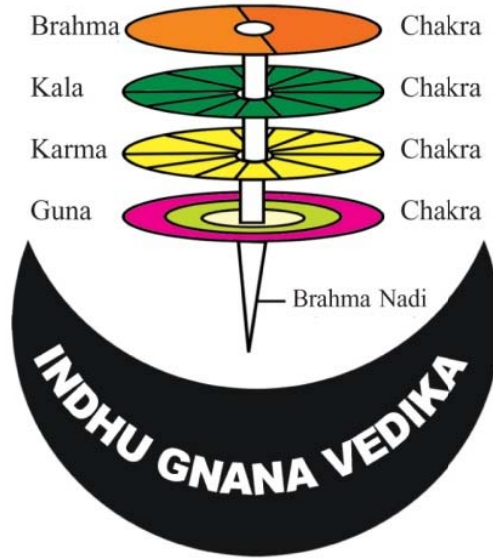
Published by
Indu Gnana Vedika
(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

पुर्नजन्म का रहस्य

अपना जन्म कैसे हुआ एक अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए, पुर्नजन्म के विषयों के बारें में कह पाना कठिन है। यदि पहले, जन्म के बारें में जान लें तो बाद में पुर्नजन्म के विषय में जाना जा सकता है। जीवात्मा जन्म के समय में जिस अनुभूति को पाता हो यदि मालूम हो जाय, तो वह व्यक्ति पुर्नजन्म के अनुभव के बारें में कह पायेगा। परन्तु मनुष्य जब जन्म के विवरण से ही अनभिज्ञ हो, यह उसके लिए रहस्य ही होगा। अनजान और गुप्त रहने वाला जो भी हो रहस्य ही होता है। यदि कोई मनुष्य सोचें कि उनके जन्म के समय में उन्हें कुछ स्मरण था तो स्वयं को मालूम हो जायेगा कि जन्म लेने के कुछ महीनों के बाद, या एक वर्ष बीत जाने के बाद भी स्मरण नहीं था। इस धरती पर मनुष्य के रुप में जन्मा किसी भी व्यक्ति के लिए, एक वर्ष के अन्दर स्मरण रहना नामुमकिन है। एक वर्ष हो, या दो या तीन वर्ष हो स्मरण रहने के कोई आधार नहीं पाये गए। तुम्हारे बचपन के विषय जब तुम्हें ही याद न रहे, गत जन्म के बारें में कह पाना संभव होगा यदि प्रश्न कर देखें तो, असंभव ही कहा जायेगा। हाल ही में एक T.V. चैनल में उच्च शिक्षा प्राप्त एक M.D. डॉक्टर ने एक व्यक्ति से उसके गत जन्म के अनुभवों को कहलवाते हुए देखा। हमने देखा कि उसे देखकर अनेक मेधावियों ने उस विषय में बड़ी आसानी से विश्वास कर रहे थें। यह देखकर हमारे अंतर्मन में पुर्नजन्म का रहस्य के बारें में शीघ्र ही लिखने का संकल्प लिया। वास्तव में पहले ही पुर्नजन्म का रहस्य के बारें में संकल्प था, इसके बावजुद उस कार्य में विलंब हो रहा था। परन्तु T.V. चैनल में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से पुर्नजन्म की यादों को कहलवाते हुए देखने के बाद हमारे संकल्प ने कार्यरुप लेना आरम्भ किया। मनुष्य एक बार मरने से दूसरी बार जन्म लेने की गुंजाइश रहती है। इसलिए पहले मरण, बाद में जनन होता है। पहले मरण के बाद ही दोबारा पैदा होता है। इस विधान से एक इन्दूमत(हिन्दूधर्म) को छोड़कर इस्लाम, तथा ईसाईमत(धर्म) के लोग, सहमत नहीं हैं। ईसाई तथा इस्लाम में कहा

जाता है दोबारा पैदा नहीं होता है, एक ही बार जन्म लेना, और एक ही बार मरना है। उन दोनों मतों के मूल ग्रंथों में मनुष्य मृत्यु के पश्चात् उनका दोबारा जन्म लेता है उन मतों के प्रवक्ताओं द्वारा कहने के बावजुद भी, विषय उनकी समझ में न आने की वजह से, मनुष्य का पुर्नजन्म नहीं होता कह रहें हैं। वास्तव में ईसाई तथा इस्लाम मत ग्रंथों में भी पुर्नजन्म होना कहा गया है। उन ग्रंथों में पुर्नजन्म से संबंधित विषयों को संदर्भानुसार चर्चा करेंगें। इन्दूमत (हिन्दूधर्म) के मुख्य ग्रंथ भगवदगीता में पुर्नजन्म का होना शास्त्रबद्ध रुप में बतलाया गया है। मुख्य रुप से सभी मतों(धर्मों) के प्रवक्ताओं ने कहा है कि मनुष्य का दोबारा जन्म होता है, इस वजह हम पुर्नजन्म पर पूरा विश्वास कर रहें हैं। मत(धर्म) ग्रंथों के अनुसार हमें पुर्नजन्म पर विश्वास है, परन्तु हमारा कोई अनुभव नहीं हैं। विश्वास, वास्तव या अवास्तव हो सकता है। मुख्यरुप से तीन मत(धर्म) ग्रंथों में कहा गया पुर्नजन्म विश्वसनीय होने के बावजुद, उसमे सत्य और असत्य सुनिश्चित करने से पहले, मरण के बारें में जान लेना चाहिए। यदि मरण के बारें में जानकारी कर ली जाए तो उसके पश्चात् दोबारा जन्म होगा या नहीं होगा, होने से कैसे संभावित होगा, जानने की संभावना होगी। इसलिए सबसे पहले मरण के बारें में चर्चा करते हैं।

मनुष्य के लिए मरण तीन प्रकार के हैं। मनुष्य के लिए तीनों मरणों के बारें में विस्तार से " **मरण का रहस्य** " नामक ग्रंथ में बतलाया गया है। मनुष्य मरण समय में तीनों मरणों में से किसी भी मरण को प्राप्त कर सकता है। कालमरण, अकालमरण, तथा तात्कालिक मरण इन तीनों मरणों में से मनुष्य, कालमरण मात्र प्राप्त करने से तुरन्त पुर्नजन्म लेता है। यदि मनुष्य अकालमरण प्राप्त करता हो, या तात्कालिक मरण को प्राप्त करता हो, वापस कालमरण संभावित होने तक, दोबारा जन्म (पुर्नजन्म) लेना मुमकिन नहीं है। मनुष्य तीनों मरणों में से एक मरण को प्राप्त कर सकता है या दो या तीन मरणों को प्राप्त कर सकता है। विस्तार से कहें

तो मनुष्य अकालमरण प्राप्त करने के कुछ समय पश्चात् कालमरण प्राप्त कर दोबारा जन्म लेता है। मनुष्य तात्कालिक मरण प्राप्त कर, पश्चात् कालमरण प्राप्त कर दोबारा जन्म लेता है। इसी प्रकार से मनुष्य कभी-कभी तात्कालिक मरण प्राप्त कर, अकालमरण प्राप्त कर, अंत में कालमरण प्राप्त कर पुर्नजन्म लेता है। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य अकालमरण को प्राप्त करे, या तात्कालिक मरण को प्राप्त करे, अंतत; उसे कालमरण प्राप्त करना ही पड़ता है। दूसरा विवरण इस प्रकार से है! मनुष्य पहले दो मरणों को प्राप्त न कर एक ही बार में कालमरण को प्राप्त कर सकता है। यह उनके कर्मानुसार कितने मरणों को प्राप्त होगा ? कब प्राप्त होगा ? यह पहले ही निर्णीत रहता हैं। **दूसरा जन्म (पुर्नजन्म) लेना हो तो पहले कालमरण होना होगा। कालमरण ही मनुष्य का असली मरण होता है।** कालमरण के पश्चात् ही दोबारा जन्म होता है। मनुष्य किसी भी मत(धर्म)में पैदा हो, उनसे लिए तीनों मरण होते हैं। उनमें से एक कालमरण अवश्य संभावित है। बाकि के दोनों मरण हो भी सकते हैं, या नहीं भी हो सकते हैं। कालमरण अर्थात् पूर्ण आयु की समाप्ति। कालमरण को सम्पूर्ण मरण भी कह सकते हैं। अकालमरण तथा तात्कालिक मरण को असम्पूर्ण मरण भी कह सकते हैं। क्योंकि इन मरणों में तुरन्त दूसरा जन्म प्राप्त नहीं होता है। इसलिए इसे असम्पूर्ण मरण कह सकते हैं। **पुर्नजन्म सम्पूर्ण मरण प्राप्त व्यक्ति को ही मिलता है।** इसलिए अब हमलोग असली मरण के बारें में जानकारी करेंगें। इस मरण के बारें में "**जनन-मरण का सिद्धान्त**" में, तथा "**मरण का रहस्य**" में बताया गया है, संदर्भानुसार थोड़ी चर्चा करेंगें। एक मनुष्य का सजीव शरीर कई भागों द्वारा व्यवस्थित हैं। एक भाग कितना होगा, या एक भाग कैसे कह रहे हैं, यदि कोई प्रश्न करें उन्हें हम जवाब कुछ इस प्रकार से दे सकते हैं। एक लोथड़ा जैसा नजर आने वाला शरीर में भागों या हिस्सों को पहचानने का सूत्र होता है। जो इस प्रकार है। एक शरीर में विशेष रुप से एक कार्य को करना उसे एक भाग के रुप

में पहचाना जाता है। इस विधान से हमारे शरीर में कुल मिला कर 26 प्रकार के कार्यों को करने वाले भाग हैं। उसमें से कार्य के अनुसार प्रत्यक्ष, तथा अप्रत्यक्ष दो प्रकार के हैं। यहाँ मुख्यरुप से ध्यान देने वाला विषय यह है कि एक शरीर में एक भाग द्वारा एक ही कार्य करने का तात्पर्य इस प्रकार से है। शरीर में एक भाग द्वारा किया गया कार्य दूसरे भाग द्वारा न किया जाना उसे एक भाग के रुप में ही गिना जाता है। इससे हम समझ सकते हैं कि एक कार्य हो, या दो कार्य हो, या उससे ज्यादा हो, शरीर में नियमित नाम से एक के द्वारा करना, उसे एक भाग के रुप में गिना जाता है। यह विधान शरीर में नियमित कार्यों को करना नियमित नाम से कुल मिलाकर 26भाग होते हैं कहा गया। कार्य न करने वाला परमात्मा भी है। उसे मिलाकर 27 भाग होते हैं। परमात्मा कोई कार्य नहीं करता है इसलिए इसे भाग के रुप में नहीं गिन सकते हैं।

एक सजीव शरीर में 26 भागों का समूह, उनमें से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दो प्रकार के भाग हैं। प्रत्यक्ष भाग को स्थूल शरीर, तथा अप्रत्यक्ष भागों को सूक्ष्म शरीर कहकर शरीर को दो भागों में विभाजित कह सकते हैं। प्रत्यक्ष स्थूल शरीर दस भागों में, तथा अप्रत्यक्ष सूक्ष्म शरीर सोलाह भागों में हैं। एक शरीर को स्थूल, तथा सूक्ष्म दो भागों में विभाजित करना ही नहीं बल्कि शरीर के सारें भागों को प्रकृति, तथा आत्मा दो भागों में विभाजित किया जाता है। शरीर के अन्दर सूक्ष्म भाग तथा स्थूल भागों को मिलाकर 26 भागों में से, 24 प्राकृतिक भाग, तथा केवल मात्र दो ही आत्मा के भाग हैं। नीचे विवरण देखें।

1) आँख
2) कान
3) नाक
4) जीभ
5) चर्म
6) हाथ
7) पैर
8) मुँह
9) गुदा
10)गुह्य

स्थूल शरीर
दस भागों

11)व्यान वायु
12)उदान वायु
13)समान वायु
14) प्राण वायु
15)अपान वायु
16)दृष्टि
17)श्रवण
18) गंध
19) रुचि
20) स्पर्श
21) मन
22) बुद्धि
23) चित्त
24) अहं

सूक्ष्म शरीर
सोलाह भागों

స్త్రీ భాగములు
24
प्राकृतिक भाग

25) जीवात्मा
26) आत्मा
27) परमात्मा

పురుష భాగములు
2
आत्मा के भाग

स्थूल शरीर में आँखें मुख्य होती हैं। "**ज्ञानेन्द्रियानाम नयनम प्रधानम** " वाक्य के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों में आँखें मुख्य होती है। स्थूल शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ होती हैं। स्थूल शरीर दस भागों में हैं, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ होती हैं। ज्ञानेन्द्रियों में नेत्र दृश्य दिखलाती है। पूरे शरीर में नेत्र बाह्य दृश्य मात्र ही दिखलाती है। शरीर में दृश्यों को दिखलानेवाली आँख ही होती है। शरीर में नेत्र द्वारा किया गया कार्य दूसरा कोई नहीं कर सकता है। विशेष कार्य को, विशेष भागों द्वारा करना सूत्रानुसार, देह में नेत्र को एक भाग के रुप में गिना गया। इस विधान से शरीर में कुल 28 कार्यों को 26 भागों द्वारा किया जाता है। देह में 26 भागों में से मन, तथा आत्मा दो-दो कार्य करती हैं। मन तथा आत्मा एक-एक कार्य अधिक करने की वजह से शरीर में कुल कार्य 28 पहचाना गया। मानव जीवन में मानव शरीर में केवल 28 कार्य मात्र हो रहें हैं। एक व्यक्ति बाह्य रुप से हजारों व्यापार, हजारों लेन-देन में माहिर होता है परन्तु अपने शरीर में हो रहें कार्यों को पहचान नहीं पा रहा है। बाह्य हजारों व्यापार कर, करोड़ों कमाकर, हजारों कार्यों को कर देश का प्रधानमंत्री बन जाय, **कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो उनके शरीर में होने वाले कार्य 28 मात्र हीं हैं।** 28 कार्य शरीर में उनके पैदा होने से हो रहें हैं, वें 28 कार्य क्या है?, उन्हें किन भागों द्वारा किया जाता है?, सही-सही जवाब देने के स्थिति में मनुष्य नहीं है।

मैं यम.डी डॉक्टर हूँ। मुझे शरीर की हर भाग की जानकारी है, शरीर में हर भाग द्वारा किया गया कार्य मुझे मालूम है ऐसा कोई भी कह सकता है। इतना ही नहीं उन्हें शरीर में 26 भागों के अलावा अनेकों भाग नजर आते हैं। परन्तु शरीर के अन्दर सूक्षम 15 भाग नजर नहीं आते हैं। यें किसी भी उपकरणों द्वारा, या किसी भी स्कैनिंग द्वारा या (X-RAY) द्वारा ज्ञात नही किया जा सकता। उदाहरण के लिए मन शरीर का एक भाग है लेकिन दिखलाई नहीं पड़ता है। उसके लिए किसी भी उपकरण

से, या किसी भी स्कैनिंग से, या किसी भी X-RAY से न ही पहचान की जा सकती है, न ही देख सकते हैं, न दिखला सकते हैं। इस वजह से डॉक्टरी पेशे में भी M.D डॉक्टर भी इन भागों से अनभिज्ञ हैं कह सकते हैं। आध्यात्मिकविद्या का अभ्यास कर, ब्रम्हविद्याशास्त्र की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को मात्र ही शरीर में अप्रत्यक्ष भागों की जानका- री रहती है। और सारे कार्यों की जानकारी भी रहती है। एक डॉक्टर शरीर के अन्दर स्थूल भागों के बारें में बता सकेगा, परन्तु सूक्ष्म भागों के बारें में बता नहीं पायेगा। शरीर में स्थूल भागों द्वारा हो रहे कार्यों के अनुसार वह व्यक्ति कितने दिनों तक जीवित रह सकता है बता सकता है। परन्तु अप्रत्यक्ष कर्म के बारें में नहीं बता पायेगा। एक डॉक्टर के लिए अनभिज्ञ अनेक सूक्ष्म विषयों में, एक आध्यात्मिकवेत्ता को जानकारी रहती है। आत्माओं का विषय में हो, दैवज्ञान में हो, आध्यात्मिक क्षेत्र में हो, स्थूल से ज्यादा सूक्ष्म की प्रधानता होती है। इसलिए ऐसे अनभिज्ञ रहस्य की जानकारी केवल आध्यात्मिकवेत्ताओं को रहती हैं, डॉक्टरों को नहीं।

एक व्यक्ति की जाँच कर मृत कहने वाले डॉक्टर, उस व्यक्ति के शरीर के अन्दर अंतिम क्षण में क्या हुआ होगा, मन क्या कार्य कर रहा था, बुद्धि कैसे कार्य कर रही थी ज्ञात नहीं होता है। भौतिक शास्त्रीयों को स्थूल अव्यवों का कार्य मात्र मालूम होता हैं, परन्तु सूक्ष्म जीवात्मा का विषय से अनभिज्ञ हैं। इस वजह शरीर में जीवात्मा होने के बावजुद भी, श्वास न चलने पर मरा हुआ समझने की अनेक घटनाएँ हैं। मृत घोषित करने के कुछ घन्टों में, कुछ दिनों में ही जीवित होने वाले कई लोग हैं। मनुष्य पैदा होने में शिशु शरीर के अन्दर में जीव आने से पहले उस शरीर में हरकतें न होने पर, श्वास न चलने मात्र से ही गर्भ में ही शिशु की मृत्यु हो गयी, डॉक्टरों ने अनेकों बार कहा। ऐसे शिशुओं में कई घन्टों के बाद प्राण आने से कई शिशु जीवित हुए हैं। यदि इन सब का परिशीलन कर देखा जाय तो एक डॉक्टर को स्थूल शरीर के बारें में सम्पूर्ण जानकारी

होती है। परन्तु उन्हें सूक्ष्म शरीर के बारें में जानकारी नहीं होती है। आध्यात्मिक विद्या को जाननेवाले सूक्ष्म शरीर के बारें में पूरी जानकारी रखते है, परन्तु स्थूल शरीर के बारें में पूरी जानकारी नहीं रखते, कह सकते हैं। ब्रम्हविद्या में परिपक्व कई आध्यात्मिकवेत्ता स्थूल तथा सूक्ष्म दोनों के बारें में पूर्ण जानकारी रखते थें। स्थूल तथा सूक्ष्म को जानने वाले ब्रम्हविद्यावेत्ता इस धरती पर बिरल हैं। उस प्रकार के व्यक्ति, जनन का विषय हो, या मरण का विषय हो, निश्चित जानकारी दे सकते हैं। क्योंकि वें जनन तथा मरण के रहस्यों की पूरी जानकारी से भिज्ञ हैं। यदि वें सूचित करें, तो अन्य मनुष्य उन रहस्यों को जान पायेंगें। ब्रम्हविद्याशास्त्रवेत्ताओं के अलावा भौतिक शरीर शास्त्रवेत्ता हो, या डॉक्टर हो, जनन-मरण का विवरण से अनभिज्ञ हैं। यदि वें कहते हैं कि हमें सब मालूम है, तो उनके बताये विषयों में न सत्यता होगी, न ही निरुपण होगा।

पुर्नजन्म होने से पहले पूर्ण मरण होना आवश्यक है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसने सम्पूर्ण मरण के बिना पैदा हुआ हो। जब सृष्टि हुई परमात्मा ने स्वयं समस्त प्राणीयों की सृष्टि करते समय जन्मों तथा मरणों की सृष्टि नहीं की, केवल जन्म से ही आरम्भ किया। पश्चात् जिसने जन्म लिया उसका मरना निश्चित है, जो मर गया है उसका पैदा होना निश्चित है। सृष्टि के पश्चात् भगवद्गीता में सांख्यायोग 27 वाँ श्लोक में कहे अनुसार "**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्धुवं जन्म मृतस्य च**" जिसने जन्म लिया उसका मरना निश्चित है। जो मर गया उसका पैदा होना निश्चित है। गीता में भगवान का कहा गया पहला शब्द था " **जातस्य**" अर्थात् पहला जन्म। भगवद्गीता में भगवान ने उचित समय में उचित शब्द का प्रयोग किया। इसलिए **जो पैदा हुआ उसका मरना धृवीकृत है कहा।** पश्चात् **जो मर गया उसका पैदा होना निश्चित है कहा।** इस श्लोक में पहले वाक्य में सृष्टि के बाद का वर्णन किया गया, इसमें पहला जन्म

के बारें में "**जातस्य** " कहकर बतलाया गया। इसी तरह मरण के पश्चात् पैदा होना निश्चित है दूसरे वाक्य में वर्णन किया गया। इस वजह जनित हर प्राणी का मरना निश्चित है, मृत हर प्राणी का पैदा होना निश्चित है कहा गया। धरती पर किसी न किसी का पैदा होना हम देखते रहते हैं इसका तात्पर्य है उस व्यक्ति के पैदा होने से एक क्षण पहले उसकी मृत्यु हुई होगी। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति का जनन सायंकाल पाँच बजकर तीन मिनट में हुआ, यानि उसका मरण सायंकाल पाँच बजकर दो मिनट उन्नसठ सेकेण्ड में हुआ होगा। एक पैदा हुआ मतलब उनकी मृत्यु एक सेकेण्ड पहले हो गई। इसलिए कहा गया जो मर गया है उसका पैदा होना निश्चित है " **ध्रुवं जन्म मृतस्य च "।**

इस प्रकार से ब्रम्हविद्याशास्त्र का अनुसरण करते हुए मरना तथा पैदा होना होते रहते हैं। परन्तु हम सब इस विषय से अनजान हैं। कई लोग अपना वर्षगांठ मनाते हैं। परन्तु वें अनजान हैं यह दिन उसका मृत्यु दिन भी है। हमारे पिछले वर्षगांठ की सभा में " आज मेरा वर्षगांठ होने के बावजुद, इससे पहले मेरा मृत्यु-दिन था, इसलिए मैं वर्षगांठ के दिन ही मृत्यु-दिन को भी याद करता हूँ" ऐसा कहा। परन्तु अनेक लोग इस सच्चाई से अनभिज्ञ हैं, **" धरती पर किसी का भी पुर्नजन्म होगा परन्तु जन्म नहीं "।** जन्म अर्थात् पहली बार पैदा होना पुर्नजन्म अर्थात् बार-बार पैदा होना। हम सब सृष्टि के आदि में सृष्टिकर्ता(परमात्मा) द्वारा जन्में हैं। तत् पश्चात् प्रकृति द्वारा पुर्नजन्म लेते रहें हैं। परन्तु जो पुर्नजन्म के अलावा किसी ने भी जन्म को प्राप्त नहीं किया। आदि में सृष्टि बनते समय हम सब जन्में थें पश्चात् पुर्नजन्म ले रहें हैं। इससे कहा जा सकता है कि प्रस्तुत काल में धरती पर जीवन जी रहें हर एक का पुर्नजन्म ही हैं। पुर्नजन्म प्राप्त हर मनुष्य को गत जन्म का विषय ज्ञात नहीं है। गत जन्म में जीवन जीने के पश्चात् पुर्नजन्म प्राप्त करने के बावजुद, गत जन्म में अनेकों कष्टों का अनुभव करने के बावजुद, पिछले जन्म का स्मरण किसी

को भी नहीं रहता है। इस तरह से स्मरण लोप होने का कारण पिछले जन्म का शरीर पुर्नजन्म में नहीं है। गत जन्म का शरीर, या शरीर के भाग कुछ भी इस जन्म में साथ नहीं हैं। जीव मर कर नवीन जन्म प्राप्त करते समय, आत्मा से संबंधित भाग मात्र ही जीव के साथ रहकर, प्रकृति संबंधित सारे भाग नष्ट हो जाते हैं। पुर्नजन्म में जीवात्मा के साथ आत्मा, परमात्मा दोनों रहते हैं। किन्तु प्रकृति संबंधित 24 भाग पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। उसमें स्मरण रखने वाला मन भी नष्ट हो जाता है। स्मरण पहुँचाने वाला मन गत जन्म में ही मरण प्राप्त करता है। इसलिए गत जन्म की यादें दूसरे जन्म में नहीं रहती हैं। वैसे ही गत जन्म में समझदार व्यक्ति दूसरे जन्म में भी समझदार रहें जरुरी नहीं है। क्योंकि एक मनुष्य के लिए समझदारी से व्यवहार करना, उसके शरीर के अन्दर बुद्धि की कार्य कुशलता होती है। अगर एक व्यक्ति की तीक्ष्ण बुद्धि (बुद्धि की पतली परत) होती हो तो, उसकी समझदारी बेहद अच्छी होती है। वैसी समझदारी गत जन्म में रहनेवाले व्यक्ति की उस जन्म के अंत में मरण से उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। इसलिए पुर्नजन्म में उनकी वैसी ही समझदारी होगी कहा नहीं जा सकता। पिछले जन्म के शरीर भागों की कार्य कुशलता के आधार पर गत जन्म का जीवन बीता होगा। फिलहाल इस दूसरे जन्म में (पुर्नजन्म में) नवीन शरीर, नवीन भाग होने की वजह से समझदारी हो, या स्मरण शक्ति हो, सभी में अन्तर नजर आता है। गत जन्म का शरीर हो, या शरीर के भाग हो जीव के साथ दूसरे जन्म में नहीं आता है। इसलिए दूसरे जन्म में पहले जन्म की यादें हो, या समझदारी हो, न होने की वजह से सारें कार्यों में अन्तर रहता है। मरण से शरीर के 24 भाग मात्र ही नष्ट हो जाते हैं। मरण से न जीवात्मा नाश होता है न ही आत्मा नाश होती है। मरण से 24 प्राकृतिक भाग ही जीवात्मा तथा आत्मा को छोड़कर चले जाते हैं। आत्म भाग या पुरुष भाग जीवात्मा तथा आत्मा दोनों नष्ट न होकर दूसरा जन्म लेते हैं। प्राकृतिक या स्त्री भाग 24 शरीर के भागों का

पुर्नजन्म नहीं होता हैं। वें एक ही बार जन्म लेकर, एक ही बार में नष्ट हो जाते हैं। उन्हें प्रकृति ही बनाती है। इसलिए इन्हें प्राकृतिक भाग, या स्त्रीभाग कहते हैं। 24 प्राकृतिक भाग शरीर के अन्दर जैसे;- एक यंत्र के अन्दर उपकरणों की तरह कार्य करते हैं। इस वजह उनके लिए पाप तथा पुण्य दोनों होते नहीं हैं, और वें दोबारा पैदा नहीं होते हैं। जीवात्मा तथा आत्मा दोबारा पैदा होते हैं।आत्मा शरीर में दो तरह से कार्य करने के बावजुद, आत्मा पाप और पुण्य से असम्बंधित है। उदाहरण के लिए देश के अन्दर कोई भी नागरिक जो कोई भी हो अपने शत्रु की हत्या करे, तो उन पर धारा 302 लागू होता है। यदि वह पूरी हत्या न करके थोडा़ घायल कर छोड़ दें, उन पर हत्या करने की कोशिश के आरोप में धारा 307 लागू होता है। उस धारा के अनुसार उन्हें न्यायालय में सजा सुनाई जाती है। यह देश के अन्दर एक नागरिक से सम्बंधित विषय था, देश की सुरक्षा के लिए देश की सीमा पर रक्षा कर रहें दस शत्रुओं को मार गिराए, उन पर धारा 302 लागू नहीं होता है। यदि वें शत्रु को घायल करें, उन पर धारा 307 लागू नहीं होता है। क्योंकि उसने देश के लिए, सरकार के आधीन में रहकर कार्य किया इसलिए उन पर सरकारी कानून हो, या कानून की धाराएँ लागू नहीं होती हैं।उसी तरह शरीर में परमात्मा के आधीन में रहकर परमात्मा के कानून में कार्य करनेवाले शरीर के प्राकृतिक भागों पर परमात्मा का कानून लागू नहीं होता हैं। परमात्मा का कानून (धर्म) के अनुसार कार्य करनेवाले शरीर के भागों का पाप तथा पुण्य से कोई सरोकार नहीं होता हैं। उनका न कर्म होता है, न ही अनुभव है। इस वजह एक जन्म में जीवात्मा के साथ शरीर के अन्दर मन उस जन्म में ही समाप्त हो जाते हैं। केवल जीवात्मा मात्र ही शरीर को छोड़कर नवीन शरीर को धारण कर पुर्नजन्म प्राप्त करता है। जीवात्मा दूसरे जन्म में दूसरे जन्म में रहते समय इसके पहले जन्म का मन हो, या बुद्धि हो, साथ नहीं रहते हैं। दूसरे जन्म में जीवात्मा के साथ नवीन मन, तथा नवीन बुद्धि निवास करते

हैं। जीवन में शरीर के अन्दर स्मरण रखने का कार्य मन ही करती है। गत जन्म की यादें मन के साथ ही यादें खत्म हो जाती है। इस वजह गत जन्म की यादें किसी को याद नहीं रहती हैं। हम गत जन्म से वर्तमान जन्म में आयें हैं। हमें भी गत जन्म याद नहीं है। इसका कारण गत जन्म के शरीर के साथ मन अब नहीं है। इसलिए गत जन्म की यादें इस जन्म में नहीं रही।

मनुष्य के लिए वर्तमान काल पुर्नजन्म होने के बावजुद, पहले भी इस प्रकार के कितनें पुर्नजन्म मनुष्य ले चुका यदि प्रश्न कर देखा जाय तो सृष्टि के आदि से ही अनेक जन्म हो चुके कह सकते है। परन्तु निश्चित रुप से कितनें हुए होंगें कहना मुमकिन नहीं हैं। सृष्टि आदि से जन्म लेने के बावजुद, पिछले जन्मों की यादें मनुष्य को स्मरण न रहने की वजह से कितनी बार जन्म लिया कहना संभव नहीं है। इसलिए भगवद गीता में ज्ञानयोग में पाँचवाँ श्लोक " **बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन, तान्यहं विद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप** " ऐसा भगवान ने कहा। इसका भावार्थ इस प्रकार है। " हे अर्जुन। मेरे और तेरे पहले बहुत जन्म हो चुके हैं। उन सब को मैं जानता हूँ, तू नहीं जानता। तूझे याद नहीं है।" भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा। उस दिन कृष्ण का कहा गया न अर्जुन को मालूम पड़ा, न आज हम लोगों को मालूम हैं। हम सब सृष्टि के आदि से ही धरती पर पैदा हो रहें हैं, मर रहें हैं। अब तक अनेकों जन्मों से होकर गुजरें हैं। फिर भी मुझे, तुम्हे, किसी और को पिछले जन्म के बारें में याद नहीं हैं। और स्मरण रहना नामुमकिन है।

अब कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं। जो इस प्रकार से है! कृष्ण जी भी मनुष्य ही थे उन्होंनें मेरे और तेरे पहले बहुत जन्म हो चुके हैं, उन सब को मैं जानता हूँ कहा। अर्जुन के भी अनेक जन्म हुए हैं कहा। अर्जुन के शरीर के अन्दर में मन हर जन्म में नष्ट हो जाता है, अर्जुन का पिछला मन अब नहीं है, इसलिए उनके कितनें जन्म हुए याद नहीं है, तो फिर

कृष्ण जी ने ऐसा क्यों कहा कि तुम्हारे कितने जन्म हुए मैं बतला सकता हूँ, जबकि कृष्ण जी का मन भी पिछले जन्म के मरण से खत्म हो गया होगा, तो फिर कृष्ण जी अपने पिछले जन्मों के बारें कैसे बता सकते हैं ? सब प्रश्न कर सकते हैं। इसका जवाब इस प्रकार से है! यहाँ पर कृष्ण जी का कहना सत्य है उत्तर देने से पहले मन के विषय में थोड़ी-बहुत जानकारी कर लेनी चाहिए। हमारे शरीर में प्राकृतिक भागों में से सूक्ष्म-शरीर में मन सभी भागों से भी विभिन्नता से विशेष रुप से दो कार्य करती है। शरीर में बाह्य्य इन्द्रियाँ, तथा अंर्न्तेन्द्रियाँ दो भाग होते हैं। सारे बाह्य्य इन्द्रियाँ प्रत्यक्ष स्थूलशरीर भाग के रुप में होती हैं। अर्न्तेन्द्रियाँ अप्रत्यक्ष सूक्ष्मशरीर भाग के रुप में होती हैं। बाह्य्य विषयों का सेकरण स्थूल शरीर के अन्दर पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ करती हैं। आँख, नाक, कान, जीभ, और त्वचा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। बाहर से सेकरण किया गया समाचार को, पूरे शरीर में व्याप्त मन, अन्दर बुद्धि को सूचित करती है। पश्चात् बुद्धि द्वारा बताया गया निर्णय या कार्य को मन बाह्य्य कर्मेन्द्रियाँ जैसे हाथों, पैरों, मुँह, गुदा तथा गुह्य्य को सूचित करती है। यह मन द्वारा किया गया पहला कार्य है। बाद में मन द्वारा किया गया दूसरे कार्य की चर्चा करेंगें।

मन, नाम रखने का एक कारण है। बड़े-बुर्जुग कहा करते थे मन मनन करता है। मनन अर्थात् स्मरण। मानव जीवन में क्षण-क्षण अनेक कार्य, अनेक घटनाएँ होती रहती हैं। उन सभी को मन अपने अन्दर छुपाकर, वापस आवश्यकतानुसार उन्हें यादों के रुप में बाहर लाती है। यह मन द्वारा किया गया दूसरा कार्य है। यही मन का मुख्य कार्य है। मन को यादों का गण भी कहा जाता है। इस प्रकार से शरीर के अन्दर किसी भी प्राकृतिक भागों द्वारा न किया गया, दो कार्यों को मन करती है। जैसे एक व्यक्ति नेत्र से देख सकता है। शरीर के अन्दर आखें केवल दृश्यों को दिखलाने का कार्य मात्र ही करती है। दृश्य को दिखलाने का कार्य आँखों के अलावा शरीर का कोई भाग नहीं कर सकता है। इसलिए विशेष कार्यों

को विशेष भागों द्वारा पहचान की जाती है। सूत्र के अनुसार शरीर में दृश्य को दिखलाने का काम के आधार पर एक भाग के रुप में पहचाना जाता है। इस प्रकार से विशेष कार्य करना, आँख ने बाहर सर्प दृश्य को देखा। वैसा देखने के बाद दृष्टि आँखों द्वारा विषय ज्ञान का रुप लेती है। आँखों के पास विषय ज्ञान का रुप लेकर पूरे शरीर में व्याप्त मन, आँखों के पास विषय ज्ञान का सेकरण कर, शरीर के अन्दर बुद्धि तकविषय पहुँचाती है। मन द्वारा पहुँचाया गया विषय को बुद्धि ग्रहण कर जीवात्मा को सूचित करती है, और जीवात्मा जानकारी प्राप्त करता है। जीवात्मा को विषय पहुँचने के तुरन्त बाद गुण उन विषयों से स्पंदित होता है, उस स्पंदन को चित्त ग्रहण करती है। चित्त प्रारब्ध के अनुसार उस स्पंदन का विश्लेषण कर कर्मानुसार एक निर्णय में आकर उस निर्णय को बुद्धि को सूचित करती है। मन और बुद्धि द्वारा पहुँचा समाचार को बाहरी कर्मेन्द्रियों को सूचित करती है। मन द्वारा कहा गया समाचार के अनुसार कर्मेन्द्रियाँ कार्य करती हैं।

सर्प दृश्य को, आँखों द्वारा देखा गया, दृष्टि बाह्य समाचार को मन तक पहूँचाती है, मन आँतरिक इन्द्रियाँ, तथा बाह्य इन्द्रियाँ के बीच मध्यवर्ती का कार्य कर, बाह्य विषयों को अन्दर बुद्धि को, अन्दर बुद्धि द्वारा पहुँचाया गया समाचार बाह्य कर्मेन्द्रियों को सूचित करती है। सर्प दृश्य विषय को बुद्धि, जीवात्मा को सूचित कर, जीवात्मा के चारों ओर निवास गुणों में क्रिया होकर, गुणों की क्रिया से चित्त कर्मानुसार निर्णय लेकर उसे समाचार के रुप में बुद्धि को सूचित करती है। सर्प विषय इस प्रकार से प्रयाण कर, अंत में चित्त के पास सर्प को मारने का समाचार तैयार होकर मन तक पहुँच कर, वह विषय मन द्वारा बाह्य कर्मेन्द्रियाँ को सूचित किया। और कर्मेन्द्रियाँ अर्थात् पैर, हाथ, ने कार्य करना शुरु कर सर्प को मार डाला। हमारे जीवन में हो रहे हर कार्य इसी प्रकार से एक समाचार बाह्य से आँतरिक जाकर आँतरिक से बाह्य आकर कार्य होने में शरीर के

अन्दर कुल 26 भाग कार्य करते हैं। किन्तु, शरीर में 27 वाँ भाग के रुप में परमात्मा कोई कार्य नहीं करता हैं। शरीर में कार्य कर रहे कुल 26 भागों में से विशेष रुप से, दो भाग हैं। पहला मन, दूसरी आत्मा।

मन को प्राकृतिक भाग मे, तथा आत्मा को परमात्मा भाग के रुप में गिना जाता है। शरीर के अन्दर जीवात्मा सहित 24 भाग शरीर के अन्दर एक-एक भाग एक-एक स्थान में रहता है, विशेष रुप से आत्मा तथा मन पूरे शरीर में व्याप्त रहते हैं। पूरे शरीर में व्याप्त मन शरीर में बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के सारे विषय सेकरण करती है, और सूचित करती है। अर्थात् बाह्य तथा आँतरिक दोनों में मन मध्यवर्ती होती है, मन विषयों का खजाना होता है। शरीर में अर्थात् पूरे शरीर में व्याप्त मन दो तरह के कार्य करने की जानकारी हमलोगों ने की, अब पूरे शरीर में व्याप्त आत्मा कैसे दो प्रकार से कार्य करती है उसकी जानकारी करेंगें। शरीर में कार्य कर रहे प्राकृतिक भाग 24, तथा परमात्मा भाग केवल दो ही हैं। परमात्मा के भाग, जीवात्मा केवल एक ही स्थान में वास करती है, और आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त रहती है। अब पूरे शरीर में व्याप्त आत्मा के बारें में विस्तार से जानकारी करेंगें।

आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त रहती है। शरीर के अन्दर जीवात्मा निवास करता रहता है। जहाँ जीवात्मा रहता है वहाँ आत्मा का होना अनिवार्य है**। आत्मा बिना जीवात्मा, तथा जीवात्मा बिना आत्मा रहना नामुमकिन है।** इसलिए आत्मा, तथा जीवात्मा को जोड़ी आत्माएँ कह सकते हैं। जीवात्मा, तथा आत्मा के बिना परमात्मा रह सकता है। किन्तु जीवात्मा तथा आत्मा अलग-अलग रहना नामुमकिन हैं। ये दोनों अविनाभाव संबंधित आत्माएँ हैं। जीवात्मा तथा आत्मा साथ-साथ दो तरह के शरीरों मे निवास करती हैं। रक्त-संचार वाले शरीर में, तथा रक्त-संचार रहित दोनों में जीवात्मा, आत्माओं का वास होता हैं। रक्त-संचार वाले शरीर

अण्डजों तथा पिण्डजों अर्थात् मनुष्यों, जन्तुओं, तथा पक्षियों इत्यादि। बिना रक्त-संचार रहित शरीर उद्‌भज अर्थात् पेड़-पौधे, बेल इत्यादि। वृक्षों की जातियों में भी जीवात्मा, आत्मा दोनों निवास करते हैं। पेड़-पौधों को भी जीवात्मा निवास योग्य एक प्रकार से शरीर ही कह सकते हैं। रक्त-संचार वाले शरीर मनुष्य हो या जन्तु हो, बिना रक्त-संचार वाले पेड़-पौधें हो, हर एक में जीवात्मा एक ही स्थान पर रहता है, आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त रहती है। मनुष्य के शरीर में नख-शिख तक आत्मा व्याप्त होने की तरह ही, एक पेड़-पौधों में भी नीचे जड़ से लेकर ऊपर डाली के छोर तक आत्मा व्याप्त होती है। रक्तयुक्त मनुष्य के पूरे शरीर में व्याप्त शक्ति को आत्मा कहा जाता है। पेड़-पौधों के जड़ से लेकर डाली तक व्याप्त शक्ति को **आकु** कहा जाता था। आकु का अर्थ है पत्ता या पत्र या दल। **तेलुगु में पत्ते को आकु** कहा जाता है। आकु नामक शब्द के अनुसार आत्मशक्ति पेड़-पौधों में होती है दुनिया को समझाने के लिए पेड़ के पत्रों को आकु कहा गया। पेड़ के पत्तों में आत्मशक्ति होती है जिसे कुछ लोग औषधिशक्ति भी बताते हैं। आकु नामक शब्द क्रमागत बदलता गया। मनुष्य के शरीर के अन्दर निवास शक्ति को आत्मा कहा जाने लगा। **"आकु" नामक शब्द बदलते हुए आकु से आत्मा में बदल गया। "आ "** अक्षर वैसे ही रह गया और **"कु"** नामक शब्द कुछ लोगो में त्मा नामक शब्द से उच्चरित हुआ। अंतत; आकु शब्द से आत्मा शब्द में बदल कर पुकारा जाने लगा। अब आत्मा शब्द चिर-स्थाई रह गया। आकु कहें, या आत्मा कहें समानार्थ शब्दों को अच्छी तरह से समझने की कोशिश की जाय तो आध्यात्मिकता अच्छी तरह से समझ में आयेगी।

पेड़-पौधों से पत्तों के रुप में आरम्भ हुई शक्ति, मनुष्य के शरीर में आत्मा के रुप में पहचाना गया। हमारा कहना है कि पेड़ के पतों में औषधिशक्ति होती हैं। पत्ते में भी औषधि- शक्ति का होना निरुपण हुआ है। इससे बात से सब सहमत हैं। औषधि अर्थात् शक्ति अंतत; मनुष्य के

अन्दर ॐकार शक्ति में बदल गया। जैसे पेड़ की मूलशक्ति होती है वैसे ही मनुष्य के अन्दर मूलशक्ति होती है। पेड़ के पत्ते की शक्ति, मनुष्य के अन्दर आत्मशक्ति होती है ज्ञात रहें। जैसे पेड़ में आत्मा या आकु (पत्ता) जिस तरह व्याप्त हुई वैसे ही मनुष्य के अन्दर आत्मशक्ति व्याप्त हुई। वृक्ष हो, या मनुष्य, दोनों के अन्दर आत्मा व्याप्त होने के बावजुद वृक्ष का निर्माण हो, या मानव शरीर का निर्माण हो, दोनों में बहुत अन्तर है। वृक्ष में हमारे जैसा ज्ञानेन्द्रियाँ, और कर्मेन्द्रियाँ नहीं होती हैं। पेड़ के कितने भाग हो सकते हैं कहना मुश्किल है।

मानव शरीर में आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त होकर मुख्य रुप से दो कार्यों को करती हैं। शरीर के अन्दर परमात्मा भाग जीवात्मा तथा आत्मा दो हैं, उनमें जीवात्मा एक स्थान में रहकर, एक ही कार्य को , आत्मा पूरे शरीर में रहकर दो कार्यों को करती हैं। मानव शरीर के अन्दर 24 प्राकृतिक भागों का संचालन करने के लिए आत्मा शक्ति देकर उनके द्वारा शरीर की व्यवस्था का संचालन करती है। और शरीर को चैतन्य देकर शरीर के भागों को जीवंत रखती है। मनुष्य बातें करना चाहे तो आत्मा बातें करवाती है। मनुष्य हाथ हिलाना चाहे, या पलक झपकना हो, आत्मा ही करवाती है। इसी प्रकार से दिल धड़कना हो, तो आत्म चैतन्य ही करवाती है। पूरे शरीर के अन्दर हर छोटा-सा-छोटा कार्य हो, या शरीर की बाह्य इन्द्रियों का कार्य हो, या शरीर के अन्दर के अव्यवों का कार्य करना आत्म चैतन्य से ही होता है। आत्मा हरकतें न करवाये तो हरकतें बंद हो जायेगी। शरीर के अन्दर जीवात्मा का रहना हो, या प्राण का रहना हो, या भोजन को जीर्ण होना हो शरीर के अन्दर के हर कार्य को आत्मा ही करती है। आत्मा द्वारा ही सब कार्य होता रहता है। पूरे शरीर को अपने आधीन में रखकर आत्मा शरीर को कर्मानुसार संचालन करती है। शरीर के अन्दर एक-एक भाग द्वारा एक-एक कार्य करना, तथा 24 प्राकृतिक भागों में हरकतें करवाने का कार्य आत्मा का ही कार्य है।

इस प्रकार से आत्मा शरीर में एक कार्य करती है। 24 घन्टें पूरे शरीर का संचालन करने के लिए आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त रहती है। मन भी पूरे शरीर में व्याप्त होने के बावजुद, मन निद्रा में पूरे शरीर से सिमट कर ब्रम्हनाड़ी (सुसुम्नानाड़ी) में पहुँच जाती है। मन, जागरण में मात्र ही पूरे शरीर में व्याप्त रहकर निद्रा में मात्र ही ब्रम्हनाड़ी में जाती है। परन्तु आत्मा, निद्रा हो या जागरण हो, कार्य करते हुए हमेशा पूरे शरीर में रहती है। मन निद्रा में कार्य नहीं करता है। परन्तु आत्मा निद्रा हो, या जागरण हो दोनों अवस्थाओं में कार्य करता रहता है। मनुष्य के जन्म से ही आत्मा बिना रुके कार्य करती रहती है। एक क्षण भी विश्राम नहीं करती है। आत्मा के लिए विश्राम है ही नहीं। आत्मा हमेशा कार्य करते रहना इसे आत्मा के लिए एक कार्य के रुप में गिना जायेगा। इतना ही नही आत्मा के लिए दूसरा कार्य भी होता है। जो इस प्रकार से है। मनुष्य जागे रहने के समय में मन बाह्येन्द्रियों के विषयों को अंतरेन्द्रियों को सूचित करती है पहले भी बतलाया गया है। मन शरीर के अन्दर निद्रावस्था में ब्रम्हनाड़ी में रह जाती है यह भी बतलाया जा चुका है। मनुष्य जब निद्रावस्था में होता है उसे बाह्येन्द्रियों के विषय तथा बाहर क्या हो रहा है कुछ भी ज्ञात नहीं होता है। क्योंकि निद्रा में मन इन्द्रियों कि पास नहीं था, इसलिए बाह्य इन्द्रियों का विषय ज्ञान अन्दर बुद्धि को, या जीवात्मा को मालूम नहीं पड़ता है।

सोचें यदि जब कोई व्यक्ति सो रहा हो उसे कोई दूसरा व्यक्ति पुकार रहा हो। तब वह आवाज सो रहे व्यक्ति के कानों के अन्दर पहुँचती है। और वहाँ वह शब्द में परिवर्तित हो गई। उस शब्द का सेकरण कर अन्दर बुद्धि को सूचित करने वाला मन ब्रम्हनाड़ी के अन्दर निद्रा में डुबा हुआ था । और दूसरे व्यक्ति के पुकारने पर उस विषय को अन्दर पहुँचाने वाला मन वहाँ नहीं था इसलिए उस पुकार को जीवात्मा तथा उसकी बुद्धि को मालूम नहीं पड़ता है। ऐसे संदर्भों में, सो रहे व्यक्ति को पुकारने पर

भी उनका जाग पाना संभव नहीं है। क्योंकि आवाज उन तक पहुँच नहीं पायी, इसलिए वह निद्रा से जाग न सका। कभी-कभी सो रहा व्यक्ति किसी के पुकार से जाग जाता है। जैसे कोई उसे पुकार रहा हो, यह विषय अन्दर बुद्धि तक, तथा जीवात्मा तक पहुँच जाती है। मध्यवर्ती मन के न होने पर भी पुकार का समाचार अन्दर तक किसने पहुँचाया? वास्तव में देखा जाय तो यह कार्य मन का था, लेकिन मन वहाँ नहीं था इसलिए मन इस विषय से अनजान था। मन के वहाँ न होने पर आत्मा पूरे शरीर में सारे अव्यवों तक व्याप्त होने की वजह से कान से आवाज को सुनकर उस आवाज समाचार को मन की तरह ही अन्दर बुद्धि, तथा जीवात्मा को पहुँचायी। इसलिए मन न होने पर भी मनुष्य जागरण स्थिीति में आ सकता है। इस प्रकार से कई समयों में मन कार्य न करने पर भी, मन द्वारा किया जाने वाला कार्य को आत्मा करती है। यह आत्मा द्वारा किया गया दूसरा कार्य है। यहाँ पाठकों के लिए मुख्य रुप से ग्रहण करने योग्य विषय कुछ इस प्रकार से हैं । अभी हमने कहा आत्मा ने कार्य किया, इसे कल्पना न समझें। माया के प्रभाव की वजह से ऐसा समझना मुमकिन है। इसलिए इसे सावधानी से ग्रहण करें कह रहें हैं। आत्मा का दूसरा कार्य पूर्ण सत्य तथा शास्त्रबद्ध है।

बाहर किसी की पुकारने की आवाज आत्मा ने ग्रहण कर अन्दर बुद्धि को, तथा जीवात्मा को सूचित किया, और तब मन ने ब्रम्हनाड़ी को छोड़कर पूरे शरीर में व्याप्त हो गई। मन ब्रम्ह -नाड़ी से बाहर आते ही मनुष्य जाग जाता है। **शरीर में मन द्वारा किया गया कार्य, तथा आत्मा द्वारा किया गया कार्य को समझ सकें तो अद्र्ध आध्यात्मिकता मनुष्य की समझ में आ जायेगी।** सो रहा व्यक्ति अनजाने में ही करवट बदलता रहता है। सो रहा व्यक्ति अनजाने मे ही एक स्थान से उठकर दूसरे स्थान में जाकर सो जाता है। इन कार्यों को आत्मा, बुद्धि तक समाचार पहुँचाये बिना करती है। इस वजह से निद्रा में स्वयं क्या कर रहा है सो रहा व्यक्ति

को ज्ञात नहीं रहता है। मनुष्य जब सो रहा होता है, आत्मा बाह्य विषयों को सेकरण कर आवश्यकता पड़ने पर अन्दर सूचित करती है। आवश्यकता न हो तो, स्वयं सही कर देती है। उदाहणरण के लिए माना कि एक व्यक्ति अधिक देर तक एक ही तरफ सोने की वजह से हाथ में दर्द होने लगा। चर्म द्वारा महसूस किया गया दर्द को, आत्मा सेकरण कर उसे अन्दर न भेज कर स्वयं ही करवट बदलवाती है। यह पूरी क्रिया मानव शरीर में होती है। कोई मानें, या न मानें यह क्रिया मानव शरीर में सौ प्रतिशत होती रहती है। मनुष्य बाह्य प्रपंच में किसी भी मत (धर्म) का हो, परन्तु शरीर के अन्दर हो रहे कार्यों में कोई अन्तर नहीं रहता है। मुस्लिम हो,या ईसाई हो, या हिन्दु हो सभी के अन्दर जीवात्मा, आत्मा, मन, आदि 26 भाग होते हैं। सभी मतों(धर्मो) के मनुष्यों में आँख एक ही तरह से कार्य करता है, यदि मुस्लिम आँखों से देखता है तो, ईसाई आँखों से सुनता नहीं है। सारें मतों(धर्मों) के मनुष्यों में आँखें देखने का कार्य ही करती हैं। **इसलिए हमारे मतों(धर्मों) में भेद-भाव भले ही हो किन्तु आत्मा हो**, **या जीवात्मा हो**, **या शरीर के अन्य भागों में**, **कोई मत-भेद नहीं होता है**। सभी लोगों में एक ही प्रक्रिया से कार्य होती रहती हैं। कर्मानुसार मनुष्य का अनुभव अलग-अलग हो सकता है। किन्तु, शरीर के अव्यवों का कार्य एक ही प्रकार से होता है। मनुष्य जीवित रहने समय को छोड़कर मरते समय में, तथा पैदा होते समय में, एक मनुष्य के अन्दर जो कार्य होता है, समस्त मतों(धर्मों) के मनुष्यों में भी वही कार्य होता रहता है। कुल, तथा मत(धर्म) के अनुसार हो, या अमीर-गरीब के अनुसार, आत्मा के विषय में कोई अन्तर नहीं रहता है।

मनुष्य, अपनी अज्ञानतावश धर्मों की सृष्टि करता है, परमात्मा द्वारा शरीर में व्यवस्थित विधानों को भूल जाने की वजह से, मरना तथा पैदा होने के विषय में अलग-अलग धर्मों में अलग-अलग प्रकार से बताया गया है। सभी धर्मों में परमात्मा एक है ऊपरी तौर पर कहने के बावजुद,

आँतरिक रुप से हमारे परमात्मा अलग है, हमारे परमात्मा के कहे विधान अलग है कहकर माना जा रहा है। परमात्मा ने सभी धर्मों में एक ही ज्ञान सूचित किया है, न कि अलग-अलग धर्मों में अलग-अलग ज्ञान सूचित किया। सृष्टि के आदि से ही सनातन इन्दू मत (हिन्दू धर्म) से संबंधित भगवद् गीता में परमात्मा ने भगवान द्वारा " जो पैदा होता है उसका मरना निश्चित, जो मरता है उसका पैदा होना निश्चित है " कहा। इस पर अमल होगा उस पर नही होगा ऐसी कोई गुंजाइश ही नहीं है। शरीर का पैदा होना हो, या जीवन हो, या मरना हो, सभी मनुष्यों में एक ही प्रकार से होता हैं। हमनें पहले भी कहा था कि अलग-अलग प्रकार से नहीं होता हैं। भगवद् गीता में परमात्मा ने जो बतलाया, वही अन्य मत(धर्म) ग्रंथों में भी कहा गया। परमात्मा द्वारा सभी मत (धर्म) ग्रंथों में बताया गया एक ही तरह का ज्ञान था, परन्तु माया के प्रभाव की वजह से अलग-अलग मतो(धर्मों में अलग-अलग बोध (ज्ञान)के रुप में समझा गया। माया के प्रभाव से अनभिज्ञ व्यक्ति परमात्मा ने ऐसा क्यों कहा बिना योचना किए माया के अनुसार बातें कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए मनुष्य के जनन-मरण के विषय को लिया जाय तो, परमात्मा ने सभी मतों(धर्मों) में एक ही प्रकार से कहा, लेकिन मनुष्य उस विषय को भूल गया। इन्दू (हिन्दू) मत (धर्म)में अनेक जन्मों का होना कहा, इस्लाम, तथा ईसाई मत(धर्म) में लोग दोबारा पैदा होने को लेकर असहमत हैं। मेधावियों ने भी जन्म से संबंधित विषय के बारें में, बिना योचना किये, अंधों की तरह बात कर रहें हैं। और आत्माज्ञानी प्रवक्ता द्वारा कहे गये वाक्यों को समझ नहीं पा रहें हैं। प्रवक्ता द्वारा कहे ज्ञान को विशद कर समझें तो उन्होंनें जन्म का होना बताया, जन्म का न होना नहीं कहा। इस धरती पर जन्में सारें मनुष्यों में एक ही जैसा ज्ञान होगा कह पाना मुश्किल है। कुछ में परमात्मा ज्ञान रहता है। कुछ में परमात्मा ज्ञान के नाम से माया ज्ञान रहता है। कौन सा परमात्मा ज्ञान है, और कौन सा

माया ज्ञान है, मनुष्य पहचान नहीं पा रहा है। एक मत(धर्म) का व्यक्ति कहे कि मेरा ज्ञान परमात्मा का ज्ञान है, तो दूसरे मत(धर्म) का व्यक्ति कहता है तुम्हारा मायाज्ञान है, मेरा ज्ञान ही असली परमात्मा ज्ञान है। उन दोनों का वार्तालाप सुनने वाला समझ ही नहीं पायेगा कि किसका असली परमात्मा ज्ञान है, किसका नहीं। ऐसे संदर्भ में असली परमात्मा ज्ञान कौन सा होगा, कौन सा नहीं, परमात्मा सभी लोगों को दृष्टांत के रुप में जानकारी करवाते हैं। इसके अनुसार असली परमात्मा ज्ञान को पहचाना जा सकता है।

इस्लाम में पुर्नजन्म का न होना बोध किया गया। सारे मुस्लिम उसी बोध को मान रहे हैं। हर मुस्लिम यही मान बैठा है और कह रहा है कि पुर्नजन्म नहीं होते हैं। हर मुस्लिम यही समझता है कि उसने जो सुना, या अपने मत(मजहब) के लोगों द्वारा जो जाना उसी पर पूर्ण विश्वास किया, और धैर्य से कह रहा है कि पुर्नजन्म नहीं होते हैं। मत(धर्म) के लोगों पर विश्वास कर उनकी बातों पर यकीन करने के अलावा, उनकी अपनी समझ नहीं है। अब यहाँ एक सूत्र के बारें में बातें करेंगें जो इस प्रकार से है। यकीन, न ही सत्य है और न ही असत्य है। यकीन, सत्य भी हो सकता है, या असत्य भी हो सकता है। मत(धर्म) के लोगों द्वारा बताई बातें को हर मुस्लिम विश्वास कर जन्मों का न होना कह रहें हैं। वैसे उनका विश्वास करना गलत नहीं है। इस्लाम का मुख्य मार्ग होता है विश्वास। अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखने वाला असली मुस्लिम होता है। वैसे ही परमात्मा पर पूर्ण विश्वास करने वाले को इन्दू कह सकते हैं**। परमात्मा अव्यक्त होता है। इसलिए परमात्मा को बिना देखें ही यकीन करना चाहिए। परन्तु मनुष्यों द्वारा कही गयी परमात्मा ज्ञान को विचार कर यकीन करना चाहिए।** बिना सोचे-समझें यकीन करना अंध-विश्वास, और असत्य हो सकता है।

परमात्मा के वचनों को देवदूत द्वारा प्रवक्ता ने सुनकर उस विषय को मनुष्यों को सूचित किया। प्रवक्ता ने परमात्मा के वचनों पर पूर्ण विश्वास कर उन्होने उसका आत्मसात् कर उसे हम सब लोगों को बतलाया। इस्लाम का अर्थ है विश्वास। विश्वास का अर्थ इस्लाम, कह सकते है। परमात्मा ज्ञान को दूत द्वारा सुनकर प्रवक्ता ने, परमात्मा द्वारा सूचित किया गया ज्ञान दुनिया को सूचित किया। प्रवक्ता ने जो विषय सूचित किया वह अल्लाह का कहा हुआ विषय ही था इसलिए यह सौ प्रतिशत सत्य है। परन्तु प्रवक्ता का सूचित किया गया सत्य, मनुष्य को समझने में गलतफहमी हो गई। प्रवक्ता द्वारा कहा गया परमात्मा के वचन को शैतान (माया) ने मनुष्य को दूसरी तरह से समझने पर बाध्य किया। और परमात्मा के सत्यवचन असत्य के रुप में प्रचार में आ गए। ईसाई मत(धर्म) में भी शैतान के प्रभाव से ईसाईयों ने ईसा(प्रवक्ता) द्वारा कहा गया ज्ञान का सही अर्थ समझ नहीं सकें। इस्लाम में हो, या ईसाई में हो, प्रवक्ता द्वारा कही परमात्मा के वाक्यों को वें जरा भी समझ नहीं पायें। यदि हिन्दूमत(धर्म) में देखें तो कृष्ण जी के कही दैववाक्यों में से एक वाक्य भी उनकी समझ में न आ सका। उन्होंने कहा, यज्ञ, वेद-अध्ययन, दान, तपस्या, परमात्मा का मार्ग नहीं है, तथा देवी-देवताओं की आराधना से सृजनहार अर्थात् परमात्मा में लीन नहीं हो सकते हैं, लेकिन ये वचन मनुष्यों की समझ में न आ सका, और माया मार्ग में चलते हुए इसे ही परमात्मा मार्ग कहा जा रहा है। पूरा हिन्दूमत(धर्म)माया के प्रभाव में आ गया, लेकिन इस्लाम, तथा ईसाईयों ने केवल जन्मों के विषय में ही प्रवक्ता के कहे सूत्र को ही समझ नहीं सकें।

उदाहरण के लिए परिशुद्ध ग्रंथ बायबिल में ईसा के कहे वाक्यों के बारें चर्चा करेंगें। उनके कहे वाक्यों का तात्पर्य ईसाईयों ने कितना समझा ज्ञात हो जायेगा। मत्ती रचित सुसमाचार, 12 वाँ अध्याय, 30, 31, 32, वाक्यों में। 30) "जो मेरे साथ नहीं है वो मेरा विरोध में है, और जो

मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखरता है। 31) इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्यों का हर पाप, और निन्दा क्षमा की जायेगी। परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा और पाप क्षमा न की जायेगी। 32) जो भी मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका अपराध क्षमा किया जायेगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में न ही आगामी युग में क्षमा किया जायेगा।

प्रवक्ता ईसा मसीह ने 32 वाँ वाक्य में स्पष्ट रुप से कहा, एक प्रकार के पाप को भोगने के लिए दो युगों का समय लग सकता है। एक प्रकार के पाप को दो युगों तक मनुष्य को जीवित रहकर भोगना पड़ सकता है। एक ही शरीर से, एक ही जन्म में कोई भी व्यक्ति एक युग काल तक जीवित रहना नामुमकीन है। एक युग में लाखों वर्ष होते हैं, दो युगों में कितने वर्ष हो सकते हैं, अंदाज लगा सकते हैं। एक जन्म में सौ वर्षों तक जीवित न रह पानेवाला मनुष्य, एक ही जन्म में दो युगों तक जीवित रहना क्या उसके लिए मुमकिन है? नहीं नामुमकिन है। हजारों जन्म लेने के बावजुद भी दो युग समाप्त नहीं हो सकते हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि परमात्मा-संबंधित पाप को भोगने के लिए कई हजारों, लाखों जन्म लेने पड़ते हैं। इसलिए मुख्यरुप से ये वाक्य तथा ऊपर दिये गए वाक्य ईसाईयों को, या ईसाई बोधकों को, शैतान के प्रभाव की वजह से समझ नहीं आया। पवित्र ग्रंथ बायबिल में मसीहा ने जन्मों का होना, कहना स्पष्ट रुप में सूचित हो रहा है, लेकिन ईसाईयों द्वारा पुर्नजन्म से इन्कार करना मसीहा के कहे वाक्यों का विरुद्ध जाना कहलाता है।

स्वर्ग और नरक की बातें मनुष्य को माया-मार्ग की ओर धकेलती देती है। हर मत (धर्म) में कहा जा रहा है कि स्वर्ग और नरक होते हैं। परन्तु इन दोनों को किसी ने नहीं देखा। किसी भी मत(धर्म) के व्यक्ति से यदि पुछा जाय ये कहाँ पर हैं, कितनी दूरी पर हैं तो कोई उत्तर नहीं दे

पायेगा। सभी मतों(धर्मों) के प्रवक्तओं ने नरक की यातनाएँ, तथा स्वर्ग में सुखों के बारें में वर्णन किया, परन्तु किसी ये नहीं कहा कि ये कहाँ पर हैं,कितनी दूरी पर हैं। यदि उन्हें अहसास हुआ होता कि मनुष्य इन विषयों को लेकर गलतफहमी का शिकार होगा तो वें स्वर्ग और नरक के बारें में पूरा विस्तार से वर्णन करते। स्वर्ग और नरक के बारें में कहना और होना दोनों सत्य हैं। स्वर्ग-नरक का निवास-स्थान सभी धर्मों के माया में हैं। स्वर्ग और नरक की अवगाहना में कर्मी के कारण बोधकों सहित सब गलतफहमी के शिकार हो गए। उनकी बातों का अनुसरण करते हुए मनुष्य भी उन्हीं मार्ग में ही चल पड़ा। प्रवक्ता ने एक उद्देश्य को ध्यान में रखकर कहा, लोगों ने उसका दूसरा अर्थ निकाला। इस वजह से स्वर्ग और नरक के बारें में किसी भी मत (धर्म) के मनुष्यों को समझ में न आ सका। यदि एक विषय रास्ता भटक जाय, तो उससे अनुसंधान ज्ञान के सारे विषय रास्ता भटक जाते हैं।ज्ञान विषयों में अवगाहना की कमी से रास्ता भटकने वालों में सबसे आगे हिन्दु मत(धर्म) के लोग हैं, उसके बाद में ईसाई मत (धर्म के) लोग हैं। उसके बाद इस्लाम धर्म के लोग हैं। इस्लाम मत (धर्म) में अधिक से अधिक लोगों ने प्रवक्ता के वचनों को समझा और माना भी, परन्तु स्वर्ग और नरक के विषय में गलत रास्ते में चल पड़े।

प्रवक्ता ने कहा स्वर्ग और नरक धरती पर ही है, परमात्मा ने पुण्य करने वालों को स्वर्ग तथा पाप करने वालों को नरक भोगने की व्यवस्था धरती पर ही की हैं।यदि मनुष्य को जानकारी होती कि अपने कर्मों का फल धरती पर ही भोगना पड़ता है, तो आध्यात्मिक क्षेत्र से संबंधित अनेक प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगें। वरना् हमारा पूरा ज्ञान संशयों से भरा, निरुत्तर हो जायेगा। यदि एक बार मनुष्य ग्रहण कर सकें कि स्वर्ग और नरक सब इसी धरती पर ही हैं, उन्हें हम नित्य अनुभव करते रहते हैं, आँखों के सामने स्वर्ग तथा नरक को देख रहें हैं, तो

विशुद्ध ज्ञान मनुष्य की समझ में आ सकता है। किन्तु माया, ज्ञान मनुष्य की समझ में आने से पहले ही, ज्ञान पूर्णत; असत्य है विश्वास करवा सकती है। कई मतों(धर्मों)मे माया ने, स्वर्ग और नरक के विषयों में मनुष्यों को गलत रास्ते में भटकाकर, दैवसन्निधान, अर्थात् मोक्ष, या परमात्मा में लीन होना, स्वर्ग के रुप में ग्रहण करवाया। स्वर्ग और नरक दोनों अलग-अलग होते हैं, वें मानवों को सुख और दुख पहुँचाते हैं। मुक्ति या मोक्ष, सुख और दुख से परे हैं, दैवसन्निहित से अनजान मनुष्य मोक्ष को ही स्वर्ग मान बैठा है। मनुष्य को गलत राह में भटका कर माया ने, जन्म और मृत्यु के विषयों में भी मनुष्य को पूर्णत; उलझाया, मनुष्य पुर्नजन्म को नकारना, केवल एक ही जन्म होता है माया ने मनवाया। इस प्रकार के रहस्यों से अनजान रखकर मनुष्य को आध्यात्मिक चिंतन से अलग रखकर बाह्य प्रपंच में ही मगन रखा। शरीर के अंतरंग में जीवात्मा और आत्मा अलग-अलग हैं, मन और बुद्धि अलग-अलग कार्य करते रहते हैं, अंतरंग में होने वाले विधान की जानकारी करना ही आध्यात्मिकता है, उसे जानने से ही परमात्मा का ज्ञान ज्ञात होगा, तथा उनके धर्मों की जानकारी होगी, यदि हम शरीर के अंतरंग को जान सकें तो, सारे प्रश्नों के उत्तर सम्पूर्णत; मिलेंगें। इन सब से मनुष्य अनभिज्ञ होने की वजह से, धर्म के जाल में फँसकर, माया को न पहचानकर, अपने-आप को तथा परमात्मा को पहचान नहीं पा रहा है।

सभी मतों(धर्मों) में प्रवक्ताओं ने परमात्मा के बारें में सूचित करने के बावजुद, उनके द्वारा सूचित ज्ञान को न समझकर प्रवक्ताओं को भी मत(धर्म) के नाम से जोड़ा गया, और हमारा मत(धर्म) अलग है, कहा जा रहा है। अबतक हर प्रवक्ता द्वारा कहा गया परमात्मा का विषय पूरे विश्व के मानवों के लिए था, उन्होंने कहीं भी मत (धर्म) का नाम नहीं लिया। परमात्मा ने प्रवक्ताओं द्वारा अपना ज्ञान को सूचित किया, लेकिन माया ने, मनुष्यों को अपने पक्ष में कर, परमात्मा की ओर कोई भी न जा

सकें, अलग-अलग समय में प्रवक्ताओं द्वारा बताए गए ज्ञान को, लोग अलग-अलग मतों(धर्मों)का बोध की तरह समझें, किया। सबसे पहले माया का प्रभाव इस प्रकार से आरम्भ होकर मनुष्य जीवन भर माया प्रभाव में ही फँसा रहे माया ने किया। इसी वजह से मनुष्य बहिरंग कितना भी मेधावी क्यों न हो, अंतरंग में परमात्मा के विषयों में जड़बुद्धि ही रह गया। कुछ लोग आध्यात्मिक विद्या में कितना भी मेधावी क्यों न हो, सभी धर्मों के मूल ग्रंथों का अध्ययन कर हर पन्नें को अपने स्मरण में रख कर, वेद मंत्रों को, गीता के श्लोकों को, पवित्र बाइबिल के वाक्यों को, पवित्र कुरान के आयतों को सुलभता से कहने वाले, ऐसे व्यक्ति भी मतों(धर्मों)की माया-जाल में फँसकर रह गए हैं। और धर्म से परे परमात्मा के ज्ञान को पहचान नहीं पा रहें हैं। मनुष्यों ने, अपने शरीर के अंतरंग में परमात्मा द्वारा व्यवस्थित विधानों को समझ नहीं पा रहें हैं। अपने बारें में मैं कौन हूँ, नित्य शरीर के अन्दर हो रहे प्रक्रियाओं का संचालक कौन है समझ नहीं पा रहा है। शरीर के अन्दर उसका पात्र स्वल्प है या महान है पहचानने की स्थिती में नहीं है। यदि अन्दर का विधान ही न मालूम हो, तो सृष्टि के बाद शरीर के अन्दर हो रहे मरण के बारें में हो, या सृष्टि आदि में हो रहें जन्मों के बारें में हो, मनुष्य अनजान स्थिति में रह गया, और जगत में पुर्नजन्म का विषय रहस्य ही रह गया है।

परमात्मा ने अपने ज्ञान को मनुष्य तक पहुँचाने के लिए अनेकों बार धरती पर अपने ज्ञान को इन्दू(हिन्दू) मत(धर्म) में भगवान द्वारा प्रकट किया। और अन्य धर्मों में प्रवक्ताओं द्वारा सूचित किया। इसके बावजुद माया मनुष्यों को परमात्मा ज्ञान से दूर ले गयी। इस वजह से मनुष्य, अपने पहले जन्म तथा मृत्यु के बारें में अनजान रह गया। प्रवक्ताओं ने मनुष्य को पुर्नजन्म के रहस्य के बारें में समझाने के बावजुद भी, मनुष्य ग्रहण न कर सका, जन्मों का विषय अत्यन्त मुख्य हैं, उस विषय में मनुष्य को सूचित करने निमित्त, मानव शरीर के अन्दर आत्मा ने स्वयं सूचित

करने का विधान का चुनाव किया। आत्मा ने स्वयं पुर्नजन्म के विषयों को जीवात्मा रुपी मनुष्यों को सूचित करने का कारण भी है। परमात्मा न कार्य करता है, न विषयों की जानकारी देता है, परमात्मा का अंश भगवान के वाक्यों का खंडन कर प्रकृति जनित माया ने जन्मों का न होने का बोध करा रही है। परमात्मा के अन्य सारे विषय बाह्य्य अनुभवों द्वारा मालूम होने की संभावना रहती है। किन्तु इसे ब्रम्हविद्या शास्त्र द्वारा निरुपण किया जा सकता है। जन्मों के विषय में किसी भी व्यक्ति को कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिल सकता। इसलिए आत्मा को स्वयं ही पुर्नजन्मों के विषय को निरुपण में लाने की आवश्यकता आ पड़ी। आत्मा शरीर में दो प्रकार के कार्यों को करती है इसकी चर्चा पहले भी कर चुके हैं। शरीर के अन्दर अंतर्गत भागों तथा उनके कार्यों की जानकारी करना ही आध्यात्मिकता होती है, मनुष्य के अन्दर में मन, तथा आत्मा विशेष रुप से दो कार्यों को करती है इसकी चर्चा हो भी चुकी है। शरीर के अन्दर मन, तथा आत्मा दो कार्यों को करती है यह शास्त्रबद्धता, तथा वास्तविकता होने के बावजुद मनुष्य के मष्तिष्क में आत्मा पर एक प्रश्न उठता है। जो इस प्रकार से है! शरीर में प्रकृति सम्बंधित मन, तथा परमात्मा सम्बंधित आत्मा, दोनों दो-दो कार्यों को करती हैं, प्रकृति सम्बंधित मन भी आत्मा के जैसे दो कार्यों को करती है, आत्मा ने मन से ज्यादा कार्य नहीं किया, अर्थात् मन करने वाले कार्यों को मन ने किया, आत्मा करने वाले कार्यों को आत्मा ने किया, मन और आत्मा एक जैसे ही कार्य करने के बावजुद, आत्मा को मन से महान कैसे कह सकते हैं ऐसा प्रश्न भी कोई पुछने की गुंजइश हो सकती है।

इस प्रश्न का उत्तर हम इस प्रकार से दे सकते हैं। कहा जाता है कि प्रकृति से महान परमात्मा है, प्रकृति सम्बंधित मन से परमात्मा सम्बंधित आत्मा हमेशा ही महान होती है। मन से महान आत्मा होती है कहने का एक कारण है। एक व्यक्ति के जीवन में मन, तथा आत्मा दोनों दो-दो कार्यों को करती हैं, प्रपंच में किसी भी स्थान में, कहीं भी, कभी भी, किसी

न किसी में आत्मा विशेष रुप से मन से भी ज्यादा तीसरा कार्य भी करती है। आत्मा, मन से ज्यादा तीसरा कार्य भी करने की वजह से मन की समानता आत्मा से नहीं हो सकती, क्योंकि शरीर में सबसे ज्यादा महान आत्मा को ही कहते हैं। हर एक के जीवन में तीसरे कार्य की आवश्यकता नहीं पड़ती है, इसलिए आवश्यकता पड़ने पर तीसरे कार्य करने का सामर्थ्य आत्मा में होने की वजह से, शरीर में सभी भागों से आत्मा को महान कहते हैं।

साधारणतया हर शरीर में आत्मा कार्य करती है, अनेक मनुष्य इस बात से अनजान हैं कि आत्मा दो कार्यों को करती हैं, तथा कई लोग इस बात से भी अनजान हैं कि जीवात्मा तथा परमात्मा के अलावा विशेष रुप से आत्मा भी शरीर में विद्यमान हैं। आत्मा के विषय में 95 प्रति -शत लोग अनभिज्ञ हैं। बड़ी मुश्किल से 5 प्रतिशत लोग जानते होंगें, उसमें भी कई लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि आत्मा हमेशा दो कार्यों को करती है, तथा आवश्यकता पड़ने पर तीसरा कार्य भी कर सकती है। इसे इतनी गहराई से जानने के लिए बड़े प्रवक्ताओं ने भी आत्मा के विषय में इतनी गहराई से कहीं भी उल्लेख नहीं किया। भगवद् गीता में मात्र ही भगवान ने कहा, ज्ञान से आत्मा की महानता की जानकारी होती है। परन्तु न ही गीता किसी की समझ में आया और न ही आत्मा का विषय किसी की समझ में आया। और न ही शरीर में उसके कर्तव्यों के बारें में ज्ञात हो सका। आत्मा का तीसरा कार्य के बारें में अब पूरी जानकारी करेंगें।

आत्मा द्वारा करने वाले तीन कार्यों में सबसे पहला कार्य आत्मा हमेशा एक क्षण भी बिना रुके निरन्तर करती रहती है। आत्मा का पहला कार्य सृष्टि आदि से (प्रभव में) प्रारम्भ होकर सृष्टि अंत्य (प्रलय) तक एक सेकेण्ड भी बिना रुके होता रहता है। निरन्तर इस कार्य को आत्मा अविराम करती है। इस विषय में किसी को जानकारी न होने पर भी, प्रपंच मे हो

रहे हर कार्य आत्मा द्वारा ही होता रहता है। आत्मा सभी के शरीरों में रहकर निरन्तर कार्य करती रहती है। आप मानें या न मानें। प्रपंच में किसी भी प्राणी द्वारा किया गया हर कार्य आत्मा द्वारा किया जाता है। परन्तु हर प्राणी यही मान बैठा है कि हर कार्य को मैंने किया है। विश्व में जो भी कार्य हो रहा होता है उसे आत्मा ही करती है, इस विषय में किसी को भी जानकारी न रहना हमारी बहुत बड़ी अज्ञानता है। आत्मा द्वारा किया गया पहला कार्य यदि मनुष्य को मालूम हो जाए, तो वह व्यक्ति कर्मयोगी बन सकता है। एक व्यक्ति को कर्मयोगी बनने के लिए किसी भी साधना की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ब्रम्हयोग को करने के लिए साधना की आवश्यकता होती है, किन्तु कर्मयोग को पाने के लिए साधना की आवश्यकता नहीं होती है। हमारे शरीर में जीवात्मा के साथ आत्मा भी होती है, वही छोटे, बड़े तथा शरीर के अन्दर, शरीर के बाहर के कार्यों को करती है यदि मालूम हो जाय तथा यह विषय हमेशा स्मरण में रहे, तो कोई भी व्यक्ति कर्मयोगी बन सकता है। भगवद् गीता में भगवान ने कर्मयोग के सूत्र में यही कहा। गीता में कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया कि कर्मयोग के लिए साधना, तथा ध्यान करने की आवश्यकता होती है। साधना करना मात्र ब्रम्हयोग के लिए ही होता है स्मरण रहें। प्रस्तुतकाल में अनेक लोग ध्यान करते हैं, यदि उनसे पुछा जाय कि योग कितने प्रकार के हैं, ध्यान किस योग से सम्बंधित है वें उत्तर नहीं दे पायेंगें। उन व्यक्तियों को साधना के विषय में सही जानकारी नहीं है, वें किसी का अनुसरण कर रहें हैं। ऐसे व्यक्तियों को जिन्हें साधना की पूरी जानकारी नहीं हैं, वें शरीर के अन्दर में मन का विषय में हो, या आत्मा के विषय में हो, उन्हें कुछ भी मालूम नहीं हो सकता है। जब आत्मा का विषय ही न मालूम हो, तो उनके कार्यों को तथा वह कैसी होती है? कैसे जानकारी हो पायेगी? इसलिए आत्मा द्वारा हमेशा हो रहा पहला कार्य हो, या कभी-कभी हो रहा दूसरा कार्य हो, किसी को मालूम नहीं हो पाया। आत्मा द्वारा तीसरा कार्य करना को लेकर लोग इससे भी अनभिज्ञ हैं, कह सकते हैं।

आप मुझसे एक प्रश्न पुछ सकते हैं। धरती पर हर किसी के लिए अनभिज्ञ विषय, आत्मा द्वारा किया गया तीसरा कार्य, आपको कैसे मालूम हुआ? आपने बताया इस बारें में कोई नहीं जानता, तो फिर आप कैसे जानते हैं? इसका मेरा ठोस जवाब है जिस विषय के बारें में कोई नहीं जानता उसके बारें में बतलाना भी एक कार्य ही है, मेरा कार्य करना बाह्य रुप से आप सब को नजर आता है। मेरे अन्दर हर कार्य को आत्मा ही करती है, मैं नहीं, मुझे अच्छी तरह स्मरण है। मैं, वास करने वाले शरीर में मेरा साथी भी रहता है, वही इस शरीर का अधिपति है, यदि वो कार्य न करे तो कोई कार्य शरीर में नहीं होगा, वो ही मेरा पडो़सी है, उसे ही आत्मा कहते हैं। मैंने जो कार्य किया ही नहीं उसे मैंने किया कहना गलत होगा। ऐसी गलती मैं कभी नहीं करुँगा। यदि वैसा कहूँ तो मेरे पड़ोसी(आत्मा) को धोखा देना हुआ। आत्मा द्वारा किया गया हर कार्य को जीवात्मा अर्थात् मैंने किया अज्ञानतावश कहना भी आत्मा का अपमान करने जैसा ही है। इसे आत्मद्रोह कहते हैं। मैं सब के जैसा आत्मद्रोही नहीं हूँ। हर किसी के लिए अविज्ञ आत्मा का रहस्य आत्मा को ही मालूम है। इसलिए आत्मा अपने तीसरे कार्य को बता रही है, मैं कदापि नहीं। शरीर में हो रहे कार्यों को बुद्धि द्वारा देखते हुए, उनका अनुभव करना ही मेरा कार्य है। इसके अलावा अन्य सारे कार्यों को आत्मा करती है। आत्मा का तीसरा कार्य भी आत्मा, मेरे वास शरीर द्वारा ही सूचित करती है। मनुष्य सजीव शरीर में सर्वदा हो रहे आत्मा का पहला कार्य है, कभी-कभी होना आत्मा का दूसरा कार्य है, अनेक जन्मों में एकबार होना आत्मा का तीसरा कार्य होता है बता चुके हैं। जीवात्मा का **पुर्नजन्म होता है सूचित करने निमित्त आत्मा कार्य करना, आत्मा का तीसरा कार्य होता है।** यदि आत्मा तीसरा कार्य न करे तो पुर्नजन्म के बारें में कहने के लिए कोई आधार ही नहीं होंगें। इस वजह से सत्य को सूचित करने के लिए, " ध्रुवम् जन्म मृतस्य च " शास्त्र वचन निरुपण करने के लिए आत्मा ने उनके

शरीर में तीसरा कार्य करके दिखाया। आत्मा द्वारा किया गया तीसरे कार्य को विशद रुप से देखते हैं। भगवद् गीता में ज्ञानयोग में पाँचवाँ श्लोक में " बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन, तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप " " हे अर्जुन ! मेरे पहले बहुत जन्म हो चुके हैं, और तेरे भी बहुत जन्म हो चुके हैं। उन जन्मों को मैं जानता हूँ, किन्तु तु उन जन्मों को नहीं जानता " कृष्ण ने अर्जुन से कहा। कृष्ण और अर्जुन दोनों मनुष्य थे, दोनों के अन्दर मन तथा आत्मा दोनों अपना-अपना कार्य करती हैं। अर्जुन जिन जन्मों के विषय से अनजान था, उसे कृष्ण कैसे जानते थे ? ऐसा प्रश्न हर एक के मन में आना स्वाभाविक है। यदि हम सब इन प्रश्नों का उत्तर जान जायें तो, अर्जुन के शरीर के अन्दर आत्मा दो कार्यों को करती है, मालूम हो जायेगा। सब के शरीरों की तरह ही अर्जुन के शरीर में भी आत्मा ने दो कार्यों को किया, जिस तरह से हर कोई अपने गत जन्म के विषयों से अनजान होते हैं, उसी तरह अर्जुन भी अपने गत जन्मों का विषय से अनजान था। श्रीकृष्ण के शरीर के अन्दर आत्मा ने अपना तीसरा कार्य किया, इस वजह से, श्री कृष्ण को अपने गत जन्म के सारे विषय मालूम थे। इसलिए कृष्ण ने कहा मुझे पिछले सारे जन्म मालूम हैं।

एक मनुष्य के शरीर में आत्मा सर्वदा कार्य करते रहने की वजह से, मनुष्य के जीवन में हर छोटी-सी-छोटी बात सहित सारे विषय आत्मा जानती है। मनुष्य के जीवन में सर्वदा सारे कार्यों को करते रहने के कारण मनुष्य का जीवन आत्मा से छुपा हुआ नहीं है। सारे विषयों की जानकार आत्मा, मनुष्य के गत जन्मों के विषय, स्वयं ही मनुष्य के जीवन में स्मरण में सूचित करती है। इस प्रकार से पिछले जन्मों के विषयों को कभी-न-कभी, किसी-न-किसी को सूचित करना ही आत्मा का तीसरा कार्य है। कृष्ण जी के शरीर के अन्दर में आत्मा गत जन्मों के सारे विषयों को कृष्ण जी को सूचित किया इसलिए उन्होंने कहा, मैं सारे पिछले जन्मों को बतला सकता हूँ। श्री कृष्ण का इस तरह से कहना, आत्मा ने

अपना तीसरा कार्य श्री कृष्ण के शरीर में निरुपित किया। इस तरह से श्रीकृष्ण जी के शरीर के अन्दर में आत्मा ने, श्रीकृष्ण जी के पिछले जन्मों के बारें में सूचित करने की वजह से, मनुष्य का पुर्नजन्म होता है निरुपित होता है। हलां- कि यहाँ कुछ लोगों को संशय हो सकता है। श्रीकृष्ण जी इन्दूमत (हिन्दूधर्म) के प्रवक्ता थे, उनका पुर्नजन्म के विषय में उनका कहना असत्य हो सकता है न। क्योंकि अन्य मतों(धर्मों)में कहा जाता है कि पुर्नजन्म नहीं होते हैं, केवल इन्दूमत(हिन्दूधर्म) में ही पुर्नजन्म होता है, इस प्रकार के प्रश्न कई लोग पुछ सकते हैं। इन प्रश्नों का हमारा उत्तर इस प्रकार से है। मनुष्य किसी भी मत(धर्म) में जन्म लें, एक मनुष्य के शरीर के अन्दर जो विधान है वही विधान सारे मनुष्यों में रहता हैं। अलग-अलग मतों(धर्मों) के लोगों के शरीर का निर्माण हो, या शरीर के अंतरंग भाग, अलग-अलग नहीं होते हैं, मतों(धर्मों) की सृष्टि मनुष्यों ने की। पर-मात्मा ने केवल मानव जाति की सृष्टि की, मतों(धर्मों) की नहीं। परमात्मा की दृष्टि में सारे मनुष्य एक ही हैं। इसलिए प्रपंच के सभी मतो(धर्मो) के मनुष्यों की सृष्टि एक ही प्रकार से हुई हैं। सभी मनुष्यों में अनूभूति भी एक ही प्रकार से होती है**। यदि मनुष्य जन्म लेने के पश्चात् आए हुए धर्म से संबंधित साज-श्रंगार, तथा आचरण अनदेखा करें तो, कोई नहीं जान पायेगा कि फलाँ व्यक्ति फलाँ धर्म का है।** इससे कह सकते हैं कि एक मनुष्य का निर्माण जिस प्रकार से होता है वही निर्माण सभी शरीरों के अन्दर, तथा बाहर होता है। इसी प्रकार से यदि एक विषय एक मनुष्य से निरुपण में आये तो वह विषय समस्त मानवजाति पर अमल होगा। परमात्मा किसी एक मनुष्य को धर्म का मार्ग दिखलाता है तो वह हर मनुष्य के लिए धर्म का मार्ग होगा। पैदा होना, मरना, दोनों हर मनुष्य का जीवन का धर्म है। जैसे :- यवन, तथा वृद्धावस्था, हर एक मनुष्य के शरीर में बदलाव लाता है। इस प्रकार से सभी मनुष्य जाति के लिए एक ही धर्मविधान होता है, परन्तु मत(धर्म) से संबंधित विधान सभी के लिए एक

जैसे नहीं होते हैं। यदि मत(धर्म) को परे रखकर देखे तो, परमात्मा द्वारा बताए गए धर्म सभी मनुष्यों में समान रुप से लागू होता है। पैदा होना और मरना, इस विषय में परमात्मा ने सभी के लिए एक ही धर्म बताया, न कि अलग-अलग मत(धर्म) के लोगों को अलग-अलग विधान,या अलग-अलग धर्म कहा। यदि कोई भी कहता है कि हमारे मत(धर्म) में अलग विधान है तो, कह सकते हैं कि उन्होंनें परमात्मा के धर्मों को पूरी तरह से समझा ही नहीं। और उनकी बातें मत(धर्म) की बातें हैं, परमात्मा धर्म की नहीं। ऐसा क्यों कहना पड़ रहा है? क्योंकि एक मनुष्य के लिए जो परमात्मा धर्म होता है वह धर्म समस्त मानव जाति पर लागू होता हैं सूत्रानुसार परमात्मा का धर्म सभी पर लागू होता हैं, यदि खुद के बनाये मत(धर्म) को परमात्मा का नाम दें तो वह मत(धर्म) उन लोगों तक ही सीमित रहेगा। खुद के बनाये धर्म को परमात्मा का धर्म कहना, उसका अनुसरण करना, उन लोगों के लिए ही मात्र काम आ सकता है, समस्त मानव जाति के लिए नहीं, परमात्मा का धर्म सभी मतों (धर्मों) के लोगों पर लागू होता है।

भगवद् गीता में भगवान ने कहा, परमात्मा धर्म सभी मतों(धर्मों) के लोगों पर लागू होता है। यहाँ कुछ लोग एक प्रश्न पुछ सकते हैं। भगवद् गीता हिन्दू मत(धर्म) से संबंधित है, उसमें बताये गये धर्म भी हिन्दूमत से ही संबंधित तथा सीमित होंगें? इसका हमारा उत्तर है। हिन्दू मत(धर्म) वास्तव में कोई मत(धर्म) नहीं है। **हिन्दू** शब्द का कोई अर्थ नहीं है। वह मध्य में आया हुआ शब्द है। पूर्व द्वापर युग या उससे पहले युग में इन्दू शब्द हुआ करता था जो आज हिन्दू कहा जा रहा है। इन्दू नामक शब्द परमात्मा ज्ञान को सूचित करता है, तथा अर्थ देता हुआ शब्द है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन्दू नामक शब्द का भाव दैवज्ञान होता है। दैवज्ञान को जानने वाला कोई भी हो इन्दू ही कहलाएगा। किसी भी मत(धर्म) का ज्ञानी हो, इन्दू ही कहलायेगा। इसलिए इन्दू नामक शब्द किसी भी मत(धर्म)

से संबंधित नहीं है। वर्तमानकाल में अज्ञानता की अधिकता की वजह से इन्दू नामक शब्द हिन्दू शब्द में परिवर्तित हो गया है। इन्दू शब्द, हिन्दू में परिवर्तित हो जाने के बावजुद भी, भगवद् गीता में बताए गए धर्म पूर्णत; परमात्माज्ञान से संबंधित है, मतों(धर्मों) से संबंधित नहीं। **इन्दूधर्म में मतों से संबंधित नियम, तथा आचरण नहीं होते हैं।** भगवद् गीता सम्पूर्ण रुप से इन्दू धर्मों को सूचित करता हैं। इसलिए गीता, मनुष्य द्वारा बनाया गया मतों से संबंधित धर्मग्रंथ नहीं है। इसे दैव धर्मों से सम्बंधित ग्रंथ कहते हैं। गीता को बतलाने वाले भगवान श्री कृष्ण जी ने स्वयं कहा, हमें कई जन्म प्राप्त हुए हैं, उनका ज्ञान मतों (धर्मों) से संबंधित नहीं था। पूरे विश्व में कहीं भी किसी के साथ भी घटित पुर्नजन्म का विषय को निरुपण के रुप में, उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर कहा। पुर्नजन्म क्या केवल कृष्ण को ही स्मरण में था? या किसी दूसरों को भी स्मरण में आया, यदि विचार करें तो अन्य मनुष्यों में भी कुछ लोगों ने कहीं-कहीं, कभी-कभी अपने पुर्नजन्म की यादों के बारें में बताया। पुर्नजन्म के बारें में बताने वालों में इन्दू, मुस्लिम, ईसाई, तथा अन्य मतों के लोग भी हैं। इसलिए हम सब समझ सकते हैं कि कृष्ण जी का बताया ज्ञान पूरे विश्व भर के मानवों पर लागू होने वाला ज्ञान है, यह कहीं-कहीं दैवधर्म के रुप में निरुपित होता है। यह ज्ञान सब लोगों के अनुभव में आने वाला ज्ञान है और कृष्ण जी का यह ज्ञान मतों(धर्मों) से संबंधित नहीं है, सूचित होता है।

कई लोग प्रश्न पुछ सकते हैं कि श्रीकृष्ण जी को अपने पिछले सारे जन्म याद थे, किन्तु हमें, या द्वापर युग में अर्जुन को याद क्यों नहीं रहा। इसका उत्तर इस प्रकार से है। आत्मा अपने तीसरा कार्य करने की वजह से ही स्मरण में आता है, आत्मा अपने तीसरे कार्य को किसी एक के जीवन में कभी-कभी करती है। आत्मा हर एक के जीवन में, हर जन्म में कार्य नहीं करती है। इसलिए हर एक मनुष्य के लिए अपना पिछले जन्म

के विषय जानना मुमकीन नहीं हो सकता है। उस दिन श्री कृष्ण जानते थे अर्जुन के शरीर के अन्दर उसकी आत्मा तीसरा कार्य नहीं कर रहीं है, इसलिए कृष्ण ने अर्जुन से कहा, तुझे पिछले जन्मों के बारें में ज्ञात नहीं है। प्रपंच में पुर्नजन्म होते हैं सूचित करने के लिए, निरुपण निमित्त, किसी न किसी में आत्मा तीसरा कार्य कर, पिछले जन्म के विषयों को सूचित करती है। किसी भी विषय में सत्यता जानने के लिए किसी एक साक्ष्य की आवश्यकता होती है हर एक की नहीं होती है। अदालत में एक की गवाही को सत्य माना जाता है। जैसे;- किसी गाँव में किसी की हत्या हुई, उस हत्या को एक व्यक्ति ने देखा, तो उसकी गवाही को सत्य माना जायेगा। गाँव के सारे लोगों को गवाही देने की आवश्यकता नहीं पड़ती हैं। उसी प्रकार से पुर्नजन्म होते हैं समझाने के लिए किसी व्यक्ति में पिछले जन्म के विषय स्मरण में आकर, पुर्नजन्म निरुपण होने के लिए, उस एक व्यक्ति की गवाही से ही पुर्नजन्म की सत्यता निरुपित होती है। इस प्रकार से विश्व के अनेक देशों में पिछले जन्म के विषय निरुपण में आये हैं।

पिछले जन्मों में जीवात्मा के साथ वास करने वाली आत्मा, प्रस्तुत जन्म में सीधे बुद्धि को पिछले जन्म के विषयों को सूचित करती है, और बुद्धि द्वारा जीवात्मा को पिछले जन्म में हुए घटनाओं की जानकारी मिलती है। पिछले जन्म में जीवात्मा उन विषयों को स्वयं अनुभव करने के बावजुद, जीवात्मा में स्मरण-शक्ति न रहने के कारण, जीवात्मा उन विषयों से अनजान रह गया। उन विषयों को आत्मा शरीर के अन्दर मन को बिना सूचित किए सीधे बुद्धि को सूचित करती है, और बुद्धि द्वारा जीवात्मा को मालूम होता है। इस प्रकार से आत्मा पिछले जन्म के विषयों को आवश्यकतानुसार जीवात्मा को मालूम करवाती है। आत्मा द्वारा पिछले जन्म के विषय बुद्धि को सूचित करने के बावजुद भी, बुद्धि की अपनी स्मरण-शक्ति नहीं होती है, बाद में बुद्धि भी सारे विषयों को भूल जाती है। शरीर में प्रकृति संबंध भागों में से मन के अलावा स्मरण-शक्ति किसी में

नहीं होती है। मन को जानकारी दिये बिना ही आत्मा, शरीर के अन्दर जीवात्मा को सूचित कर, आत्मा ही स्वयं कर्मेन्द्रियों द्वारा प्रगट करवाती है। आत्मा ही स्वयं बाह्य्य कर्मेन्द्रियों को सूचित करती है, परन्तु मन को उन विषयों की जानकारी नहीं रहती है। शरीर में आत्मा स्वयं गत जन्म के विषयों को जब तक सूचित करती रहती है तब तक मनुष्य बाहर बताता रहता है। जैसे ही आत्मा सूचित करना बंद कर देती है, तब उन विषयों से जीवात्मा अनभिज्ञ हो जाता है। पिछले जन्म के एक वर्ष के विषयों को सूचित करने वाला व्यक्ति बाद में कुछ भी बता नहीं पाता। कोई भी उन विषयों को यदि याद दिलाने की कोशिश भी करे, वे विषय उन्हें नये महसूस होने लगेंगें। इसी वजह से कुछ समय तक ही पिछले जन्म की यादें बतलाने वाला व्यक्ति, उसके बाद के समय के यादों को नहीं कह पाता है। कुछ समय सीमा तक ही एक व्यक्ति से गत जन्म की यादों को सूचित करवाने वाली आत्मा, पुर्नजन्म होते हैं, सब लोग जान सकें, आत्मा ने सिद्ध करने के लिए किया। शरीर के अन्दर में मन की जानकारी के बिना स्वयं आत्मा ने कार्य किया इसलिए, मनुष्य की यादों में गत जन्म बातें कभी भी नहीं रहती हैं।

पिछले जन्म थें, पिछले जन्मों के बाद पुर्नजन्म भी होते हैं पहचानने निमित्त आत्मा द्वारा स्वयं सूचित करने का विधान की जानकारी अब तक हुई। पिछले जन्म, तथा पुर्नजन्म होते हैं जानने के दो विधान हैं। पहला विधान आत्मा व्यक्ति द्वारा सूचित करती है। दूसरे विधान मे शरीर पर कोई निशान रहना, जिसे मनुष्य स्वयं ही जानने की कोशिश करे। ऐसे निशान जन्म से रहता है। ऐसे निशान को तिल कहते हैं। तिल पिछले जन्म के संबंधों की याद दिलाती है। उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण जी को बाल्यावस्था में सर्प ने डँसा था, उस स्थान पर दूसरे जन्म में तिल नजर आया। इन दोनों विधानों को प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा जानकारी करते हैं।

पहला विधान में आत्मा द्वारा गत जन्मों में सूचित किये गये वास्तविक घटनाओं का विवरण करेंगें। 1930 वाँ वर्ष जून या जुलाई का महीना था। लेबनान देश में " हासन " नाम की एक बच्ची ने जन्म लिया। पुर्नजन्म को न मानने वाले इस्लाममत(धर्म) में हासन का जन्म हुआ। हासन जब 20 वर्ष की हुई " फारुक " नामक व्यक्ति से उसका विवाह हुआ। फारुक, हासन दंपत्ति की दो लड़कियाँ हुई। हासन का एक भाई भी था जिसका नाम " नबी " था। वह लेबनान देश में लेबनान समाज में उनका बहुत बड़ा नाम था। जवानी में नबी की एक जहाज दुर्घटना में मौत हो गई थी। दूसरी बेटी के जन्म के समय में हासन अस्वस्थ हो गई उसे हृदय की समस्या हो गयी। इस वजह डॉक्टरों ने सलाह दी और बच्चे पैदा न करे। लेकिन हासन ने डॉक्टरों की सलाह न मानी। 1962 में एक बेटे को जन्म दिया। 1963 में भाई की मृत्यु हो गई, दुख से हासन का स्वस्थ गिरता गया। उन्हें महसूस हो रहा था कि उनका बचना मुश्किल है। इसलिए कुछ दिनों बाद 36 साल की उम्र में हासन ने वर्जिनिया में " रिचमड " नामक डॉक्टर के पास हार्ट का ऑपरेशन कराने गयी। ऑपरेशन से पहले अपनी बड़ी बेटी लैला को फोन करना चाहा, किन्तु कर न पायी। ऑपरेशन होने के बाद एक ही दिन जीवित रही, बहुत ही नाजुक स्थिीति में हासन की मौत हो गयी।

हासन को मरे हुए दस दिन ही हुए थे, एक परिवार में सुजन्नेगानेम नाम की एक बच्ची ने जन्म लिया। सुजन्नेगानेम 16 महीने की हुई, अपनी तोतली भाषा में फोन उठाकर हॉलो लैला कहती रहती थी। सुजन्ने के परिवारवाले, तथा सुजन्ने की माँ को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, कि यह लैला कौन है? और फोन मे किसे पुकार रही है। छ; महीनें बाद सुजन्ने दो वर्ष की हो गयी। अच्छी तरह से बातें भी करने लगी। उसकी माँ ने पुछा यह लैला कौन है। सुजन्नेगानेम ने कहा मेरी दो बेटियाँ हैं, बड़ी बेटी का नाम लैला है। इतना ही नहीं मेरा नाम सुजन्ने नहींहै, मेरा नाम

हासन, मेरे पति क नाम फारुक है , अपने माता-पिता के नाम, भाईयों के नाम तथा अन्य परिवार के सदस्यो के नाम कुल मिला कर 13 नाम बताए। और उसके शहर के बारें में पुछा तो कहने लगी अभी मेरा सिर छोटा है कुछ समय बाद सारे विषय बतलाऊँगी ।

इस प्रकार सुजन्ने के बताये बातों को सुनकर सुजन्ने के परिवारवालों ने सुजन्ने ने पिछले जन्म में(हासन) कहाँ जन्म लिया जानकारी करने की सोची। इस समाचार को समाचारपत्रों द्वारा बाहर सूचित किया। हासन के परिवार वाले, तथा हासन का पति फारुक ने सुजन्ने से मिलने आयें। पहले फरुक के परिवार वालों को छोटी बच्ची हासन की बातों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। हासन ने जब परिवार वालों को उनके नामों से पुकारा, तो फरुक के परिवारवालों को विश्वास होने लगा। हासन ने अपने गहनें, तथा अन्य सामान वर्जिनिया में अपने भाई हेरकुलेकु को दिया था। यह उसकी सर्जरी से पहले हुई घटना थी। उन गहनों को हेरकुलेकु देते हुए कहा, इन सब चीजों को उनकी बेटियों तक पहुँचा दे। इस बारें में हासन के परिवार वालों के अलावा दूसरों को मालूम नहीं था। इन सब बातों को सुनकर सुजन्ने ही गत जन्म में हासन थी ध्रृवीकरण हुआ।

पढ़ना, लिखना, सीखने से पहले ही सुजन्ने ने पेपर के ऊपर कुछ नम्बर लिखा करती थी। बाद में मालूम पड़ा वें नम्बर फारुक के घर के फोन नम्बर थे। सुजन्ने पाँच वर्ष की उम्र से ही फारुक को हर रोज तीन बार फोन किया करती थी। फरुक से मिलते ही उसकी गोद में सो जाया करती थी। पुलिस की नौकरी करने वाले फारुक ने स्वीकार किया, उनकी पत्नी हासन ने मरने के बाद सुजन्ने के रुप में जन्म लिया। यदि सुजन्ने को कोई भी फोटो दिखाया जाता, तो फौरन उस फोटों मे व्यक्तियों को पहचान लेती थी, और उन फोटों में व्यक्तियों के बारें में बताया करती

थी। कुछ ऐसी बातें थी जो हासन के अलावा कोई और नहीं जानता था, उन बातों को भी सुजन्ने बताया करती थी। इससे सिद्ध होता है कि गत जन्म की हासन ही, सुजन्ने के रुप में जन्म लिया। और पुर्नजन्म होना भी निरुपित होता है। 40 साल पहले हुई पुरानी घटना को न कोई इन्कार कर सकता है, और न ही खंड़न कर सकता है।

जीव, शरीर को छोड़ना यदि मरण कहलाता है तो, वही जीव दूसरे शरीर को धारण करना जन्म कहलायेगा। इसे गहराई से विचार करें तो वह पुर्नजन्म कहलायेगा। कोई मनुष्य पुराने वस्त्र को छोड़कर नये वस्त्र को धारण करे तो उसे वस्त्र बदलना कहते हैं। वैसे ही एक जीव पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण करे तो उसे शरीर बदलना कहते हैं। शरीर को बदलने में जीव का पुर्नजन्म होता है। मनुष्य, पुर्नजन्म पाने के बावजुद, पिछले जन्म की यादें उन्हें याद न रहने की वजह से, उसे जन्म मान रहा है। परन्तु यह उसका पुर्नजन्म है, कोई भी जान नहीं पा रहा है। और मनुष्य की इसी अनभिज्ञता की वजह से सत्य समाधि हो कर रह गया है। इसी वजह से जीवात्मा को जन्मों की सत्यता से अवगत कराने निमित्त, जीवात्मा के साथ शरीर के अन्दर में वास आत्मा, कभी-कभी एक स्थान पर, पिछले जन्म की बातें याद दिलाती है। पिछले जन्म की यादों से पुर्नजन्म निरुपण होता है।मनुष्य के जीवन में आध्यात्मिक विषयों को परमात्मा ने अपने प्रवक्ताओं द्वारा कहलवाया। उन विषयों में जन्म तथा पुर्नजन्म के विषय विशेष हैं। परमात्मा, धरती पर मनुष्य के लिए कई हजारों वर्षों में एक बार आकर अपने ज्ञान को बार-बार समझाया। मनुष्य, परमात्मा ज्ञान को न भुल सकें परमात्मा ने जितनी बार अपने ज्ञान को मनुष्यों को समझाया, उतनी बार मनुष्य ने परमात्मा ज्ञान को बिना समझे, उसे एक मत(धर्म) का नाम दिया, और बताने वाले को मत(धर्म)प्रवक्ता कहा गया। परमात्मा का बतलाया ज्ञान एक ही था, केवल स्थान, समय, तथा बताने वाले व्यक्ति अलग-अलग थें। लोगों की समझ में ही न आ

सका कि किसी भी स्थान पर परमात्मा द्वारा बतलाया ज्ञान एक ही है, लेकिन मनुष्य ने सोचा हमारे मत में जो बताया गया वह अलग है, दूसरे मत में जो बताया गया वह अलग है। परमात्मा सत्यवादी है, और सत्य ही सूचित करेंगें। मनुष्य ने परमात्मा द्वारा बतलाया गया सत्य, अवगाहना न करने के कारण, हर बार अलग तरह से समझने के कारण, परमात्मा के सत्य को अनजाने में असत्य कर रहा है। परमात्मा के वाक्यों को मनुष्य असत्यकर बातें कहना अपनी अनभिज्ञता के कारण, उसे जो मालूम है वही सत्य है शत प्रतिशत विश्वास कर बैठा है। इसी विश्वास में कईयों ने पुर्नजन्म को स्वीकार किया, कईयों ने अस्वीकार किया। इस प्रकार से कई मतों के लोगों ने पुर्नजन्म में सहमति जताई, कई मतों के लोगों ने पुर्नजन्म में असहमति जताई, ऐसे में सामान्य मनुष्य किसे सत्य मानें, किसे असत्य मानें, तय नहीं कर पा रहा है। ऐसी समस्या न आये, सत्य क्या है जानने के लिए, सभी मतों के लोग सत्य को जान सकें परमात्मा ने अपने ज्ञान को मनुष्य के अनुभव में लाकर समझाया। इसी प्रक्रिया का ही भाग है हासन की पुर्नजन्म की घटना। परमात्मा द्वारा बताया हुआ ज्ञान सत्य है, यदि किसी ने उनकी बातों को गलत समझ लिया हो तो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, लोग यथार्थ को जानें, समझें और विषयों में हुई गलतफहमी को दूर करें, यदि फिर भी उन्हें समझ में न आयें तो कहा जा सकता है कि उनके पास मत(धर्म) से संबंधित ज्ञान है, परमात्मा का ज्ञान नहीं है। परमात्मा ने पूरी सृष्टि करने के पश्चात् अपने धर्मों को मनुष्य को सूचित किया। मनुष्य जब तक वापस लौटकर उनके(परमात्मा) पास नहीं आता है, तब तक मनुष्य को धरती पर पैदा होना, मरना, तथा सुख और दुख को भोगना पड़ेगा, उनके पास आने वाले व्यक्ति को मात्र ही जनन-मरण से मुक्ति मिलेगी, जिसे मोक्ष कहते हैं। इसी बारें में सभी मतों में भी बताया गया। इस्लाम मत(मजहब) में थोड़ी अवगाहना की कमी की वजह से प्रवक्ता के बताये सत्य को कुछ लोग समझ नहीं पायें। परमात्मा का

ज्ञान महाज्ञान है किसी को भी गलतफहमी हो सकती है। मोहम्मद प्रवक्ता जब जीवित थे, उनकी चार पत्नियों में सबसे छोटी पत्नी को पुर्नजन्म का विषय समझ में नहीं आया, उसने दोबारा प्रवक्ता जी से जानने की कोशिश की। लेकिन अब प्रवक्ता जी जीवित नहीं है उनसे पुछने की संभावना नहीं है। इसलिए यथार्थ के अनुसार सुधार किया जा सकता है। मोहम्मद प्रवक्ता जी ने अपनी पत्नियों को परमात्मा के धर्मों को सूचित करते हुए कहा मृत व्यक्ति को, परमात्मा प्रलय के दिन समाधि से जगाते है, और तब मनुष्य उन्हीं हड्डियों से, उसी चर्म से, उसी शरीर के साथ वापस समाधि से जागता है, लेकिन समाधि से जागते समय में उनके शरीर पर वस्त्र का एक धागा भी नहीं रहता है। यह सुनकर प्रवक्ता की छोटी पत्नी ने पुछा, " हम स्त्रियाँ हैं न!परमात्मा हमें बिना वस्त्र के नग्न रुप में जगाये तो हमारी शर्मिन्दगी होगी न! हमारी इज्जत चली जायेगी हमारा अपमान होगा न!" पुछी। तब प्रवक्ता ने ऐसा कहा, " परमात्मा, मनुष्य को दोबारा समाधि से जगाता है चाहे वह स्त्री हो, या पुरुष हो, उनमें कोई गुण, कोई प्रपंच ध्यान नहीं रहता है।" प्रलयकाल में सभी मृतकों को समाधि से जगाया जाता है पवित्र ग्रंथ कुरान में कई जगहों में प्रवक्ता ने बतलाया। इस विषय में प्रवक्ता की पत्नियों को गलत- फहमी हुई, प्रवक्ता ने उन्हें विस्तार से समझाया। इस विवरण को जाननेवाले और समझनेवाले सुलभता से समझ सकेंगें कि पुर्नजन्म होते हैं। लेकिन पुर्नजन्म के बारें में अनेक लोगों को प्रवक्ता की बातें समझ में न आने के अनेक कारण हैं। जो इस प्रकार से हैं। समाधि का अर्थ बहुतों को समझ में नहीं आया। यदि पुछा जाय कि परमात्मा जब मृत मनुष्य को जगाता है तो उस मनुष्य की उम्र कितनी रही होगी? वह समाधि तेरा है या तेरे शरीर का?, जल में डुबे गए व्यक्ति की समाधि कहाँ होगी?, अग्नि में जलकर भस्म हो गए व्यक्ति की समाधि कहाँ होगी? यदि ऐसे प्रश्नों को पुछा जाय तो सही उत्तर नहीं मिलगा। यदि सभी प्रश्नों के जवाब मिल जाय तो

समझ लें परमात्मा का बतलाया ज्ञान हमलोगों की समझ में आ गया, नहीं तो समझ में नहीं आया।

सृष्टि के कर्ता परमात्मा ने जनन तथा मरण के विषय में एक ही धर्म का बोध करवाया। गीता में हो, या बायबिल में हो,या क़ुरआन में हो, उन वाक्यों में कहीं भी भिन्नता नहीं हैं। यदि भिन्नता हैं दिखती है तो, वह हम सब की समझ में हैं। इसलिए परमात्मा ने सावधान करते हुए कहा आपलोगों को अच्छी तरह से सोच-विचार करनी चाहिए। क़ुरआन में आजे जमात 39 वाँ सुर; में 42 वाँ आयत में इस प्रकार से दिया गया है। " अल्लाह आत्माओं(प्राणियों)को मरण काल में अपने आधीन में कर लेता है। मृत व्यक्तियों के आत्माओं को जिसके लिए मरण निर्णित हुआ हैं मात्र उसे ही अपने पास रोककर, अन्य आत्माओं को निर्णित समय तक के लिए वापस भेज देता है। इस वाक्य में योचना करने वालों के लिए महत्वपूर्ण जानकारियाँ हैं"। यह आयत किसी को भी सोच में डाल सकती है। बाकि के प्राणियों को वापस भेज दूगाँ कहना, कहाँ से कहाँ पर भेजा जायेगा? इस प्रश्न पर योचना करने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं स्वयं परमात्मा ने ही कहा इस वाक्य पर विचार करने से महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलेगीं, मनुष्य को अधिक सोचने की आवश्यकता है, कहीं न कहीं हम सब किसी गलतफहमी का शिकार हो रहे हैं, इसलिए परमात्मा ने ऐसा कहा समझना चाहिए।

इसी का अनुसंधान पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में सृष्टि के कर्ता खुदा ने एक और वाक्य में कहा। 53 वाँ सुर; अननज्म(नक्षत्र) 44,45,46 आयतों में 44) निश्चय ही उन्हीं से मरण की प्राप्ती तथा जीवन की प्राप्ती होती है। 45) निश्चय ही वह नर, मादा के जोड़ो का सृजनहार है, 46) प्रसवित वीर्य बिन्दू से दूसरे जीवन का जन्म देने के कर्ता वे ही है। इस प्रकार से क़ुरआन में कई आयतें हैं। उन आयतों को अच्छी तरह से समझने से 36

वर्ष की आयु में हासन की मौत हो जाना तथा दस दिनों में ही सुजन्ने के रुप में दोबारा जन्म लेने की सत्यता, समझ में आ सकता है। यदि हासन मरकर दोबारा पैदा हुई है सत्य है तो, पुर्नजन्म नहीं होते हैं कहना असत्य होगा। ऐसी असत्य बातों को प्रवक्ताओं ने कहा कहकर, उनकी महानता पर दाग नहीं लगाना चाहिए। प्रवक्ताओं की बातों का तात्पर्य को गलत समझना, परमात्मा के वाक्यों को गलत साबित करने जैसा है। परमात्मा के बातों को असत्य रुप में बताने से भयंकर पाप का भागीदार बन सकता है। इसलिए हमारा आप सब से अनुरोध हैं परमात्मा ज्ञान को किसी भी मत(धर्म) का व्यक्ति हो, सही तात्पर्य जानने की कोशिश करें। क़ुरआन का शोध कर कई बुजुर्गों ने क़ुरआन में पुर्नजन्म के बारें में कई आयतों को लिखा है। उन सभी को नीचे लिख रहे हैं देखें।

1) जब शरीर नष्ट होता हो, तब आत्मा(जीवात्मा) उस पुराने कवच को छोड़कर, उससे मुक्त होकर नया शरीर धारण करती है। मानव शरीर एक व्यक्ति के लिए एक ऋतु की तरह कुछ समय तक ही रहता है। आत्मा का वह समय पूरा होते ही उसे छोड़कर दूसरे नये शरीर को धारण करता है।

2) दैवत्व, आत्माओं(जीवों)का उद्‌भव करवाता है। और यहाँ (धरती)पर आत्माओं को बार-बार भेजा जाता है। जब वह आत्मा दैवत्व को वापस पा लेती है तब आत्मा को वापस जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती है।

3) तु उस खुदा को भूल रहे हो जिसने तुझे बनाया, तेरी मौत होते ही दोबारा जन्म करवाया, तथा जन्म के बाद मरण प्राप्त करवाता है, इस जन्म-मरण के चक्र में तेरा प्रवेश तब तक होते रहना है जब तक तु उन तक न पहुँचो।

4) यह वही अल्लाह, या परमात्मा है जिसने तेरी सृष्टि की तेरा

अस्तित्व को बनाया, तेरी मौत होते ही तेरा जन्म करवाया, तु जन्म लेने के बाद तुझे मरण की प्राप्ति करवायी।

5) उसी अल्लाह या परमात्मा ने ही पत्थर से बीज को तुड़वाकर अंकुरित करवाया, मरे हुए को दोबारा जन्म करवाया, जीवन जी रहे व्यक्ति को दोबारा मरण की प्राप्ति करवायी।

6) अब मैं आप को सत्य का बोध कराता हूँ, जिन आत्माओं को अल्लाह के प्रति तीव्र आसक्ति, तथा इच्छा होती हैं वें आत्माएँ कितने ही शरीर का धारण करें, तथा कितने ही नामों को पायें फिर भी वें अल्लाह के निकट हो ही जाते हैं।

इन वाक्यों में दैवत्व की महानता, तथा मनुष्य के जन्म होते रहते हैं सूचित होती है।यह बिलकुल सत्य है कि मनुष्य अपने पाप और पुण्यों को भोगने के लिए ही जन्म लेता है। और इसे कर्म-सिद्धान्त कहते हैं। कर्म-सिद्धान्त को सूचित करने वाले वाक्य पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में कहीं-कहीं सूचित किया गया है। जो कुछ इस प्रकार से हैं।

1) दैवत्व या अल्लाह ने किसी भी आत्मा को (जीवात्मा को) अपनी शक्ति से ज्यादा करने का निर्देश नहीं दिया। उस आत्मा ने जो अर्जित किया उसे ही पाया। उसने जो कुछ भी पाया उस की जिम्मेदारी उसी की है।

2) हर आत्मा अपनी अच्छी और बुरी करनी को दोबारा पाती है।

3) हमलोग अपने कर्म का लेखा-जोखा करते समय हमलोग खुद ही फैसला ले लेते हैं। कोई आत्मा दोषी नहीं है। कर्म, चाहे पाप हो या पुण्य हो कितना छोटा ही क्यों न हो वापस हमें भोगना ही पड़ता है। हम लोगों का आत्म क्षेत्र लेखा-जोखा के विषय में एकदम पक्का है।

4) हमने दूसरों के लिए क्या किया, दूसरों ने हमारे लिए क्या किया, हमारे सारे विषय पूरे लेखा-जोखा के साथ हमारे पास ही रहते हैं।

5) क़ुरआन में विश्व में मानवों के बारें में अतिअद्‌भुत वाक्य लिखे गये गए हैं। किन्तु मजहबों के संकुचित अवगाहना के कारण इस सत्य को हम भूला बैठे हैं। प्रपंच में कोई भी व्यक्ति किसी भी मजहब का हो, जो कोई भी अल्लाह पर विश्वास रखता हो उसे अंतिम दिनों में भय नहीं रहता है तथा दुखी नहीं होता है। देखा ! यह वाक्य कितना उत्कृष्ट है ? कर्म-सिद्धान्त वाक्यों के अनुसार क़ुरआन उत्कृष्ट है। इससे हम सब समझ सकते हैं कि प्रपंच में समस्त मानव जाति पर लागू होनेवाला सूत्र बतलाया गया है। क़ुरआन में बताए गए सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य द्वारा अर्जित कर्म की जिम्मेदारी मनुष्य की ही होती है। मनुष्य द्वारा अर्जित कर्म को अनुभव कराने के लिए मनुष्य को दोबारा पैदा होने के लिए भेजा जाता है। कर्मरहित व्यक्ति को दोबारा पैदा होने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ऐसे लोग अल्लाह के सन्निधान में ही रह जाते हैं। परमात्मा ने, सर्वप्रथम मनुष्य को कर्मरहित ही सृष्टि किया और स्वयं ही उसे जीना सीखाया, परन्तु मनुष्य ने स्वयं की सृष्टि करने वाले परमात्मा को भूला कर, मैं, स्वयं ही अपना जीवन जी रहा हूँ सोचकर कर्म का अर्जन करते हुए पुन;-पुन; पैदा होने के लिए बाध्य हो गया। हमने कितनी बार कहा पुर्नजन्म होते हैं लेकिन लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है। इसलिए मुस्लिम परिवार में ही मरकर दोबारा मुस्लिम परिवार में ही पैदा हुए एक व्यक्ति की वास्तविक घटना के बारें में चर्चा करते हैं। इससे पहले भी एक मुस्लिम स्त्री के बारें में बताया गया था। अब एक पुरुष के बारें में कह रहे हैं। यह घटना लेबनान देश की ही है।

1943 में लेबनान देश में "फरमट्‌ट" नामक शहर में रशीद खादीज नाम का एक व्यक्ति ने जन्म लिया। वह ऑटोमोबाइल मेकेनिक था।

रशीद की उम्र 25 वर्ष थी एक दिन उसका दोस्त इब्राहिम ने उसे कार में घुमाने ले गया। इब्राहिम की कार समुद्र के पास से तेजी से गुजर रही थी, मिलिटरी बीच नामक स्थल पर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। इतने में रशीद कार के अन्दर से बाहर जा गिरा। और जमीन पर गिरते ही सिर पर गंभीर चोट आयी, और चोट लगने की वजह से रशीद की घटना स्थल पर ही मौत हो गयी। रशीद की मौत के सालभर बाद " डानियल जर्दी " नाम का एक व्यक्ति ने जन्म लिया। डालियल जर्दी ने पहला शब्द इब्राहिम कहा। दुर्घटना होने वाला दिन कार चलाने वाला दोस्त का नाम भी इब्राहिम था। किसी को नहीं मालूम था कि डानियल ने इब्राहिम नाम क्यों लिया। दो वर्ष की उम्र में डानियलजर्दी ने अपनी माँ " लतीशा " से कहा मुझे घर जाना है। और छ; महीनों के बाद, अर्थात् अढ़ाई साल की उम्र में कहा, यह मेरा घर नहीं है, तुम मेरी माँ नहीं हो, मेरे पिता मर चुके है इस प्रकार से कई बातें कही। उसके पिता युसफ को अब्बा न कह कर युसफ कहा करता था। इतना ही नहीं मेरे अब्बा का नाम नयाम है, कहता रहता था।

डानियल जर्दी अढ़ाई साल का था, अपने परिवारवालों के साथ पिकनिक पर गया। वहाँ किसी व्यक्ति ने परमट्टा नाम का गलत उच्चारण किया, यह सुनते ही जर्दी ने सही उच्चारण बताया। जर्दी के अब्बा युसफ ने पुछा, तुझे कैसे मालूम? जर्दी ने कहा, मुझे इस शहर का नाम अच्छी तरह से मालूम है, और मैं इसी शहर में रहता था। डानियल जर्दी की कही बातें उसके परिवार वालों को कुछ समझ में नहीं आ रही थी। कुछ दिनों के बाद डानियल जर्दी, अपनी अम्मी के साथ कार में सफर कर रहा था, उनकी कार मिलिटरी बीच के पास से गुजरते ही, उस जगह को देखकर डानियल ने आँखें बंद कर ली, और हाथों से चेहरे को छुपाकर रोना शुरु किया। और जोरों से चिल्लाया " मेरी मौत यहीं पर हुई थी ।" गत जन्म में मैं कार मैकेनिक था, मेरा दोस्त कार चला रहा था और कार दुर्घटनाग्रस्त

हो गई, मैं उछलकर बाहर गिरने के कारण मेरे सिर में जोरों की चोंट लगी और मौत हो गई।

विद्यालय में डानियल जर्दी जब नर्सरी में पढ़ता था, सबसे कहते रहता था मेरा नाम डानियल जर्दी नहीं, रशीद खादीज है। उसी स्कूल में किसी संदर्भ में एक जवान सुन्दर लेडी टीचर को चिकोटी काटते हुए कहा, तुम बहुत सुन्दर लग रही हो। इस प्रकार की बातों से, हरकतों से, कई संदर्भों में डानियल विचित्र वर्ताव करता था, उसके इस वर्ताव की सच्चाई को जानने के लिए उसके अब्बा युसफ ने, परमट्टा जाकर डानियल के बताए अनुसार कार मेकेनिक के बारें में, मिलिटरी बीच के पास दुर्घटना के बारें में परिशीलन किया। परिशीलन में मालूम पड़ा डानियल ने जो कुछ कहा, पूरा सच था। इस विषय को जानने के बाद रशीद खादीज के रिश्तेदार, और दोस्त, डानियल से मिलने गए। उन सब को देखकर डानियल ने रशीद की बहन नज्मा को तुरन्त पहचान लिया और नाम लेकर पुकारने लगा। पहले सारे रिश्तेदारों को देखते ही डानियल ने अपनी अम्मी लतीशा से सब लोगों के लिए केले लाने को कहा। क्योंकि रशीद को पिछले जन्म में केले बहुत पसन्द थे। रशीद के मौत के बाद रशीद की अम्मी ने रशीद की याद को भूलाने के लिए केले खाना छोड़ दिया। बाद में डानियल, परमट्ट जाते ही अपने दोस्त तथा दूसरे दोस्त बजाज को भी पहचान गया और उससे बहुत सारी बातें की।

रशीद के परिवारवालों ने स्वीकार किया कि रशीद ने दोबारा जन्म लिया। रशीद के परिवारवाले डानियल के फोटो को घर ले गए। रशीद अपने दूसरे जन्म में भी कार चलाने से डरता था। रशीद का कार चलाने से डरना, या पिछले जन्म की यादें हो, डानियल के साथ अपने-आप ही नहीं हुआ। डानियल के शरीर के अन्दर वास आत्मा ने तीसरा कार्य किया। मनुष्य मरने के बाद दोबारा जन्म लेता है मनुष्यों को सूचित करने के

लिए, आत्मा द्वारा किया गया कार्य था। हर मनुष्य में जीवात्मा के साथ आत्मा वास करती है, कभी-कभी, कहीं-कहीं, किसी मनुष्य को गत जन्म की याद आने की घटनाएँ ही पुर्नजन्म का वृतान्त है। जो लोग पुर्नजन्म नहीं होते हैं कहते हैं उनका तर्क असत्य है, इस प्रकार की घटनाओं से ही शास्त्रबद्ध तरीके से पुर्न- जन्म होना सिद्ध होता है।

मनुष्य आध्यात्मिक विद्या की जानकारी बिरल ही करता है। कोई लाखों में एक ही व्यक्ति दैवज्ञान में आसक्ति दिखाकर उसे जानने की कोशिश करता है, परन्तु विषयग्रहीता की कमी की वजह से, भावों का अर्थ दूसरे प्रकार से समझने की वजह से, परकदृष्टिकोण न होने की वजह से जो हो रहा है उसे नकारना तथा जो नहीं है, उसे है समझकर, मान कर चल रहा है। इस वजह से दैवज्ञान दुनिया के सामने सत्य रुप में न आकर असत्य रुप में प्रचार हो रहा है। धरती पर हुए तथा हो रहे पुर्नजन्म की घटनाओं को अनदेखा कर पुर्नजन्म नहीं होते हैं कहना, मनुष्यों को परमात्माज्ञान असत्य रुप में नजर आना और बातें करना पूर्णत; उनकी गलती हैं। कई मतो(धर्मों) के लोग पुर्नजन्म को नकार रहे हैं परन्तु उन्हीं के मत(धर्म) में प्रवक्ताओं ने, प्रवक्ताओं द्वारा परमात्मा ने कहीं भी नहीं कहलवाया कि पुर्नजन्म नहीं हैं। स्वर्ग, नरक के बारें में बताते हुए कहते हैं कि नरक में कष्ट, तथा स्वर्ग में सुख की प्राप्ति होती है, परमात्मा के सन्नीधान, परलोक, या परंधाम को स्वर्ग कह रहे हैं। परमात्मा सन्नीधान और स्वर्ग, इन दोनों में बहुत अन्तर है, जैसे;- कहाँ राजा भोग कहाँ भजुआ तेली, इन दोनों में अन्तर न समझ पाने की वजह से परमात्मा सन्निधान और स्वर्ग को एक समझ बैठे हैं। परमात्मा सन्निधान कैसा होता है कोई नहीं बता सकता। वहाँ जाने वाले मात्र को ही ज्ञात होता हैं। किसी दूसरे को ज्ञात होना असंभव है। ऐसे में उसे स्वर्ग कहा जाना पूर्णत; गलत ही होगा। स्वर्ग सुखों का क्षेत्र, तथा नरक दुखों का क्षेत्र है। यह कहीं और नहीं धरती पर मनुष्यों के मध्य ही हैं। स्वर्ग सुखों का

अनुभव करने वालों को, नरक यातनाओं का अनुभव करने वालों को, यहीं धरती पर देखते रहते हैं। **आध्यात्मिकता विशेषतया परमात्मा का राज्य जैसी है और मत(धर्म) विशेषतया माया राज्य जैसी होती है।** मैं ज्ञानी हूँ कहने वाले सारे मतज्ञान(धर्मज्ञान) में पड़ कर परमात्माज्ञान से विस्मृति हो रहे हैं। इसलिए आध्यात्मिकता समझने के लिए किसी भी मनुष्य के लिए, किसी भी प्रवक्ता द्वारा जो भी कहा गया उसे मत(धर्म) से असंबंधित कर जानकारी की जाय, तो चाहे दैवग्रंथ कुरान हो, बायबिल हो, या गीता हो, इन सब में विशुद्ध दैवज्ञान ही नजर आयेगा।

ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार वास्तव में पुर्नजन्म होते हुए भी कुछ ही लोग इससे सहमत हैं। कुछ हेतुवादी, तथा नास्तिकवादी इससे असहमत हैं। वास्तव में हेतुवादी सत्य का शोध करने निमित्त होते हैं, लेकिन स्वयं को हेतुवाद कहने वाले सत्य का शोध नहीं कर रहे हैं। अपने आप को मेधावी वर्णन करने वाले हेतुवाद जिनकी जानकारी उन्हें नहीं होती है उसे अंधविश्वास और मानसिक रोग कहकर करार दिया जाता है। इसलिए कह सकते हैं कि अपने आप को हेतुवाद कहने वाले नास्तिक होते हैं। दूसरे देश की नहीं बल्कि भारतवर्ष में ही " ध्रुवं जन्म मृतस्च " निरुपण निमित्त अनेक स्थानों में पुर्नजन्म हुए हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर दृढ़ता से निरुपण होने के बावजुद भी, कुछ हेतुवादी इसे एक प्रकार का मानसिक रोग बता रहे हैं, यह अवास्तविक नहीं है समझाने के लिए अनेक संदर्भ भी देखे जा सकते हैं। एक महान शास्त्रवेत्ता " इयान स्टिवेनसन " ने इसे एक तरफ साइन्स, तथा दूसरी तरफ विश्वास का अनुसंधान करते हुए शोध कर अंत में पुर्नजन्म को वैज्ञानिक सिद्धान्त कहा है। उन्होंनें अनेक शोध कर 1993 में पुर्नजन्म को सत्य बताया। हमने विज्ञान रुप से बिना किसी शोध के, मात्र ज्ञान का शोध कर, 1980 में " जनन-मरण का सिद्धान्त " को बर्हिगत किया। तत् पश्चात उस सिद्धान्त से अनुसंधान "मरण का रहस्य " और अब " पुर्नजन्म का रहस्य " को सूचित कर रहे हैं।

हमारे शोध में हमने हर छोटे से छोटे प्रश्न का उत्तर दिया है। अब भारतवर्ष में यहाँ कि परिस्थिीति में हो रहे पुर्नजन्मों का विवरण करते हुए प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं। लेबनान की घटनाएँ इस्लाम समाज से संबंधित थी, भारतवर्ष में हुई घटनाएँ इन्दू (हिन्दू) समाज से संबंधित हैं। उसमें से एक घटना के बारें में विवरण करते हैं।

भारतवर्ष में द्वापरयुग से ही ब्रम्हविद्याशास्त्र भगवद् गीता में पुर्नजन्म के विषय में शास्त्र पद्धति से कहा जाता रहा है। इसके बावजुद इसे कालयापन के लिए कथा के रुप में कहा जाने लगा, यह मानव जीवन के इतिहास में चल रहा पूर्णत; सत्य है जिसे दुनिया ने समझा नहीं। पुर्नजन्म को पूर्णत; असत्य कहने वाले अनेक लोग हैं। अभी कुछ समय पहले की बात है भारत से संबंधित "विक्रमराज चौहान " नाम का फोरनसिक साइन्टिस्ट मध्य प्रदेश राज्य में झांसी में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में "नेशनल कॉन्फरेन्स साइन्टिस्ट इन इंडिया "मीटिंग में उपस्थित हुए, उन्होंने पुर्नजन्म का समर्थन करते हुए, पुर्नजन्म की यादों को सूचित करता हुआ विवरण को एक " केसस्टडी " को उस समावेश को समर्पित किया। जो इस प्रकार से है। तरनजीत सिंग नाम का छ; वर्षीय बालक पंजाब राज्य में " आल्नमीयाना " नामक गाँव का निवासी था। वह बालक अपने माता-पिता को अपने गत जन्म के बारें में बताया करता था। वह गत जन्म में " चक्केला " नामक गाँव का निवासी था, 1992 सितम्बर 10 तारीख को विद्यालय से वापस लौटते हुए एक स्कूटर उससे तेजी से टकराया , और सिर पर चोट लगी, सिर पर चोट लगने की वजह से दूसरे ही दिन मृत्यु हो गई, गत जन्म में हमेशा उसे अपने रिश्तेदारों के पास ले जाने को कहता रहता था। तरनजीत सिंग दो वर्ष की उम्र से ही गत जन्म के बारें में अपनी तोतली भाषा में बातें करता रहता था।

तरनजीत सिंग बहुत छोटा था इस वजह उसकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उसे छ; वर्ष की उम्र में ही पुर्नजन्म की बातें अधिक याद आया करती थी। उसने अपने माता-पिता से उसके गत जन्म के गाँव ले जाने की जिद किया करता था। उसके पिता रंजीत सिंग ने उसे रोता देखकर चक्केला नामक गाँव ले गया। वहाँ उस बालक के गत जन्म के परिवार वाले उस गाँव को छोड़ कर दूसरे गाँव में बस गए थें। वहाँ से वे उस गाँव गए जहाँ वह परिवार रहता था। वहाँ उस बालक ने अपने माता-पिता की पहचान लिया। प्रस्तुत जन्म के पिता रंजीत सिंग ने उन्हें उस बच्चे के विषय में पूरी बातें बताई, लेकिन बहुत पहले ही उनका मृत बेटे का दोबारा जन्म होना, उनसे मिलने आना, उन लोगों को यकीन ही नहीं हो पा रहा था। उस बालक ने उन्हें अनेक प्रकार से पिछले जन्म में उनका बेटा होने का यकीन दिलाने की कोशिश कर रहा था, अन्त में तंग आकर कहा, पिछले जन्म में दुर्घटना के समय उसके जो पास पुस्तक थे उन पर खून के दाग लगे थे, तथा दुर्घटना होते समय उसके जेब में 150 रुपये थे, उन रुपयों को फलाँ दुकान में देना था।

उसकी बातों को सुनकर उस बालक की पिछले जन्म की माँ को यकीन हो गया कि वह बालक उन्हीं का बेटा है, और जोरों से रोती हुई स्कूल के किताबों पर लगे खून के सूखे दागों को दिखाने लगी। इस प्रकार से तरनजीत सिंग की पुर्नजन्म का वृतान्त कुछ ही दिनों में पूरे भारत वर्ष में फैल गयी। यह खबर फोरनसिक साइन्टिस्ट विक्रम सिंग चौहान तक पहुँची। पहले तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। किन्तु इस सच्चाई को दुनिया को सूचित करने निमित्त, उन्होंने स्वयं वास्तविकता को जानने का निर्णय लेकर तरनजीत सिंग से मिलने गए। उस बालक के बताए हुए गत जन्म के माता-पिता से मिल कर बातचीत की, फोरनसिक साइन्स के आधार पर तरनजीत सिंग से, पूर्व जन्म का वृतान्त में सच्चाई को जानने की ठानी। उस बच्चे के गत जन्म के स्कूली किताबें, जब वह विद्यार्थी था,

जाँचा। उस पुस्तक में लिखावट और इस जन्म में तरनजीत सिंग की लिखावट का मिलान करके देखा। हर मनुष्य की लिखावट एक जैसी नहीं होती है। किसी दो व्यक्तियों की लिखावट भी एक जैसी नहीं होती। इसे फोरोनिक्स साइन्स फोर्जरी हस्ताक्षरों की पहचान करती है। फोरेनिक्स साइन्टिस्ट विक्रमराज अपनी योग्यता के आधार पर जाना कि तरनजीत सिंग की गत जन्म की लिखावट तथा इस जन्म की लिखावट दोनों पूर्णतया एक ही जैसे हैं। यहाँ ध्यान देने वाला विषय यह है कि इस जन्म में तरनजीत सिंग ने एक गरीब परिवार में जन्म लिया इस वजह से उसे कभी भी विद्यालय जाकर पढ़ने का मौका नहीं मिला। यह बात विक्रमराज जानते नहीं थे। इसलिए उन्होंने तरनजीत सिंग को कागज पर कुछ भी लिखने को कहा, तरनजीत सिंग ने अँगरेजी में, पंजाबी में कई वाक्य लिख डाले। इससे सिद्ध होता है कि उसने गत जन्म में जो कुछ सीखा था इस जन्म में बताया।

तरनजीत सिंग के विषय में गौर करने वाला विषय यह है कि पुर्नजन्म हर मनुष्य का होता है। सृष्टि आदि में ही परमात्मा ने मनुष्यों की सृष्टि की। जब सृष्टि हुई नये मनुष्य ने जन्म लिया। इसलिए मनुष्य का जन्म सृष्टि आदि में ही हुआ था, उसके बाद पुर्नजन्म होते हैं पहले भी बताया गया। इस मुताबिक आपका हो, या मेरा हो, हर किसी का पुर्नजन्म ही हैं, परन्तु गत जन्म के बारें में आपको, या मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। पिछले जन्म की बातें याद न होने की वजह से हम सब को कुछ भी मालूम नहीं रहता है। गत जन्म के बारें में आवश्यकतानुसार आत्मा ही सूचित करती है। गत जन्म के बारें में सूचित करना ही आत्मा का तीसरा कार्य होता है, कहा गया। आत्मा सर्व स्वतंत्र होती है। वह किसी एक को पिछले जन्म की कुछ यादों को मात्र ही याद दिलवाकर, उनका यह पुर्नजन्म है सूचित करवाती है। इतना ही नहीं किसी न किसी को पुर्नजन्म की यादों के अलावा उस जन्म की आदत आना भी आत्मा द्वारा ही होता है। आदतों

के अलावा पिछले जन्म की पढ़ाई, लिखावट भी तरनजीत सिंग को आने का कारण आत्मा ही है। इस प्रकार से पूर्व जन्म की यादें जिन लोगों को याद आता है सारी यादें आत्मा द्वारा पहुँचती हैं। आत्मा, कुछ लोगों को पूर्व जन्म की याद आये बिना गत जन्म की विद्या मात्र ही पहुँचाती है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जिसे छोटी सी आयु में ही संगीत में प्रवीणता प्राप्त होती हैं। विभिन्न प्रकार के कलाओं को सीखने वालो में से कुछ ही लोगों में प्रवीणता नजर आती हैं। जिसे लोग पूर्व जन्म का संस्कार कहते हैं। गायक बालसुब्रहमण्यम ने कोई संगीत नहीं सीखा, फिर भी उन्हें प्रवीणता हासिल है। इसका कारण आत्मा है यह किसी को नहीं मालूम, गायक को भी मालूम नहीं है। इसी प्रकार से आत्मा द्वारा पिछले जन्म का कोई भी विषय अगले जन्म में सूचित होता है।

मानव शरीर में तीन भागों में परमात्मा, आत्मा, तथा जीवात्मा में से परमात्मा नाम, रुप, क्रिया रहित होता है पहले भी बता चुकें हैं। और जीवात्मा बिना कार्य को किये अनुभव मात्र ही करता है। जीवात्मा सभी तरह से अंधा होता है उसे न कुछ मालूम है न ही कुछ करता है। परन्तु जीवात्मा का आकार, और अनुभव करता है। आत्मा, शरीर में होते हुए भी कोई उसे पहचान नहीं पा रहा है। शरीर के अन्दर जीवात्मा, परमात्मा कोई कार्य नहीं करते हैं, परन्तु आत्मा एक क्षण भी विश्राम लिए बिना कार्य करती रहती है। कई लोग आध्यात्मिक मार्ग में प्रयाण कर रहे हैं, आत्मा शब्द उनके मुख से उच्चरित होता रहता है,फिर भी आत्मा की विशेषता से अनभिज्ञ हैं। आत्मा को अनेक लोग परमात्मा तथा जीवात्मा से मिलान करते रहते हैं, किन्तु आत्मा शरीर में सर्वदा जीवात्मा के साथ रहकर विशेष कार्याचरण करवाती है, किसी ने नहीं जाना। आत्मा के कुल तीन प्रकार के कार्याचरणों को भी किसी ने नहीं जाना । अभी हम आत्मा के तीसरे कार्याचरण के बारें में बातें करेंगें। अब तक आत्मा का तीसरा कार्य पुर्नजन्म के विषयों को मनुष्य द्वारा बर्हिगत होने की जानकारी

किया गया। आत्मा बाहरी व्यक्तियों से, बाह्य प्रदेशों में गत जन्म के संबंधों को सूचित करने का मतलब पुर्नजन्म होते हैं। आत्मा अपने तीसरा कार्य में गत जन्म के व्यक्तियों से, प्रदेशों से संबंधों के बारें में बिना सूचित किये, केवल शरीर के अंर्तभाग में विद्या, आदतें, प्रवीणता, भाषा, तथा मेधा शक्ति को ही सूचित करता है, मनुष्य उन विषयों के आधार पर भी पुर्नजन्म होने को ग्रहण नहीं कर पा रहा है। इसके अलावा शरीर पर निशानों के आधार पर जाना जा सकता है कि वर्तमान में उनका यह पुर्नजन्म है लेकिन कोई जानने की कोशिश ही नहीं कर रहा है। इससे पहले भी जन्म हुए थें, मनुष्य जानें, समझे आत्मा कभी-कभी किसी एक में गत जन्म के आँतरिक यादों को, या बर्हिगत यादों का आभाष करवाती है। कुछ लोगों के शरीर पर गत जन्म के निशान दूसरे जन्म में भी आत्मा द्वारा प्रत्यक्ष होता है। ऐसी ही एक घटना का विवरण करते हैं।

इंगलैंड में " हेक्सहेम " शहर में जॉन पोल्लॉक तथा फ्लोरेन्स दंपति दो बच्चियों के साथ रहते थें। बड़ी बेटी का नाम जुन्ना, दूसरी बेटी का नाम जाक्विन था, बड़ी बेटी जुन्ना की उम्र 11 वर्ष, छोटी बेटी जाक्विन 6 वर्ष की थी। खुशमय पोल्लॉक परिवार एकाएक विषाद में डुब गया। 1957 वर्ष में, मई 5 वीं तारीख को दोनों लड़कियाँ विद्यालय गयी, लेकिन वापस घर नहीं लौटीं। एक सड़क दुर्घटना में उन दोनों की मृत्यु हो गई। पोल्लॉक परिवार उस विषाद से बाहर निकल नहीं पा रहा था। करीब-करीब डेढ़ वर्ष के पश्चात् 1958, अक्टूबर चौथी तारीख को फ्लोरेन्स ने जुड़वाँ बच्चे को जन्म दिया। दोनों बच्चे लड़कियाँ थी, उन दोनों में एक विचित्र बात नजर आ रही थी। दोनों जुड़वाँ बच्चियों में छोटी बच्ची के माथे पर एक निशान(चोट) था। जॉन फ्लोरेन्स परिवार में मृत दोनों लड़कियों में छोटी बेटी जाक्विलिन के माथे पर भी चोट का निशान था। एकबार छोटी बेटी जाक्विन साइकिल चलाते हुए गिर पड़ी और माथे पर चोट लगी। नवजात बच्ची के माथे पर उसी स्थान पर वही निशान पाया

गया। उस निशान को उसके माता-पिता पहचान न सकें। उस निशान के पीछे मर्म को जानने की कोशिश भी नहीं की।

जब जुड़वाँ बच्चों की उम्र चार महीनों की थी पोल्लॉक परिवार हेक्सेहेम नगर को छोड़कर वहाँ से 40 किलोमीटर दूर " वैटकिबे " नामक गाँव में बस गए। चार सालों के बाद एक दिन पोल्लॉक परिवार दोनों बच्चियों के साथ हेक्सेहेम नगर वापस लौट आए। आते ही दोनों बच्चियों ने अपने गत जन्म के घर को पहचान लिया। दोनों बच्चियों ने अपने कमरों को, उस जगह को जहाँ वें खेलते थे, तथा अपने विद्यालय को भी पहचाना। इससे उस दंपति को अहसास हुआ कि उनके दोनों बच्चियाँ उनके गत जन्म के दोनों बच्चियाँ ही हैं। यहाँ इस घटना में छोटी बेटी को गत जन्म में लगे चोट के निशान इस जन्म में भी पाये गए। ऐसी ही एक और घटना के बारें में विवरण करते हैं देखिए।

स्टीवेनसन नाम का अमेरिकी शास्त्रवेत्ता ने भारतवर्ष में एक बालक के बारें में परिशोध कर रहे थे। उनके परिशीलन के अंतर्गत वह बालक गत जन्म में सैनिक था। किसी संदर्भ में शत्रुओं ने उन्हे शॉटगन से बहुत ही समीप से शूट किया। गोली छाती पर लगने के कारण मृत्यु हो गई। वह व्यक्ति मरने के बाद दोबारा महाराम नामक व्यक्ति के रुप में जन्म लिया। आश्चर्य- जनक बात यह हुई कि बालक महाराम की छाती पर गोली लगने का निशान पाया गया। बालक स्टीवेनसन महाराम के वृतांत की गहराई से परिशीलन करने पर सिद्ध हुआ कि गत जन्म के सारे विषय सत्य हैं और उसका पुर्नजन्म हुआ। इसी प्रकार से स्टीवेनसन थायलैंड़ देश में एक बालक से जिसे अपने पूर्व जन्म की बातें याद आती थी उससे मिले, उसके पिछले जन्म की यादों का परिशीलन किया। उस बालक की हत्या उसके चाचा द्वारा चाकू भोंकने से हुई। स्टीवेनसन ने गौर किया कि दूसरे जन्म में उसी स्थान पर घाव के आकार का तिल का निशान पाया

गया। इस प्रकार से पुर्नजन्म का शोधक स्टीवेन ने अनेक लोगों में गत जन्म के निशान किसी न किसी रुप में आना देखा। किसी एक शरीर पर किसी भी कारण का निशान उस कारण को सूचित करते हुए प्रतीक के रुप में, बाद के जन्मों में शरीर के ऊपर कई जन्मों तक या अनेकों जन्मों तक आने की व्यवस्था आत्मा द्वारा होती है। हर एक के शरीर पर जन्म से ही कोई न कोई निशान होता है। तिल या निशान आत्मा द्वारा सूचित जीवात्मा का गत जन्म का प्रतीक है, तथा यह शरीर भी परमात्मा का स्थान सूचित करता हुआ प्रतीक है। यह तिल एक तरह से गत जन्म में प्राकृतिक द्वारा बना शरीर की याद दिलाता है, तथा परमात्मा शरीर के अन्दर वास करते है,सूचित करता है।

पुर्नजन्म में एक मुख्य विषय का परिशीलन करेंगें। जो इस प्रकार है। एक व्यक्ति मरणोंपरांत कुछ समय के पश्चात् दोबारा जन्म लेना, कुछ लोगों का पुर्नजन्म की यादों से ज्ञात होता हैं। मृत्यु के पश्चात् कितने समय के बाद उन्होंनें दोबारा लिया ? और कुछ समय के पश्-चात् ही जन्म लेने का क्या कारण था ? मृत्यु के पश्चात् दोबारा जन्म लेने का समय क्या सब के लिए एक ही होता हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर देखें तो आसक्ति से भरा ज्ञान की जानकारी होगी। अब तक हम लोगों को हुई जानकारी में कुछ लोगों का पुर्नजन्म के विषय में उनके दोबारा जन्म लेने की समय सीमा नहीं बताई गयी। किसी ने साल भर बाद जन्म लिया,तो किसी ने पाँच साल बाद जन्म लिया। कोई एक समय सीमा नहीं थी, विभिन्न लोगों ने विभिन्न समय सीमा में जन्म लिया। अब हम समय सीमा पर अलग-अलग समय पर दोबारा जन्म लेने वालों के बारें में चर्चा करेंगें।

आप लोगों को ज्ञात होगा प्रख्यात अमेरिकन पारा सैकॉलजिस्ट स्टीवेन का साथी प्रोफेसर H.N. बेनर्जी भारतवर्ष के पहले पारा सैकॉलजिस्ट थे। H.N. बैनर्जी ने स्वयं एक बालिका के पुर्नजन्म की स्मृतियों का वृतांत

का परिशोधन कर दुनिया को सूचित किया। मध्यप्रदेश राज्य में छत्रपुर नामक शहर में एक पारंपरिक तथा संपन्न ब्राम्हण परिवार में स्वर्णलता नाम की एक बच्ची ने 1948 में जन्म लिया। उसकी उम्र जब तीन वर्ष थी उसके पिता उसे साथ लेकर वहाँ से 160 किलोमीटर दूर काट्ने शहर गए। स्वर्णलता मिश्रा काट्ने नगरपांत से एक ओर जाने वाली रास्ते को दिखलाते हुए, उस रास्ते से जाने से " जारुकुटिया " गाँव आयेगा कहा। बेटी की बातों को सुनकर पिता आश्चर्यचकित रह गया तीन वर्ष की बच्ची जो कभी भी 160 किलोमीटर दूर आयी नहीं, दूसरे रास्ते से जाने से दूसरा गाँव पड़ेगा बच्ची को कैसे मालूम पड़ा सोचकर आश्चर्य में पड़ गया।

इससे पहले कि पिता कुछ बोल पाता स्वर्णलता अपने पिता से कहने लगी वह गत जन्म में जारुकुटिया गाँव में रहती थी, उसका नाम बिया पाठक था, उसका पति और दो बच्चे भी थें, उसके पति का नाम चिन्तामणि पान्डे, तथा मेरे गले में तकलीफ की वजह से जबलपूर में डॉक्टर S.C. भरत ने इलाज की, परन्तु बीमारी बढ़ जाने की वजह से 1939 में मेरी मृत्यु हो गई अपनी तोतली भाषा में बताया। उसकी बातों को आसक्ति से सुनते हुए उसके पिता ने बच्ची की बातों की सच्चाई जानने के उद्देश्य से जारुकुटिया गए। स्वर्णलता के बताये अनुसार उस बच्ची के गत जन्म के पति चिन्तामणि पान्डें से मिलकर बेटी स्वर्णलता मिश्रा के पूर्व जन्म के यादों के बारें में बताया। सारी बातों को सुनकर चिन्तामणि का कहना था उनकी पत्नी बिया पाठक की मृत्यु 1939 में हुई थी। 12 वर्ष पूर्व मृत्यु को प्राप्त उसकी पत्नी ने, दोबारा जन्म लिया उन्हे विश्वास नहीं हो रहा था। यह खबर पूरे मध्यप्रदेश में फैल गई। अन्तत; प्रख्यात भारतीय सैकॉलजिस्ट H.N.बैनर्जी तक यह बात पहुँची। H.N.बैनर्जी ने स्वर्णलता के पूर्व जन्म के वृतान्त की जान- कारी करने के लिए पहले स्वर्णलता से मिलने गए, स्वर्णलता के गत जन्म में पूर्व जन्म के परिवार जनों के बारें में जानकारी की, तथा गत जन्म के घर के बारें में जानकारी

करने के पश्चात् जारुकुटिया गाँव गए। काफी जाँच-पड़ताल करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि स्वर्णलता ने उनसे जो भी बताया सारी बातें सच थीं, तथा इस जन्म की स्वर्णलता ही गत जन्म में बिया पाठक थी। समय बीतता गया, स्वर्णलता दस वर्ष की हो गई। पूर्व जन्म की यादों से उसका मन अशान्त होने लगा। और उसी समय डॉक्टर स्टीवेनसन का भारत आना हुआ।

स्टीवेनसन अपने मित्र बैनर्जी से स्वर्णलता के पुर्नजन्म के बारें में जानकर बहुत उत्तेजित हुए। और इस विषय से आसक्त होकर स्टीवेनसन ने स्वर्णलता के गत जन्म के पति चिन्तामणि को साथ लेकर स्वर्णलता के गाँव छत्रपुर के लिए रवाना हुए। वहाँ वे स्वर्णलता से मिले। स्वर्णलता अपने गत जन्म के पति को देखते ही शरमा गयी। स्टीवेनसन ने पान्डें से स्वर्णलता का परिचय करवाया। स्वर्णलता ने अपने गत जन्म की यादें बताई, परन्तु पान्डें ने उसे अपनी पत्नी मानने से इन्कार किया। अंत में स्वर्णलता ने पान्डें से एक विषय के बारें में पुछा "मैने अपनी अलमारी में कपडों के नीचे 1200 रुपये रखे थे फलाँ दिन आपने चुराये थे।" इतना सुनते ही पान्डें को झटका लगा। वह बात सिर्फ उस दंपति को ही मालूम थी, दस वर्ष की बच्ची को कैसे मालूम हुआ आश्चर्यचकित रह गया। अंतत; पान्डें ने स्वीकार किया कि यह बच्ची ही उसके गत में जन्म की पत्नी थी। इस प्रकार से स्वर्णलता का पुर्नजन्म हुआ डॉक्टर स्टीवेनसन के सामने साबित हुआ। स्वर्णलता का पुर्नजन्म का वृतान्त 1950 से लेकर 1960 के मध्यकाल में पूरी दुनिया में सनसनी भरी थी।

मध्यप्रदेश में जन्मी स्वर्णलता मरने तथा जन्म लेने के मध्य का अंतराल नौ वर्ष था। बिया पाठक की मृत्यु 1939 में हुई, 1948 में स्वर्णलता के रुप जन्मी। एक शरीर से दूसरे शरीर को धारण करने के लिए नौ वर्षों का समय लगा। इन नौ वर्षों में वह कहाँ रही होगी? बहुतों के मन में यह

प्रश्न आया होगा। बिया पाठक की मृत्यु होना, स्वर्णलता के रुप में जन्म लेने का मध्य का समय हर किसी का एक जैसा नहीं होता हैं। यदि पुर्नजन्म के बारें में परिशीलन कर देखा जाय तो किसी के लिए एक वर्ष, किसी के लिए दो वर्ष, या तीन वर्ष का समय भी हो सकता है। हर व्यक्ति की अलग-अलग काल निर्णीत रहती है। एक और उदाहरण का विवरण करेंगें।

पहली भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों में कल्पना चावला का नाम सबने सुना होगा। वह भारतीय महिला पंजाब की कल्पना चावला साहसी, प्रतिभाशाली, अमेरिकी अंतरिक्ष परिशोध संस्था NASA (नासा) में कार्य करती थी। अंतरिक्ष में प्रयोग करने वाले कोलम्बिया स्पेसशिप में अन्य अंतरिक्ष यात्रियों के साथ अंतरिक्ष यात्रा में परिशोधिका के रुप में भाग लेने के लिए अंतरिक्ष में प्रयाण कर रही थी। आकाश में कुछ समय परिशोध करने के पश्चात् कोलम्बिया वापस भूमि की ओर प्रयाण करना शुरु किया। 2003 में फरवरी 1 तारीख को थोड़ी ही देर में यानि 16 मिनटों में भूमि पर उतर रही थी कि अनहोनी घटना घट गई। दुंभाग्यवश आकाश में रहते कोलम्बिया स्पेसशिप के अन्दर भूमि का वातावरण प्रवेश कर गया। और कोलम्बिया स्पेसशिप फट गया। उसमें प्रयाण कर रहें सारे अंतरिक्ष यात्री मारे गए। भारतीय व्योमगामी कल्पना चावला भी उस भयंकर दुर्घटना में मारी गई। कुछ ही दिनों में उसका दोबारा जन्म हुआ।

कल्पना चावला वापस जन्म लेने का समाचार (S.B.N 7) चैनल में तथा इंडिया टुडे पत्रिका, में प्रसार कर दुनिया को जानकारी दी गई। अब विवरण देखें तो, भारत के उत्तर प्रदेश में बुल्लन्दषहर नामक गाँव में एक साधारण खेतों में कुली का काम करने वाला राजकुमार नाम का व्यक्ति के परिवार में एक बेटी का जन्म हुआ। 23-3-2003 को उपासना नाम से उस परिवार में कल्पना चावला का जन्म हुआ। उपासना (कल्पना

चावला) चार वर्ष की आयु से ही बातें करने लगी। उपासना अपने को गत जन्म की अंतरिक्ष परिशोधिका कल्पना चावला बताती थी, उसके पिता का नाम बनारसी दास, चार साल पहले अपने साथियों अंतरिक्ष परिशोधकों के साथ एक विमान द्वारा आकाश से नीचे उतरते समय, विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई कहा।

गत जन्म की सारी बातें बताने वाली उपासना (कल्पना चावला) का नाम पूरा उत्तरप्रदेश में धीरे-धीरे जान गया। उत्तरप्रदेश में एत्वा जिला " पठा " नामक गाँव में उपासना के पिता राजकुमार कुली का काम करते हुए जीवन यापन करते थे। उपासना का इन्टरव्यूह लेने विश्व स्थर के मीडिया प्रतिनिधि गए, उन लोगों से कहा, हमारा अंतरिक्षयान जब वापस लौट रहा था आकाश में संचरण कर रहा एक बड़ा बर्फ का गोला उससे टकराया, और अंतरिक्षयान फट गया, सारे लोग मारे गए। 2003, फरवरी 1 तारीख को नासाकेन्द्र के लोगों ने अंतरिक्षयान के चारों ओर लगी बाहरी परत निकल जाने की वजह से उस यान में भूमि का वातावरण अन्दर प्रवेश करने के कारण गर्मी से फट गया कहा। नासावालों ने जो भी कहा था वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, आकाश में धरती से 70 किलोमीटर दूर में ही बर्फ का गोला से अंतरिक्षयान टकराने की वजह से दुर्घटना हुई प्रत्यक्ष साक्षी कल्पना चावला कहने की वजह से असली वजह मालूम पड़ी।

यहाँ गौर करनेवाला विषय यह है कि स्वर्णलतामिश्रा का पुर्नजन्म का विषय में स्वर्णलता की मृत्यु गत जन्म में 1939 में हुई तथा 1948 में पैदा हुई। स्वर्णलता को दोबारा पैदा होने में 9 वर्षों का विलंब हुआ, कल्पना चावला को उपासना के रुप में पैदा होने के लिए 1 माह 22 दिन लगे। इस प्रकार से पुर्नजन्म के विषय में मरने के बाद दोबारा पैदा होने का मध्य का समय कई महीनें, कई वर्ष भी हो सकते हैं। 29 वर्षीय

अमेरिकन नाविफैटर पायलट जेम्सहासन ने दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान से युद्ध कर रहा था, 1945 मार्च 3 तारीख को Pacific सागर के ऊ -पर से उड़ता हुआ जहाज को जापान के अर्सेरी विभाग ने मार गिराया। इससे पायलट और जहाज दोनों टुकड़ें-टुकड़ें होकर सागर में समा गए। 1998 में जेम्स हासन ने लेनिन्जर के रुप में पैदा हुआ। हासन का मरना लेनिन्जर का पैदा होना, मध्य का समय 53 वर्ष था। कल्पना चावला ने केवल 52 दिनों में ही उपासना के रुप में पैदा हुई, स्वर्णलता को 9 वर्ष लगे, लेनिन्जर केमो को 53 वर्ष लगे, जबकि लेबनान की हासन ने मरने के पश्चात् 10 दिनों में ही सुजन्ने गानेम के रुप में पैदा हुई इस घटना का जिक्र हम पहले कर चुके हैं। दूसरा जन्म लेने से पहले उन लोगों के साथ क्या हुआ था? कहाँ थें? यदि गहराई से योचना की जाय तो समाधान इस प्रकार से हैं।

मानव शरीर दो भागों में विभाजित हैं, स्थूलभाग तथा सूक्ष्मभाग पहले भी इसके बारें में बताया गया। इससे संबंधित विषय "**मरण का रहस्य** " तथा " **जनन-मरण का सिद्धान्त** " नामक ग्रंथों में जानकारी दी गयी है। उस जानकारी के अनुसार यदि मनुष्य का स्थूल रुप में मृत्यु हो जाय तो वह सूक्ष्म रुप में जीवित रहता है। यानि कि उस व्यक्ति की पूर्ण मृत्यु नहीं हुई, उसे पूर्ण मृत्यु प्राप्त करने के लिए कुछ समय लगता है, यह भी सब जानते हैं। इतना ही नहीं किसी मनुष्य की मृत्यु होने के बावजुद भी, उसका स्थूल रुप से मृत्यु होने के बावजुद भी, यदि वह मृत्यु तात्कालिक मृत्यु होती तो उसका वापस जीवित होना संभव हो सकता है। ऐसे अनेक हैं जिन्होंने मरने के बाद तीन, चार दिनों में ही वापस जीवित हुए हैं। एक मनुष्य स्थूलशरीर तथा सूक्ष्मशरीर दोनों को छोड़कर चला जाय, तो वह पूर्ण मरण होता है। पूर्ण मरण प्राप्त व्यक्ति क्षण भर भी देर किये बिना दोबारा पैदा होता है।। यह विधान के बारें में अनेक लोगों को शायद जानकारी नहीं होगी। मरण तीन प्रकार के होते पहैं, पहला कालमरण,

दूसरा अकालमरण, तीसरा तात्कालिकमरण। स्थूल शरीर मर कर सूक्ष्मशरीर रह जाय तो वह अकालमरण होगा। स्थूल, सूक्ष्म दोनों न हो तो वह पूर्ण मरण होगा। जीवात्मा शरीर में रहने से आत्मा भी साथ रहती है, आत्मा अपने कार्य को रोकते ही श्वास भी रुक जाती है। लेकिन वह मरण नहीं होता है। आत्मा जब चाहे वह व्यक्ति कभी भी उठकर चल सकता है।

स्वर्णलता हो, या जेम्सलेनिन्जर हो, या कल्पना चावला हो, या हासन हो, पहले किसी ने भी पूर्ण मरण प्राप्त नहीं किया। उनकी मृत्यु होने के बावजुद भी स्थूल शरीर की मौत हुई थी सूक्ष्मशरीर रह जाने की वजह से उनकी अकाल मृत्यु हुई। इस वजह उन लोगों का पूर्ण मरण प्राप्त करने के लिए उनके अपने कर्मानुसार कई दिन, कई महीनें, या कई वर्ष लगें। इस विधान के अनुसार स्वर्णलता मरने के बाद 9 वर्ष, लेनिन्जर को 53 वर्ष, कल्पना चावला को 52 दिन, हासन को 10 दिनों के बाद, पूर्ण मरण को प्राप्त कर, दोबारा पैदा हुए थें। तब तक उन्हें पहले जन्म में रहना ही माना जायेगा।

अपने को आध्यात्मिकवेत्ता मानने वाले कुछ लोगों का मानना हैं मनुष्य मरने के बाद दोबारा पैदा नहीं होता है, मनुष्य अपने पापों को भोगने के लिए नरक में, तथा पुण्यों को स्वर्ग में जाकर भोगता है, उसके बाद ब्रम्हा जी के पास जाकर, नया भाग्य लिखवाकर वापस पैदा होता है, इस वजह से मनुष्य को मरने के बाद दोबारा पैदा होने में विलंब होता है। यह सुनने में उचित लगता है परन्तु इसमें न ही सत्यता है, न ही शास्त्रबद्धता है। स्वर्ग और नरक मनुष्य के जीवन में ही होता है, मरने के बाद नहीं। कई आध्यात्मिकवेत्ताओं को यहीं पर गलतफहमी होती हैं। यह एक इन्दूमत(हिन्दूधर्म) में ही नहीं बल्कि अन्य मतों(धर्मों) के लोग भी गलत रास्ते पर चल पड़े हैं। इस विषय पर हर व्यक्ति को योचना करने की आवश्यकता है। क्योंकि पिछले जन्म के यादों के बारें में अनेक लोगों ने

बताया, किन्तु स्वर्ग, नरक के बारें में किसी कुछ नहीं कहा। कल्पना चावला, स्वर्णलता, तथा जेम्सलेनिन्जर इन तीनों के मृत्यु के पश्चात् दोबारा जन्म लेने में लेनिन्जर 53 वर्षों के बाद, स्वर्णलता ने 9 वर्षों के बाद, कल्पना चावला ने 22 दिनों के बाद, तथा हासन ने केवल 10 दिनों में दोबारा पैदा हुए हैं, परन्तु स्वर्ग तथा नरक में जाने की बात किसी ने भी नहीं कही। किसी भी विषय में अंधा विश्वास किये बिना थोड़ी योचना की जाय तो सत्य ज्ञात हो जायेगा। मरण के बाद स्वर्ग और नरक में जाना असत्य हैं कहने के कई आधार हैं। स्वर्ग और नरक मनुष्य अपने जीवन में ही भोगता है, इसे साबित करने के लिए कई आधार हैं।

उस समय मेरी उम्र दस या ग्यारह वर्ष रही होगी एक घटना मुझे अच्छी तरह से याद है जो इस प्रकार से है, एक व्यक्ति मानसिकरुप से पूरी तरह से स्वस्थ था, किन्तु अमावस्या और पूर्णिमा के दिन उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता था। उस दिन घर से बाहर बाजार में चिल्लाता हुआ घुमता रहता था। रिश्तेदार उसे घर में जबरदस्ती रोकने की कोशिश करते, पर वह वे दो दिन घर पर टिकता नहीं था। जब वह जोरों से चिल्लाता हुआ घुमता रहता उसके मुख से लगातार लार टपकती रहती थी। एक दिन उस व्यक्ति की अनारोग्य से अमावस्या के ही दिन मौत हो गई। जिस समय उस व्यक्ति की मौत हुई उसी वक्त उसी के मोहल्ले में एक बच्ची पैदा हुई। परन्तु उस बच्ची में आधे घंटे तक प्राण न आया। उस शिशु की गर्भ में ही मौत हो गयी होगी मानकर उस मादा शिशु की माँ ने शिशु को दफनाने के लिए घर से बाहर ले आयी। उसी वक्त उस व्यक्ति (मानसिक संतुलन बिगड़ा) की मौत हो गयी। उसके मरते ही उस शिशु में प्राण आया और रोना शुरु किया। बच्ची जीवित हो गयी घर के भीतर ले गए। इस पूरी घटना को मैने प्रत्यक्ष देखा। वह बच्ची चार वर्ष की हुई, बातें भी करने लगी। वह कहने लगी गत जन्म में मैं इसी मोहल्ले में रहता था, मेरा मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ था, इस मकान के पास

आता-जाता था, तथा गत जन्म में परिवारवालों के नाम भी बताया। बच्ची का उस तरह से बताना उसके माता-पिता को पसन्द नहीं आया। यदि बच्ची के गत जन्म के बारें सबने जान लिया तो उनका और उनकी बच्ची की बेइज्जती हो जायेगी इस वजह से उस विषय को बाहर किसी को मालूम पड़ने नहीं दिया। उसके घर के पड़ोस में हमारा मकान था इसलिए मुझे और मेरे परिवार वालों को इस विषय में मालूम था। चार-पाँच महीनों तक उस बच्ची को कभी-कभी गत जन्म की बातें याद आया करती थी। छ; महीनों के बाद यादें आनी बंद हो गयी।उस बच्ची के परिवारवालों ने मान लिया कि वह पागल व्यक्ति मर कर भूत बन बच्ची के अन्दर प्रवेश कर बोल रहा था। किन्तु किसी ने सोचा नहीं कि उस व्यक्ति ने पुर्नजन्म लिया है, असल में उस वक्त मैंने भी माना कि उस बच्ची के अन्दर भूत का ही प्रवेश होगा, किन्तु आत्मज्ञान जानने के बाद जाना कि उसमें किसी भूत ने प्रवेश नहीं किया बल्कि उसका पुर्नजन्म हुआ था। इन बातों को बताने का एक कारण है। मानसिक रुप से असन्तुलन व्यक्ति की मौत के तुरन्त बाद उसी मोहल्ले में शिशु के रुप में पैदा होना, पुर्नजन्म की याद दिलाने के लिए ही इस घटना के बारें में मैंने बताया। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य मरने के बाद तुरन्त दोबारा जन्म लेता है।

भगवद् गीता में भगवान ने कहा, जिस प्रकार फटे हुए वस्त्र को छोड़कर नया वस्त्र धारण किया जाता है, उसी तरह जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर को धारण करता है।वहाँ भगवान ने जो कहा वह शास्त्रबद्ध तथा धर्मबद्ध था। भगवान के कहे अनुसार पुर्नजन्म के विषय में शारीरिक धर्म निरुपित होते हैं। पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर का धारण करना शत प्रतिशत पुर्नजन्म होना सिद्ध करता है। गीता में अक्षरपरब्रम्ह योग में पाँचवाँ और छठवाँ श्लोक में कहा गया " जो व्यक्ति मरणकाल में मेरा स्मरण करता हुआ शरीर छोड़ता है वह मुझमें लीन हो जाता है। जिस-जिस भी भाव का चिन्तन करता हुआ शरीर छोड़ता है, उस भाव से

भावित हुआ मनुष्य सदा उस स्मरण किये हुए भाव को ही प्राप्त होता है, अन्य को नहीं। परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर छोड़ता है, वह परमात्मा को प्राप्त करता है। प्राकृतिक विषयों का स्मरण करता हुआ शरीर छोड़ता है, वह वापस प्रपंच में ही जन्म लेता है।" इस प्रकार से भगवद् गीता में कई जगहों पर पुर्नजन्म के बारें में भगवान ने वर्णन किया है।

ब्रम्हविद्या शास्त्र भगवद् गीता के अनुसार एक जीवात्मा शरीर छोड़ने के पश्चात् उसी क्षण जन्म लेता है, जन्म लेने के बाद पाप-पुन्यों को सुख और दुख के रुप में जीवन में भोगता रहता है। गीता भारतवर्ष में बताया गया , बाइबिल, कुरान को बतलाने वाले देशों में, तथा पूरे प्रपंच के देशों में गीता के अनुसार पुर्नजन्म का होना प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा साबित हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि गीता का ज्ञान पूरे प्रपंच पर लागू होता है। प्रत्यक्ष सत्यता के अनुसार बाइबिल में, कुरान में, पुर्नजन्म का न होना कहीं नहीं कहा गया, यदि कहा होता तो सारी घटनाएँ परमात्मा के विरुद्ध घटित होना नामुमकिन होता, घटना के प्रत्यक्ष प्रमाणों के अनुसार, सारे धर्मग्रंथों में बतलाने वाला परमात्मा एक ही है, प्रवक्ता अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु ज्ञान एक ही है, पुर्नजन्म सब मतों(धर्मो) के लोगों ने लिया, इससे सिद्ध होता है कि पुर्नजन्म होते हैं। पुर्नजन्म हैं किसी भी धर्म के विरोध में नहीं है ऐसा कहने के अनेक दृष्टान्त हैं, सभी धर्मों में पुर्नजन्म हुए, उसमें से कुछ लोगों को गत जन्म की याद आना, इन सब पर विचार करने पर उसकी सत्यता साबित होती है। एक मुस्लिम ने दूसरे मुस्लिम घर में जन्म लिया, एक ईसाई ने ईसाईधर्म से संबंधित ईसाई घर में जन्म लिया, एक इन्दू (हिन्दू)ने दूसरे इन्दू के घर जन्म लिया, निरुपण हुआ है। इन्दूओं ने मुस्लिम के घर तथा ईसाई के घर जन्म लेना भी सिद्ध हुआ हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि मत(धर्म) केवल जीवित व्यक्तियों के लिए हैं, मृत व्यक्तियों के लिए नहीं, कोई भी व्यक्ति किसी भी मत(धर्म)

में जन्म ले सकता है,उसने जिस परिवार में जन्म लिया वह परिवार जिस मत(धर्म) से संबंध रखता हो वह व्यक्ति भी उसी मत(धर्म) का माना जाता रहा है। परमत द्वेष की भावना जिस व्यक्ति के अन्दर समाया रहता है वह व्यक्ति जिस मत (धर्म)में भी जन्म ले अपने मत(धर्म) को महान कहकर, परमत से द्वेष करता हैं। उदाहरण के लिए कोई हिन्दू ईसाईमत से द्वेष रखता हो, यदि उसका पुर्नजन्म ईसाईमत में होता है तो वह ईसाई मत को महान बताते हुए, हिन्दूमत से द्वेष रखता है। गत जन्म में हिन्दूमत को महान कहनेवाला ईसाईमत का दूषण करता है, वह मृत्यु के पश्चात्, दोबारा ईसाईमत में जन्म लेकर हिन्दूत्व का दूषण करने का कारण, उसके अन्दर परमत द्वेष गुण का प्रभाव है। इससे सिद्ध होता है कि **मत (धर्म) मनुष्य के जीवन की सीमा निर्धारित करती है**, **मनुष्य के जन्मों की नहीं।** इसलिए जीवन की परिमिति मत(धर्म) को त्यागकर, सभी जन्मों से संबंधित परमात्मा को जानने की कोशिश करें सूचित कर रहे हैं।

पुर्नजन्म के बारें में अबतक काफी जानकारी हो चुकी। यदि कोई अपनी पुर्नजन्म के बारें में जानना चाहे तो उसे उसकी आत्मा ही जानकारी दे सकती है, जीवात्मा के कहने से, या मन के चाहने से आत्मा नहीं करती है। शरीर में आत्मा स्वतंत्र होती है। आत्मा अपनी इच्छा से सूचित करने पर ही गत जन्म का विवरण की जानकारी हो पायेगी। जीवात्मा, आत्मा से प्रार्थना करने पर भी आत्मा सूचित नहीं करेगी। तू अपना शरीर की आत्मा की चाहे जितनी पूजा कर माँगो, चाहे प्रणाम कर माँगो आत्मा, जीवात्मा का कहना नहीं मानेगी, तेरी आत्मा को तेरे पिछले जन्मों के बारें में अच्छी तरह से मालूम होने के बावजुद तेरे पिछले जन्म के बारें में सूचित नहीं करेगी। आत्मा जब तेरा कहना ही नहीं मानती है, तो किसी दूसरे का कहना कैसे मानेगी? आपका पड़ोसी (आत्मा), कोई किसी भी देश का राजा का, या विश्व का प्रमुख का, किसी का कहना नहीं मानती है। कोई भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का गत जन्म के बारें में नहीं जान सकता है।

लेकिन अब कुछ लोग एक प्रश्न पुछ सकते हैं। जो इस प्रकार से है। आजकल कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टरों ने पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरपी के विधान से कुछ लोगों के गत जन्म के बारें में उन्हीं के द्वारा कहलवा रहे हैं, इसके बारें में आपका का क्या कहना है। इसका समाधान इस प्रकार से है। इस बीच " Maa T.V.चैनल में M.D. शिक्षा प्राप्त डॉक्टर ने एक व्यक्ति से उसके गत जन्म के बारें में कहलवाना मैंने देखा। उस डॉक्टर का कहना था पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी द्वारा सामने वाले व्यक्ति के पुर्नजन्म को उन्ही के द्वारा कहलवाया जा सकता है। वे एक उच्च शिक्षा प्राप्त M.D. डॉक्टर थे इसलिए उनकी बातों पर कोई भी आसानी से विश्वास कर सकता था। इसे एक रोग निवारण हेतु वैद्य विधान थेरेपी कहा जाता है। मनुष्य को अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं। उसका निवारण हेतु अनेक मेडिकल थेरेपी भी होते हैं। गत जन्म के विषयों को कहलवाना भी एक विधान है, इसलिए डॉक्टरों ने इसे थेरेपी कहा। हैदराबाद में पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी करने वाले दो, तीन डॉक्टर हैं। एक बार मेरे मन में एक जिज्ञासा जागी क्यों न उस डॉक्टर के पास जाकर इस थेरेपी के बारें में जानकारी की जाए। तुरन्त उन्हे फोन द्वारा सम्पर्क करते हुए मैंने पुछा - डॉक्टर, मुझे नींद न आने की समस्या है, क्या आप अपनी जानकारी की पद्धति से इस समस्या को दूर कर सकते है। जवाब में डॉक्टर ने कहा- क्यों नहीं जरुर इलाज कर सकता हूँ, परन्तु मेरी फीज कितनी है आपको मालूम ही होगा। मैंने पुछा, आप बताइए मुझे कैसे मालूम होगा। उन्होंने पाँच हजार रुपये कहा। दूसरे दिन हम पाँच हजार रुपये लेकर गए, और वहाँ वे किस विधान से समस्या सुलझा रहे है गौर कर रहे थे। उन्होंने मुझे साधारण व्यक्ति समझकर कहा आप लगातार एक सप्ताह आते रहें तो आपकी यह समस्या दूर हो जायेगी। वहाँ मैं सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक रहा। हमारे रहते ही अनेक लोग अनेकों समस्याएँ लेकर आ रहे थें। हमने देखा डॉक्टर हमारे समक्ष ही एक व्यक्ति से उसके गत जन्म के बारें में कहलवा रहे थे।

वहाँ सब देखने और समझने के बाद हमने डॉक्टर से कुछ सवाल किये। हमने केवल सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न ही पुछे थे। हमने गत जन्म के विषयों के बारें में कुछ नहीं पुछा। उनके समाधान के अनुसार हमें समझ में आया कि उनके पास साधारण ज्ञान भी नहीं है। आत्मा क्या है, आत्मज्ञान से अनजान वह डॉक्टर, पिछले जन्म का समाचार दूसरों से कहलवाना हमें आश्चर्य में डाल रहा था। अब तक कितनों ने ही स्वामीयों के वेश में लोगों को धोखा दे रहे हैं, स्वामी जी के अलावा डॉक्टर के रुप में नया-नया पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी के नाम से दुनिया को धोखे में रखकर, अपने को महान मनवाना, हमें अचरज हो रहा था। वे जो कुछ कर रहे हैं वह दैवज्ञान के विरुद्ध, तथा लोगों के साथ धोखा करना, उन्हें ज्ञात हो रहा है या नहीं, परन्तु दुनिया शत प्रतिशत धोखा खा रही हैं। उनकी करनी से दुनिया बेवकूफ बन रही हैं। आप जानते होंगें कि हर मनुष्य के अन्दर मन होता है, यह दो तरह से कार्य करता है, मन किसी में बलवान, किसी में कमजोर होता है। मानसिक रुप से कमजोर व्यक्तियों को सैकॉलजिस्ट (डॉक्टर) पहचान जाते हैं। उनके मन को अपने आधीन में कर लेते हैं। दूसरों के मन को अपने आधीन में लाना ही आज के नवीन भाषा में हिप्नॉटिजम करना कहा जाता है। एक मनुष्य को हिप्नॉटिजम करने वाला व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति से उसके मन की बात, तथा पुछे गए प्रश्नों के जवाब कहलवा सकता है। यहाँ हर कोई गौर करने वाला विषय यह है कि किसी भी बात का उत्तर की देने का सामर्थ्य, तथा समझ एक मात्र बुद्धि को ही होती है। मन को जवाब देने का सामर्थ्य नहीं है। आप प्रश्न पुछ सकते हैं हिप्नोटाइस होने वाला व्यक्ति हिप्नोटाइस करने वाले को कैसे जवाब दे सकता है? इस प्रकार के प्रश्न का मैं भी इंतजार कर रहा था कि जब प्रश्न आये तब इस विषय मे जानने की श्रद्धा हर किसी में बढ़ेगी। जवाब इस प्रकार से है।

मेरा मानना है अंगरेजी शब्द हिप्नोटाइज का अर्थ हिन्दी में सम्मोहन हो सकता है। एक व्यक्ति द्वारा हिप्नोटाइज होनेवाला व्यक्ति हिप्नोटाइज करनेवाला व्यक्ति जैसा कहता है वैसा ही करता जाता है। यहाँ जीवात्मा से जरा भी संबंध नहीं रहता है। सम्मोहित(हिप्नोटाइज) हुआ व्यक्ति का मात्र मन ही, हिप्नोटाइज करनेवाले व्यक्ति की कहे अनुसार या उस व्यक्ति के उद्देश्य अनुसार ही व्यवहार करता है। हिप्नोटाइज का विशद कर कहा जाय, तो जीवात्मा को एक अनजान स्थिीति अर्थात् निद्रा जैसी स्थिीति में भेज कर, मन को अपने आधीन में करता है। शरीर के अन्दर मात्र मन ही हिप्नोटाइज होने की वजह से न ही जीवात्मा को, न ही बुद्धि को कुछ मालूम रहता है। हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति का मन हिप्नोटाइज करनेवाले व्यक्ति के आधीन में होने की वजह से, वह व्यक्ति बाह्य रुप से कहे अनुसार, या भीतर सुने बिना कहे अनुसार ही व्यवहार करता है। इसे अच्छी तरह से समझने के लिए एक उदाहरण समझा रहा हूँ। हिप्नोटा-इज करनेवाला व्यक्ति हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति से, पास में बैठे लोग भी सुनें सकें पुछा- गत जन्म में तुम कितने वर्षों तक जीवित थे। हिप्टोनाइज हुआ व्यक्ति आखें बंद किये हुए, पुछे गये प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा - गत जन्म में मैं 60 वर्षों तक जीवित रहा। तेरी मौत कैसी हुई का जवाब देते हुए मैं पानी में डुब गया था। यहाँ दो प्रश्नों का दो जवाब दिया। पास में बैठे सभी लोग सुन रहे थें। यहाँ रहस्यमयी एक बात थी। जो इस प्रकार से है! होप्नोटाइज हुआ व्यक्ति ने अपने-आप जवाब नहीं दिया। परन्तु जवाब देना सुनाई पड़ा - कैसे ? जिसने प्रश्न किया उसी ने सामनेवाले व्यक्ति के शरीर के अन्दर मन से उत्तर कहलवाया। प्रश्न करनेवाला व्यक्ति अपने मन में जो जवाब सोचता है वही जवाब हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति द्वारा कहता है। यह सब कैसे हुआ होगा ? मिमिक (नकलची) कलाकार, गुड़िया से सब के समक्ष, तुमने क्या खाया पुछता है। वह गुड़िया जवाब में मैने ब्रैड खाया कहती

है। यहाँ पर देखने वाले यही समझते हैं प्रश्नों का जवाब गुड़िया दे रही है। किन्तु वास्तव में होता यह है कि प्रश्न करनेवाला ही उत्तर दे रहा होता है। इस बारें में कोई जान न सकें वह स्वयं ही जवाब दे रहा था। मिमिक कलाकार के पास पुतले का बातें करना जितना सत्य था, उतना ही सत्य हिप्नोटिस्टि के पास आँखें बंद किये हुए व्यक्ति का बातें करना है।

अब सूत्र ज्ञात हो गया। इस सूत्रानुसार हिप्नोटिस्ट दूसरे व्यक्ति से मिमिक कलाकार की तरह कहलवाता है। जिस प्रकार से मिमिक कलाकार के प्रश्न और जवाब दोनों उसी के होते हैं, उसी तरह हिपनोटिस्ट के प्रश्न और जवाब दोनों हिप्नोटिस्ट के ही होते हैं।मिमिक(नकलची) कलाकार कपड़ों से बना पुतले से कहलवाता है, हिप्नोटिस्ट हाड़-मांस का बना पुतले(मनुष्य) से कहलवा लेता है। मिमिक कलाकार अपने प्रश्नों को बहिरंग प्रदेश में पुछकर उत्तर गुप्तरुप से कहता है, हिप्नोटिस्ट अपने प्रश्नों को बहिरंग प्रदेश में पुछकर जवाब मात्र ही गुप्तरुप में, आँखें बंद किये हुए व्यक्ति से कहलवाता है। किसी ने भी योचना नहीं की होगी कि हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति आँखें बंद किये कैसे जवाब दे रहा था। इतना ही नहीं, प्रश्न पुछने वाले व्यक्ति के मनों- भावों से संबंधित जवाब ही सामनेवाला व्यक्ति कहना किसी ने गौर नहीं किया होगा। दर्शक विश्वास करने की वजह, हिप्नोटाइज करनेवाला व्यक्ति एक बड़ा डॉक्टर होना, तथा उसके धोखे को पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी नाम से कहा जाना।

पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी करनेवाले डॉक्टरों में आत्मज्ञान न होने की वजह से, उनका जवाब में ही उनकी अज्ञानता प्रकट होती है। आत्मज्ञान से अनभिज्ञ लोगों को विश्वास दिलाया जा सकता है, परन्तु आत्मज्ञानियों को इस थेरेपी में विश्वास करवाना नामुमकिन हैं। इसी से सं-बंधित दूसरा उदाहरण दे रहा हूँ। MAA.T.V. में एक प्रोग्राम प्रसारित किया जा रहा था, उस प्रोगाम को मैंने भी देखा। उस प्रोगाम में एक

M.D.डॉक्टर ने एक महिला से बेंच पर लेटने को कहा, उस डॉक्टर ने सबके नजरों के सामने में उस महिला को हिप्नोटाइज किया। उस समय वह सम्मुर्छित स्थिीति में थी। किन्तु उसका मन मात्र ही उसके शरीर से बातें कर रहा था। डॉक्टर ने प्रश्न पुछा, वह महिला आँखें बंद किये हुए जवाब दे रही थी। सब T.V. में दिखलाई पड़ रहा था। वह महिला गत जन्म में एक बंजारा के घर जन्मी थी। विवाह हुआ, विवाह के बाद मालूम पड़ा पति शराबी है। उसका पति हर दिन शराब पीकर आता और पत्नी के साथ हिंसा किया करता था, एक दिन उसका बच्चा भूख से रो रहा था, बच्चे को दूध पिलाने के लिए जा रही थी कि बीच में ही उसके पति ने उसे रोक कर शरीर की भूख को मिटाने के लिए अन्दर खींच कर ले गया, हर रोज किसी न किसी बहाने से तंग किया करता था,ऐसे पति से तंग आकर घर छोड़कर चली गयी, और अपना सिर छिपाने के लिए एक आमों के बाग में आश्रय लिया। डॉक्टर के प्रश्नों का जवाब दे रही थी। किन्तु जहाँ तक मेरा मानना है यह पूरी कहानी डॉक्टर की मनगढ़ंत लग रही थी। क्योंकि एक छोटे से बच्चे को दूध पिलाने के लिए पाँच मिनट भी नहीं लगता है। पाँच मिनट भी सब्र न करने वाला कसाई बाप शायद ही कोई होगा। दुनिया में अनहोनी विषयों को ताना-बाना बुनकर बताया जा रहा था। यह पूरी कहानी मनगढ़ंत लग रही थी। इस कहानी के अंत में कहा गया उस महिला की मृत्यु के समय में उसका बेटा अविवाहित युवक था। मृत्यु के पश्चात् वह महिला दोबारा पैदा हुई और उसकी आयु लगभग पचास वर्ष की थी। उसका पति भी वहीं पास में बैठा हुआ था। उस महिला का कहना था गत जन्म की कहानी में उसके मृत्यु के समय उसका अविवाहित बेटा ही इस जन्म में उसका पति है। यह बात सुनने में ही ताज्जुब, और असत्य लगता है। क्योंकि उस महिला की मृत्यु के समय उसका बेटा स्वस्थ युवक था। प्रस्तुत जन्म में उसका पति उससे उम्र में थोड़ा बड़ा था। उस महिला की मत्यु के समय उसका बेटा जीवित था,

उससे पहले उसके बेटे की मृत्यु नहीं हुई! वैसे में उस महिला से उम्र में बड़ा पति के रुप में उसके बेटे का जन्म कैसे हुआ? उन्होनें जो बातें कहलवायी पूर्ण असत्य है यह कोई बच्चा भी बता सकता है। ऐसी मनगढ़ंत कहानियों की वजह से पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी की असत्यता साबित होती है।

उसी डॉक्टर ने एक और व्यक्ति से उसके गत जन्म की यादों को कहलवाते हुए, पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी से एक असत्य का प्रचार करते हुए अपने को एक महान विधान को जाननेवाला व्यक्ति के रुप में प्रचार पा रहे हैं। ऐसी ही एक और घटना की चर्चा करते हैं। डॉक्टर ने एक फिल्म कलाकार से उसके गत जन्म के बारें में कहलवाते हुए प्रश्नों को पुछा, जवाब दे रहे फिल्म कलाकार से कई प्रश्न पुछने के बाद अंतत; एक प्रश्न पुछा हलांकि यह सामान्य प्रश्न था किन्तु जवाब पूरी तरह से असत्य था, कोई भी समझ सकता है। जवाब में फिल्म कलाकार ने स्वयं को ईसाईयों के प्रवक्ता ईसा मसीह बताया। इस बात को सामान्य मनुष्य विश्वास कर सकता है, किन्तु हमें उस बात में असत्यता नजर आ रही थी। यीशु मसीह एक मत(धर्म) के प्रवक्ता थे उन्होंने ज्ञान का बोध कराया। ऐसे व्यक्ति यदि दोबारा पैदा होता है तो उसमें सम्पूर्ण ज्ञान नजर आयेगा। परन्तु जो व्यक्ति दैवधर्मों को जानता ही न हो वो अपने को ईसाह मसीह कहना, जैसे मांस खानेवाला बाघ खुद को घास खानेवाली गाय कहने जैसा है। मसीह सब की तरह जन्म लेनेवाला व्यक्ति नहीं है। यदि वापस धरती पर जन्म लेता है तो केवल ज्ञान बोध कराने के लिए ही होगा, अपना पेट पालने के लिए फिल्मों में अभिनय करने की आवश्यकता नहीं है। फिल्म अभिनेता से, ईसा मसीह की महानता से अनभिज्ञ डॉक्टर साहब ने वह ईसा मसीह है कहलवाना बहुत बड़ा गुनाह है। इससे सिद्ध होता है उनकी बातें झूठी थी, तथा उन्हे दैवसूत्रों के बारें में जरा भी ज्ञान नहीं है।

ऐसा ही एक और असत्य हिप्नोटाइज करनेवाले डॉक्टर साहब द्वारा सामने आया। प्रश्न करनेवाला व्यक्ति ही जवाब कहलवाता है। इसलिए उन्हे जो जानकारी होती है उसे ही हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति से कहलवा लेता है। ऐसे में कहलवाने वाले की सच्चाई सामने आ सकती है। कहनेवाला व्यक्ति का जवाब पुछनेवाले की होती है, इस बारें में अन्य लोग अनजान होने की वजह से हर किसी को पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी में गलतफहमी हो जाती है। अब मैं एक और असत्य का विवरण करना चाहता हूँ मेरा मानना है कि जो बातें मुझे असत्य नजर आती है, वह आपको सत्य नजर आ सकती है। इसमें उस डॉक्टर की बातें सत्य और मेरी बातें असत्य लगेगी। जो इस प्रकार है ! साधरणतया सारे लोग एक असत्य को सत्य मान रहे हैं। मेधावी हो, या वैज्ञानिक हो, या भौतिकशास्त्री हो, जन्म के विषय में सत्य पर अवलोकन किये बिना, असत्य को सत्य माना जा रहा है। मनुष्य के, जन्म के क्षण में क्या हो रहा होता है अपनी अनभिज्ञता से असत्य को सत्य समझ रहा है। जन्म के विषय में एक प्रकार से सब लोग गलतफहमी के शिकार हो रहे होते हैं। सब का मानना हैं गर्भस्थ शिशु में प्राण होता है। किन्तु गर्भस्थ शिशु में प्राण न होना शायद ही किसी को मालूम होगा। इस बारें में " **जनन–मरण का सिद्धान्त** " नामक ग्रंथ में शास्त्रबद्धता से निरुपण करते हुए लिखा गया।

मनुष्य के जन्म में जो हो रहा होता है प्रत्यक्ष रुप से नजर आने के बावजुद, कई आध्यात्मिकवेत्ताओं का कहना है माता के गर्भ में पाँचवाँ माह में प्राण आता है, कई विज्ञान के जानकारों का कहना हैं वीर्यकणों में ही प्राण होता है, तथा माता गर्भ धारण करने समय से ही प्राण रहता है। इस प्रकार से वैज्ञानिक, तथा ज्ञानी गलतफहमी के शिकार होने की वजह से मनुष्य जनन के विषय में अनभिज्ञ होने की वजह से असत्य को सत्य मान बैठा है, इसकी पूरी जानकारी हमने जनन का सिद्धान्त में सूचित किया है। इस विषय में लोग कैसे गलतफहमी का शिकार हो रहे हैं विशद

रुप से सूचित किया गया है। हमारी कही बातों में सच्चाई को समझाने के लिए आप सब को शास्त्रबद्धता से निरुपण कर समझाया गया है। यही जनन विषय में पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपी के अनुसार होप्नोटाइज हुआ व्यक्ति से हिप्नोटाइज करनेवाला व्यक्ति कहलवाते समय कहनेवाला व्यक्ति, सत्य को न बताकर असत्य को कह रहा हो तो इसका मतलब है कहलवाने वाले व्यक्ति में कर्मी थी, क्योंकि उन्हे सत्य ज्ञात न होने की वजह से वैसा कहलवाया गया, सिद्ध होता है। पास्ट लाइफ (पिछले जन्म) में क्या हुआ था, उस व्यक्ति की आत्मा को मालूम होता है, प्रस्तुत जन्म के मन को कुछ भी ज्ञात नहीं रहता है पहले बताया गया। क्योंकि आत्मा गत जन्म में जीवात्मा के साथ थी, यह मन गत जन्म में नहीं था। इसलिए गत जन्म के विषय हो, या गत जन्म में मृत्यु के समय में विषय हो, सब आत्मा बता सकती है। आत्मा किसी की नहीं सुनती है, इसलिए जवाब नहीं देती है। सामनेवाले व्यक्ति के प्रश्नों का हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति के अन्दर मात्र मन ही जवाब देता है। उस मन को गत जन्म के विषयों की जानकारी न रहने की वजह से, तथा जनन के समय में याद न रहने की वजह से, उन विषयों के बारें में मन कुछ भी बता नहीं सकता है। ऐसे में सामनेवाला व्यक्ति जो कहलवाता है उसे ही कहता है।

एक बार हिप्नोटाइज करनेवाला व्यक्ति, हिप्नोटाइज हुआ व्यक्ति से कुछ प्रश्न पुछ रहा था। जब तुम माता के गर्भ में थे पाँचवाँ माह में क्या कर रहे थे? तुम्हे कैसा महसूस हो रहा था? तब आखें बंद किये लेटे व्यक्ति ने जवाब में माता के गर्भ के अन्दर बेचैनी महसूस हो रही थी, गत जन्म की कुछ बातें याद आ रही थी, आनेवाला जन्म में कैसे रहना है निर्णय लिया, कहा। उसका इस प्रकार से कहना हमें आश्चर्य में डाल रहा था, साथ ही समझ रहे थें कि सारी बातें कहनेवाले व्यक्ति की नहीं बल्कि कहलानेवाले की है। क्योंकि वास्तव में गर्भस्थ जीवन होता नहीं है, तो फिर कहनेवाला व्यक्ति कैसे कह पा रहा है? जो नहीं होता है उसे हुआ

कहलवाना, इससे हम समझ सकते हैं कि असत्य, कहनेवाले व्यक्ति की नहीं बल्कि, कहलवाने वाले व्यक्ति की थी। गर्भस्थ जीवन के विषय में सब लोगों को गलतफहमी होने की तरह ही हिप्नोटाइज करनेवाले व्यक्ति को हुई। यहाँ कई लोगों के मन में प्रश्न आ सकता हैं, ऐसा क्यों कहलवाया जाता है ? ऐसा कहलवाने में उनका क्या फायदा हो सकता है ? इन सब का हमारा उत्तर इस प्रकार से है।

यहाँ गौर करनेवाला विषय यह है " पास्टलाइफ रिग्रेशन थेरेपी " पेशेवर डॉक्टर ही करते हैं। प्रस्तुत जन्म की बीमारी को पिछले जन्म के एक कारण से जोड़कर कहलवाना, और यकीन दिलवाना कि बीमारी की वजह यह कारण है, पिछले जन्म के कारण के अनुकुल यदि चिकित्सा की जाय तो उस बीमारी का इलाज हो सकता है कहते हैं क्योंकि पिछला कारण जानकर इलाज करना हर किसी के सामर्थ्य में नहीं हैं, केवल वें मात्र ही कर सकते हैं तथा ख्याति पाने के लिए कर रहे हैं। इतना ही नहीं पिछले जन्म से कारण जाने बिना यदि चिकित्सा की जाती है तो उस बीमारी का इलाज नहीं हो पायेगा, तथा दीर्घकाल तक बीमारी सताते रहेगी बताया जाता है। उनका इस प्रकार से कहना अनेक लोग उन्हें विशेष डॉक्टर का दर्जा देंगें, तथा हर किसी में अपने पिछले जन्म से संबंधित बातें जानने की जिज्ञासा जागेगी, और डॉक्टर के पास आना चाहेंगें। इससे " पास्टलाइफ रिग्रेशन थेरेपी " के नाम से डॉक्टरों की इज्जत बढ़ेगी। कई डॉक्टरों को इस विधान का प्रचार करते हुए हम सब देखते ही रहते हैं। कई मेधावीयों ने, विज्ञान के जानकारों ने, तथा तर्क शास्त्रीयों ने इस पद्धति को सही नहीं ठहराया। हम सत्य को सत्य, तथा असत्य को असत्य कहते हैं। इस विषय में हम तर्कशास्त्रीयों का समर्थन करते हैं। लेकिन हर एक विषय में हम उनका समर्थन नहीं कर सकते हैं।

सृष्टि में बना मनुष्य सृष्टि के आदि से ही मरता, पैदा होता हुआ शरीर को बदलता रहा है। मरण से शरीर नष्ट होते हुए भी जीवात्मा नाश हुए बिना नये शरीर को धारण करता रहता है। जीवात्मा सृष्टि के आदि से ही निरन्तर शरीर को धारण करता हुआ पाप-पुण्यों को भोगता हुआ चला आ रहा है, जब दैवज्ञान को जानकर कर्म की समाप्ति होगी उस दिन परमात्मा में लीन हो जायेगा, और कर्मरहित हो जायेगा, ब्रभ्हविद्याशास्त्र में कहा गया। छ; शास्त्रों में सबसे बड़ा ब्रम्हविद्याशास्त्र हर मनुष्य के लिए अमल में रहती है। स्वयं परमात्मा ने सूचित किया यह समस्त मानवों पर लागू होता हैं। इस दैवशास्त्र में कुल, और मत(धर्म)का भेद नहीं होता है। तीन भागों में आँख, और सात भागों में हस्त, सारे मानवों पर लागू हैं। परमात्मा ने अपने ज्ञान सूचित करने निमित्त बोधकों (प्रवक्ताओं) को भेजा, उनके बताये ज्ञान को मनुष्य सही दिशा में समझ नहीं पाया और बोधकों को मत(धर्म) के नाम से जोड़ दिया गया। वास्तव में, किसी भी प्रवक्ता ने मत(धर्म)का बोध नहीं किया, उन्होंने समस्त मानवों पर अमल दैवसूत्रों को ही बतलाया। प्रवक्ता द्वारा दैवसूत्रों का बोध मनुष्य समझ न सका और माया के प्रभाव से मतों(धर्मों)की सृष्टि कर डाली। इतना ही नहीं शास्त्र शासन होता है अनभिज्ञता से ब्रम्हविद्याशास्त्र में बताये गए सूत्रों के विपरीत कई बातों की सृष्टि मनुष्य ने की। उन्हीं बातों में से पुर्नजन्म न होना, कहना ब्रम्ह-विद्याशास्त्र के विपरीत है। छठवाँ शास्त्र ब्रम्हविद्याशास्त्र में धर्मों के विरुद्ध बातें करना अज्ञानता होती है। दैवधर्मों के विरुद्ध जाना अधर्म होता है।

आज से दो हजार वर्ष पूर्व ईसाई प्रवक्ता ईसा मसीह ने कभी नहीं कहा,पुर्नजन्म नहीं हैं, लोग समझ सकें उन्होंने कहीं-कहीं पुर्नजन्म होना बताया, समझ न पाने कि वजह से मनुष्य मसीह के वाक्यों को एक मत(धर्म)का रुप देकर, पुर्नजन्म हमारे मत(धर्म) में नहीं है, प्रचार किया जा रहा है। इस प्रकार से ईसाई मत(धर्म) में यीशु के वाक्यों का वक्र कृत

कर कहा गया, कुछ समय बाद लगभग 14 सौ वर्ष पूर्व मोहम्मद प्रवक्ता का जन्म हुआ उन्होंने अपने दैव(अल्लाह) के संदेश को सारी प्रजा को सूचित किया। इस्लाम (विश्वास) की नींव पर प्रवक्ता ने अपने बोध को सूचित करते हुए, अल्लाह पर विश्वास(इस्लाम) सब के लिए आवश्यक है लेकिन वह भी एक मत(धर्म) के रुप में बदल गया। शैतान या माया अपने प्रभाव से मनुष्य में रह कर मनुष्य को प्रवक्ता के बताये दैव- संदेश गलत समझ में आया, और इस्लाम मत(धर्म) में पुर्नजन्म नहीं हैं, प्रचार किया गया। इस्लाम में बताये दैवसूत्रों को न समझ पाने की वजह से अंतत; सब जन्म के विषय में गलतफहमी के शिकार हो गए। इस्लाम में पुर्नजन्म पर अविश्वास करने की वजह, उससे पहले आया ईसाई मत(धर्म) भी कारण हो सकता है। ईसाई मत(धर्म) में पुर्नजन्म के विरुद्ध प्रचार होने की वजह से उसमें का शैतान, इस्लाम मत(धर्म) में शैतान बनकर आया और लोगों को भ्रमित किया। मरण के विषय में विस्तार से कहें तो मनुष्य का विभाजन कर परिशीलन करेंगें, मनुष्य कुल दो भागों में बँटा हुआ हैं। पहला प्राकृतिक भाग, दूसरा परमात्मा भाग। प्राकृतिक भाग मे शरीर, परमात्मा भाग में जीवात्मा, आत्मा होते हैं। प्राकृतिक भाग शरीर, तथा परमात्मा भाग जीवात्मा नाश हो जाते हैं। स्मरण रहे जीवात्मा के साथ आत्मा रहती है, आत्मा का नाश नहीं होता है। **शरीर नष्ट होने को मरण कहते हैं। जीवात्मा नाश होने को मोक्ष कहते हैं।** शरीर को प्राप्त मरण को मरना, तथा जीवात्मा को प्राप्त मोक्ष को मुक्ति कहा जाता है। जीव का धारण किया गया शरीर अनेकों बार नष्ट होता है, अनेकों बार जन्म होता है। किन्तु जीवात्मा एक ही बार जन्म लेता है, एक ही बार नाश होता है। शरीर का पैदा होना खत्म हो जाना होता रहता है, किन्तु जीवात्मा का जन्म तथा मुक्ति एक ही बार होती हैं। शरीर को बदलकर जीवात्मा नया शरीर धारण करने को पुर्नजन्म कहा जाता है। इसे जन्म नहीं कह सकते हैं। शरीर के विषय में जन्म कहते हैं। जब जीवात्मा नया शरीर धारण करता

हैं संदर्भ के अनुसार जन्म लेना या जन्म लिया शरीर निमित्त कहा गया, जीवात्मा निमित्त बिलकुल नहीं कहा गया। इस प्रकार से मनुष्य के शरीर के लिए जनन-मरण, तथा शरीर के अन्दर जीवात्मा के लिए जन्म, और मोक्ष होता है**। जनन–मरण का सिद्धान्त**, **तथा मरण का रहस्य** में शरीर को उद्देश्य में रखकर कहा गया है।

मनुष्य ने धरती पर सृष्टि के आरम्भ में ही जन्म लिया। बाद में शरीर मरना नया शरीर धारण करना चला आ रहा है। किसी भी शरीर के अन्दर याद उस शरीर के अन्दर मन को होती है। इसलिए पिछले शरीरों की यादें जीवात्मा को मालूम न हो सका। इस शरीर की याद इस शरीर के अन्दर मन पहुँचाती है। इसलिए प्रस्तुत जन्म स्मरण मात्र ही मनुष्य को रहता है। इस वजह मनुष्य, उसके अब तक कितने पुर्नजन्म हुए हैं कह नहीं पाता है, तथा गत जन्म के विषय में कह नहीं पाता है। यही मानव शरीर का जनन-मरण का विधान है। जीवात्मा का जन्म, और मुक्ति(मोक्ष) के विषय में योचना करने से जीवात्मा जन्म लेकर, शरीरों को बदलता रहा , किन्तु उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हुई। जीवात्मा ने, एक बार धरती पर जन्म लिया अनेकों बार, अनेक शरीरों को धारण करता हुआ, अनेक नामों से होकर गुजरता हुआ आ रहा है। उसने अब तक कितने शरीरों को धारण किया, कितने नामों से होकर गुजरा , स्मरण न होने की वजह से उन्हे ज्ञात नहीं है। मनुष्य के पुर्नजन्म होते हैं साक्ष्य के लिए कहीं-भी, कभी-भी किसी को भी उनकी आत्मा गत जन्म के विषयों में से किसी एक विषय को ही सूचित करती है। ब्रम्हविद्याशास्त्र गीता में पुर्नजन्म से संबंधित साक्ष्य मिलेंगें।

एक मनुष्य ने जितनी बार भी दोबारा जन्म लिया हो उस मनुष्य के अन्दर वास जीवात्मा ने केवल एक ही बार जन्म लिया, उस मनुष्य का जितनी बार भी मरण हुआ हो उस मनुष्य के अन्दर जीवात्मा का असली

मरण(मुक्ति)नहीं हो पाया कह सकते हैं। जीवात्मा को जन्म लिये कई लाखों वर्ष हो गए, उनका अब तक मरण नहीं आया कब होगा कोई नहीं बता सकता है। यदि जीवात्मा का मरण होना हो या मुक्ति पाना हो, तो जीवात्मा को दैवज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है। जीव का निवास स्थान शरीर है, शरीर जीवात्मा के जानकारी के बिना नष्ट(मरण) हो जाता है। कोई भी जीव, मुझे अपने शरीर को छोड़कर जाना है सोचने से पहले ही, शरीर उसे छोड़कर नष्ट हो जाता है। सामान्यत; जीव बिना कोई प्रयत्न किये ही उसका धारण किया गया शरीर नष्ट हो जाता है। जीवात्मा द्वारा तीव्र प्रयत्न करने पर ही, जीवात्मा का नाश हो सकता है। जीवात्मा, स्वयं नाश होने के लिए अधिक दैवज्ञान को अर्जित कर, उसका आचरण करने से, अपना आरोग्य का कारण कर्म समाप्त या कर्मरहित हो जायेगा। जीव को धरती पर जीने के लिए कर्म औषधि का कार्य करती है। जीव की इस धरती पर जीवन जीने की औषधि कर्म है, इसके विपरीत विष का कार्य करने वाला दैवज्ञान को मनुष्य अगर अपने जीवन में उतार ले तो कर्म का नाश हो जाता है और जीवात्मा को सम्पूर्ण मरण(मुक्ति) की प्राप्ति होगी। इसी विषय में कुछ और लोग कुछ इस प्रकार से कहते हैं। **शरीर के साथ रहकर शरीर मरणों को प्राप्त जीव को मृत जीव कहकर, शरीरों को त्याग कर मुक्ति पाना कभी भी शरीरों में न फँसकर शरीर मरणों से बचने वाले जीव को अमृत जीव कहकर वर्णन किया गया है।** इसलिए भगवद् गीता, तथा बाइबल में मोक्ष(मुक्ति) प्राप्त करने वाले को अमृत, तथा मुक्ति न प्राप्त करने वाले को मृत कहा गया। दैवज्ञान को जानने वाले अमृत को स्वीकार करते हैं कहा। भगवद् गीता में राजविद्या राजगुह्य योग में "अमृतं चैव मृत्युश्च " मृत्यु में भी अमृत हूँ कहा। गीता में गुणत्रयविभाग योग में " अमृतस्याव्ययस्य " व्यय अर्थात् अविनाशी शरीर या शरीर की मृत्यु में अमृत हूँ कहा।

पवित्र बाइबल नया धर्म नियम में इफिसियों के नाम पत्री में दूसरे अध्याय में 11,12,13, वाक्यों में इस प्रकार कहा, " स्मरण करो कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो, और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं,वे तुम को खतनारहित कहते हैं,तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्त्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे, पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो। बाइबल में दिये गए कई वाक्य अच्छे भाव भरें हैं लेकिन अनेक ईसाई बोधकों को उसके असली अर्थ समझ नहीं आया, इस वजह उन्हें बाइबल के असली भावों को समझ न सकें। यीशु का लहु कहने मात्र से ही सारें ईसाईयों को क्रुस पर चढ़े यीशु मसीह का लहु ही याद आता है। परन्तु असली भाव किसी ने नहीं जाना। ईसाईयों का कहना हैं कि यीशु के लहु से मनुष्यों को पाप क्षमा मिलेगी, ईसाई मत(धर्म) को अपनाने वालों को यीशु के बहनेवाले लहु से उनका पाप समाप्त हो जायेगा। उनकी बातों को सुननेवाले उन पर यकीन कर रहे हैं। किन्तु ईसा अर्थात् परमेश्वर, ईसा का लहु अर्थात् ज्ञान, कोई भी समझ नहीं पा रहे हैं। दैवज्ञान में शब्दों का अधिकतर सूक्ष्म अर्थ ही होता है। स्थूल भाव ज्ञानरहित होते हैं। जब यीशु जीवित थे उन्होंने कहा मेरा धर्म नियम ही रक्त है, शरीर में प्रवाहित रक्त के बारें में कहीं नहीं कहा।

ऊपर बताये गये 11,12,13, वाक्यों का सारांश का भावों को देखें तो " पूर्व इस्त्राएल देश में आप अज्ञानी परमेश्वर से दूर थें, परमेश्वर से दूर हुए आप अब परमेश्वर के ज्ञान के द्वारा निकट हो गए हो।" कहा गया। इस वाक्य से हमें मुख्य रुप से यह जानकारी मिलती है कि दो हजार वर्ष पूर्व इस्त्राएल देश में अज्ञानता से, परमेश्वर के ज्ञान से अनजान लोग, परमेश्वर से दूर होकर अब प्रस्तुत काल में परमेश्वर के ज्ञान को ग्रहण

करने की वजह से निकट हो गए। पूर्व अपनी अज्ञानता के कारण परमेश्वर से दूर होता हुआ मनुष्य जन्मों को बदलता हुआ अब ज्ञानी बनकर परमेश्वर के निकट हुआ, इस प्रकार से जन्मों को बदलते हुए साथ ही परमेश्वर के ज्ञान की वजह (मसीह के लहु की वजह) से ही परमेश्वर से दूर हुआ मनुष्य निकट हो गया सूचित होता है। इन वाक्यों से सूचित होता है कि मनुष्य के पुर्नजन्म हैं। और दूसरे अध्याय के पहले वाक्य में शब्दों का सूक्ष्म अर्थ देखें तो "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थें।" इस वाक्य में उसने अर्थात् परमेश्वर। मरें हुए शब्द का मतलब गलत निकल सकता है। दूर हुए लोग निकट हुए कहा, मरें हुए लोग जीवित हुए कहा। मरें हुए अर्थात् देव-ज्ञान रहित। मनुष्य अनेक पापों को करता है उस पाप के मध्य में रहकर, दैवत्व अर्थात् चैतन्य रहित, ज्ञान की दृष्टिकोण से मरें हुए कहा गया। परमेश्वर अपने ज्ञान को अपने प्रवक्ता द्वारा मनुष्य को सूचित कर दैवत्व(ईसा) को जीवित किया, तथा ज्ञान से चैतन्यवान बनाया।

भगवद् गीता में ज्ञानयोग में 37 वें श्लोक में कहा गया " यथैधांसि समिद्दोऽग्निर्भस्मसा- त्कुरुतेऽर्जुन, ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।" जिस प्रकार से अग्नि ईन्धन को अर्थात् काष्ठ को भष्मरुप कर देता है, वैसे ही ज्ञानरुप अग्नि सब कर्मों(पाप और पुण्यों) को भष्म कर देता है। जिस प्रकार से गीता में भगवान ने ज्ञान द्वारा बताया, वैसे ही बाइबल में ईसा का लहू पापों को हर लेता है, कहा गया। यदि इन दोनों वाक्यों को ग्रहण करें तो दोनों वाक्यों का एक ही तात्पर्य प्रतीत होगा। ईसा अर्थात् परमेश्वर, लहू अर्थात् ज्ञान यदि ऐसा ग्रहण करें तो परमेश्वर के वाक्य का तात्पर्य कभी भी नहीं बदलेगा। सबके सृजनहार परमात्मा एक ही है, न समझकर हर एक मत(मजहब) में अलग-अलग परमेश्वर कहते हुए, आपके परमेश्वर अलग, हमारे परमेश्वर अलग है मानना अज्ञानता

होती है। जिस दिन मालूम पड़ेगा कि सभी मतों(धर्मों) के अधिपति एक है उस दिन लोग समझेंगें कि उनके बताये ज्ञान भी एक ही है।

हमने ईसाईयों को कहते हुए सुना ईसाई मत(धर्म) में पुर्नजन्म नहीं होते हैं। इसलिए एक और उदाहरण द्वारा बताना चाहता हूँ कि बाइबल में परमेश्वर ने इस बारें में किसी भी वाक्य में उल्लेख नहीं किया। कहा जाता है कि बाइबल में सबसे उत्तम योहन्ना सुसमाचार है। योहन्ना समाचार में 15 वाँ अध्याय 26, 27 वाक्यों में "जब वह सहायक(आदरण कर्ता) आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।" इस वाक्य में जब यीशु प्रभु थे जिस प्रजा ने उन्हे देखा, उनके ज्ञान को सुना, कई सौ, कई हजार सालों के बाद जब सहायक (आदरण कर्ता) आयेंगें तो लोग पैदा होकर, सहायक(आदरण कर्ता) की कही यीशु के वाक्यों को आसानी से समझेंगें, सूचित होता है। आप आरम्भ से मेरे साथ रहे हो कहना हम मनुष्य सृष्टि के आदि से ही पुर्नजन्मों को ले रहे हैं सूचित होता है। पुर्नजन्म के बारें में बाइबल में इससे बढ़कर पुख्ता सबूत की आवश्यकता नहीं है। ऐसे ही मत्ती सुसमाचार 12 वाँ अध्याय 31, 32 वाक्यों में "मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जायेगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जायेगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जायेगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में और न ही आनेवाला युग में पाप क्षमा किया जायेगा" कहा गया। इन वाक्यों में न ही इस युग में, न ही आनेवाला युग में कहना इसका तात्पर्य है इस युग का मनुष्य दूसरे युग में भी रह सकता है। एक युग के कई लाखों वर्ष होते हैं। दो युगों का पाप को भोगने के लिए, मनुष्य को कई बार मर कर पैदा होना पड़ता है। इस वाक्य के अनुसार पुर्नजन्म होते हैं बाइबल द्वारा सूचित होता है।

इस प्रकार परमेश्वर अपने प्रवक्ताओं द्वारा अलग-अलग जगहों पर मनुष्य के पुर्नजन्म होते हैं कहलवाया। लेकिन कहलवाया गया ज्ञान अच्छी तरह समझ न आने कि वजह से मनुष्य ने पुर्नजन्म के विषय में परमात्मा ज्ञान को गलत तरीके से समझा, कह सकते हैं। कई ईसाईयों, तथा हिन्दुओं ने मुझसे कुछ इस प्रकार से प्रश्न पुछा। माना कि भगवद् गीता में, तथा बाइबल में पुर्नजन्म के बारें में बताया गया। परन्तु तुम्हारा बताया गया मरण का सिद्धान्त और मरण का रहस्य के बारें में किसी भी ग्रंथ कहा नहीं गया, जो विषय बाइबल और भगवद् गीता में नहीं कहा गया उसे तुम कैसे कह पा रहे हो? पुछा। इसका उत्तर हमने कुछ इस प्रकार से दिया। बाइबल और भगवद् गीता में कहा गया सारे ज्ञान को याद करते हुए, उन ग्रंथों में न कहनेवाले समस्त विषय भी आप को सूचित किया जायेगा पहले ही कहा गया। मेरा विचार है परमेश्वर के कहने के अनुसार मूल ग्रंथों में कई विषय जो न कहा गया हो उसे हमारे द्वारा कहलवाया गया। जितने भी नये विषय बताये गये उसे मैंने नहीं कहा। यहाँ मुख्य रुप से गौर करने वाला एक विषय है। इस बीच एक व्यक्ति ने मुझे से एक प्रश्न पुछा। आपका लिखा एक ग्रंथ को मैंने पढ़ा। उसमें अनेक जगहों पर बहुवचन अर्थात् हमने शब्द का प्रयोग किया गया, जहाँ एकवचन अर्थात् मैं का प्रयोग हो सकता था। जब दूसरों को संबोधन किया जाता है तब ही आप शब्द का प्रयोग हो सकता है। ऐसा न होकर अपने आप को बहुवचन में जैसे;- हमारा कहना है, या हमारा जवाब इस प्रकार से है, लिखा गया। ऐसा लिखने से ऐसा प्रतीत होता है कि आप और आपके आश्रम- वासियों ने मिलकर कहा। इस प्रकार अनेक जगहों पर अपने आप को बहुवचन में तथा कहीं-कहीं मैं से संबोधन करने का तात्पर्य क्या हो सकता है? सामनेवाले व्यक्ति को आदर भाव से आप कहकर संबोधन किया जा सकता है, किन्तु हम कहकर कहना, अपने आपको महान जतलाना होता है। ऐसा कहना अहं दर्शाता है? पुछा।

इस प्रश्न के उत्तर में मुझे यह कहना है कि भगवद् गीता, और बाइबल में न कहनेवाले समस्त ज्ञान को हमारे द्वारा लिखा गया। सहायक(आदरण कर्ता) के रुप में पवित्र आत्मा आकर समस्त ज्ञान का बोध करायेंगें तथा मैं आपको सारी बातें याद दिलाऊँगा ऐसा पवित्र ग्रंथ में लिखा गया है। परन्तु मेरे ग्रंथों में लिखा गया समस्त ज्ञान के विषय को हमने लिखा कहा। आपको उसमें अहं प्रतीत होता है परन्तु मैं याद में रहकर ज्ञान को स्मरण में रखकर, अपने आप को न भूलकर अपनी आत्मा को याद में रखकर लिखा गया सूचित कर रहा हूँ। मैं अपने शरीर में अनजान हूँ। मैं पाँच प्रकार से अंधा हूँ। न देख सकता हूँ, न सुन सकता हूँ, न ही मुझे कुछ मालूम है। मुझे कोई ज्ञान नहीं है। परन्तु मेरे साथ शरीर के अन्दर वास मेरा मित्र तथा मेरा पड़ोसी आत्मा को सब मालूम है। सब कुछ जानने वाला मेरा पड़ोसी(आत्मा) के सूचित करने पर ही मुझे मालूम होता है अन्यथा मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। मेरी आत्मा मेरा हितैषी बनकर मुझ से लिखवा रही है। इसलिए मेरा मित्र(आत्मा) मुझे कहता है और मैं लिखता हूँ। आपके नजर में मेरा लिखना आपको नजर आता है, लेकिन मेरी नजर में मेरी आत्मा का कहा गया है। मेरे अकेले का कहा गया कुछ भी नहीं है। इसलिए हर प्रश्न और उत्तर लिखते समय हम या हमने का प्रयोग किया गया, मैंने लिखा कहकर मैं कभी भी नहीं लिखूँगा। कई लोगों में अंतरमुख ज्ञान न होने की वजह से, उन्हें मैं अहंकारी नजर आ सकता हूँ किन्तु मैंने अहंकार से कोई काम नहीं किया। सारा कार्य आत्मा करवाती है। आत्मा, और मैं(जीवात्मा) दोनों मिलकर करने की वजह से हम कह रहे है। हम अर्थात् मैं, बाह्य रुप से मेरे चारों तरफ के लोगों को मानना आपकी गलती है, मेरी नही।

आपकी दृष्टि में मेरा शरीर ही नजर आता है। आप मुझसे कुछ पुछ रहे होते हैं तो उसे मैंने ने एकवचन में ही लिखा। आपके हिसाब से मेरा अकेला होना की वजह से संदर्भानुसार कहीं-कहीं एकवचन का

प्रयोग किया गया। आप जैसा भी सोचें मेरी जानकारी में कुछ भी नहीं है। परन्तु हमारी जानकारी में सब कुछ हैं इसलिए लिख पा रहे हैं। कितना ही उत्तम ज्ञान का विषय हो, या मूल ग्रंथों में न रहनेवाले ज्ञान को शास्त्रबद्ध तरीके से कहना हो, यह कार्य मैंने नहीं किया। मैं जानता हूँ इसे आत्मा ने ही बताया। इस आत्मा को गत जन्म के सारे विषयों की जानकारी है। समस्त ज्ञान के विषयों को सूचित करना, तथा गत जन्म के विषयों को याद दिलाना आत्मा के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि धरती पर सम्पूर्ण दैवज्ञान टिके रहने के लिए कभी-कभी, कहीं-कहीं आत्मा पुर्नजन्म की याद दिलाती रहती है। आत्मा अति उत्तम ज्ञान को सूचित कर सकती है। आत्मा बहुत बड़ा याद भी स्मरण में ला सकती है। दैवज्ञान के निदर्शन के लिए साक्ष्य के रुप में आत्मा कुछ भी कर दिखला सकती है। लेकिन बहुत ही विचित्र बात है आत्मा के बारें में आध्यात्मिक वेत्ताओं को जानकारी नहीं है। अबतक हम लोगों ने पुर्नजन्म के विषय में जानकारी की, आत्मा ने कुछ लोगों में याद करवाकर निरुपित किया, ग्रहण करें।यह विषय स्वयं आत्मा द्वारा सूचित किया गया है इसे सब लोग शास्त्रबद्ध तरीके से जानकारी करें। और पुर्नजन्म होते हैं दूसरों को सूचित करें।

समाप्त

****

आपका

आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर

असत्य को हजार लोग कहें वह सत्य नहीं होगा,
सत्य को हजार लोग नकारें वो असत्य नहीं होगा।